विशेषांक

UPBIL 04831

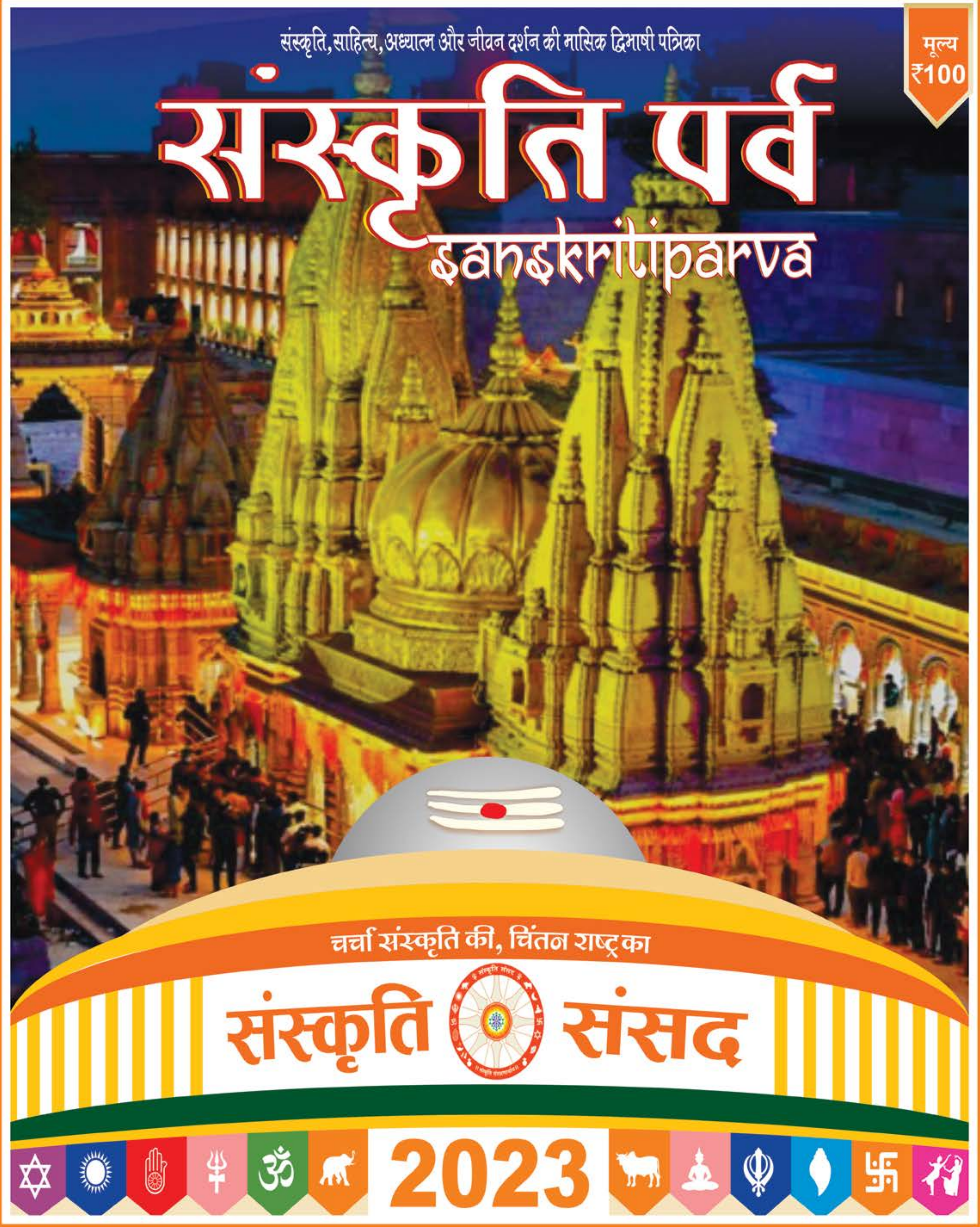

विदेश के लिए मूल्य : $10

दिवाली
धमाका
20th Oct - 9th Nov
सबसे बड़ा त्यौहार
सबसे बड़ा ऑफर
जीतिए* 3 ब्रांड न्यू मारुति कार एवं
101 पांच ग्राम सोने के सिक्के
AISSHPRA
GEMS AND JEWELS
SINCE 1940
HDFC BANK
FESTIVE TREATS
3% Instant Discount*
with HDFC Bank Debit / Credit Cards
देवरिया :
केडिया प्लाजा, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
के पीछे, मालवीय रोड 9532655652
Toll Free: 1800 120 1299
GORAKHPUR | BASTI | PADRAUNA | AZAMGARH
BALLIA | RAEBARELI | LUCKNOW | AYODHYA

हर त्योहार बनायें बड़ा घर ले आये छोटी खुशिया
शादी की तैयारी
शादी की पूरी खरीदारी अब
एक ही छत के नीचे
श्री
पीताम्बरा
सलेक्शन्स
Mens Wear | Ladies Wear | Kids Wear
शाखा देवरिया
केडिया प्लाजा, मालवीय रोड, सुभाष चौक, देवरिया
Contact: 8795253202 DEORIA BRANCH
शाखा सलेमपुर
उदय टॉवर, देवरिया मेन रोड कोतवाली के पास, सलेमपुर
Contact: 8115491402 SALEMPUR BRANCH

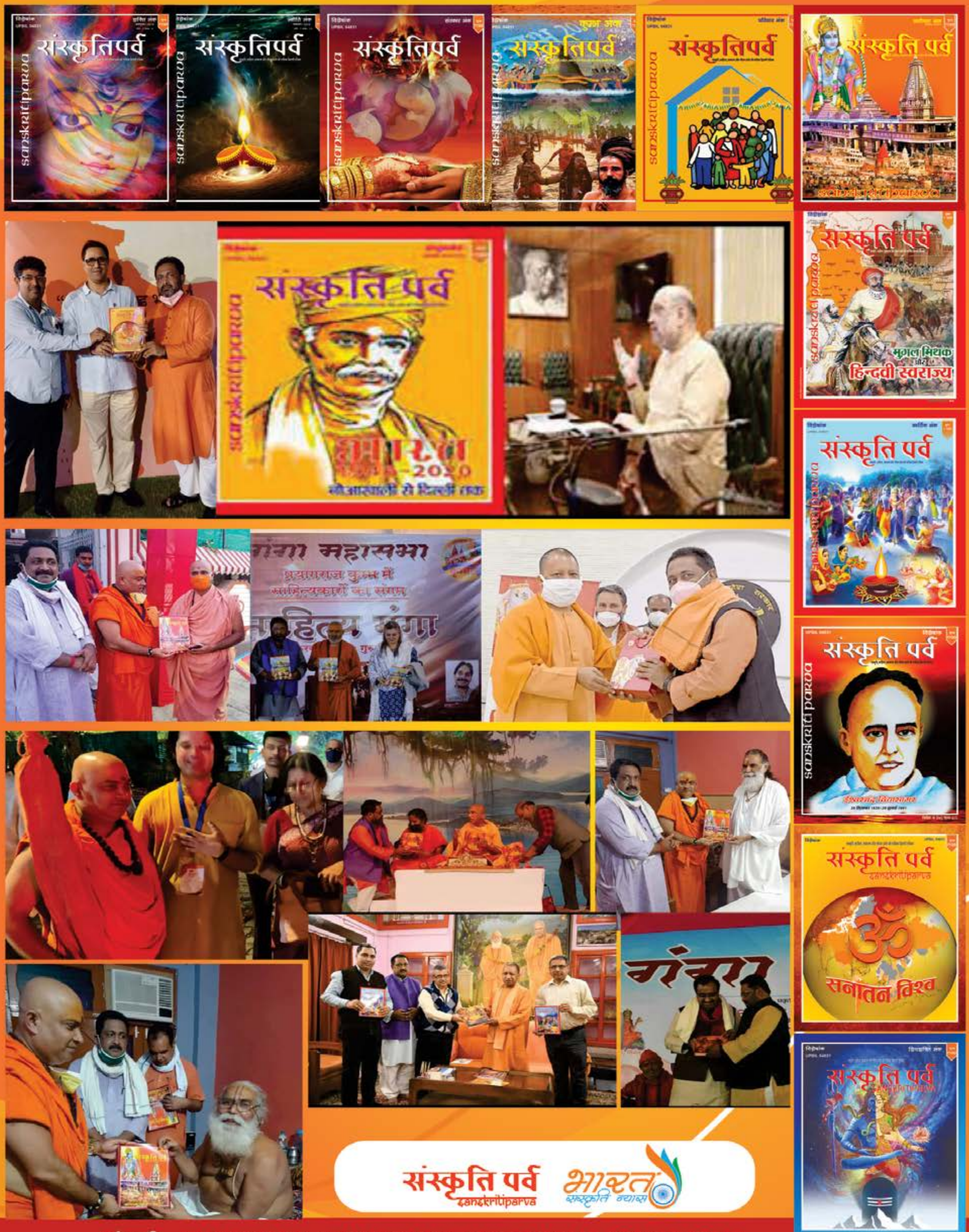

संपर्कः- 9450887186, 9450887187, 7007172707, 9807636072
email- editor.sanskritiparva@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ सं०
01	सनातन था, सनातन है और सनातन ही रहेगा	स्वामी जीतेन्द्रानंदजी महाराज	8
02	सशक्त नेतृत्व वाले राष्ट्र के समक्ष झुकती है दुनिया : शिव प्रताप शुक्ल		12
03	क्या है सनातन, चुनौतियाँ कहाँ से?	ब्रजेश उपाध्याय	16
04	धर्म का आत्मसंघर्ष	डॉ. प्रमोदकुमार दुबे	19
05	विश्व को दिशा देगा संस्कृति संसद काशी का संकल्प	डॉ. धर्मेंद्र सिंह	25
06	धर्म नहीं आत्मा है सनातन	योगेश मिश्र	28
07	सनातनियोंको देना होगा चुनौतियों का जवाब	अनुराग शुक्ला	30
08	सनातन भारत और भाईजी	प्रो. हिमांशु चतर्वेदी	35
09	सनातन जीवन संस्कृति भारतीय संस्कृति का अनोखा स्वरुप	डॉ. अर्चना पाठ्या	38
10	सनातन जीवन का आधार स्त्री	अनिता अग्रवाल	44
11	सनातन के विरुद्ध षड्यंत्र	प्रज्ञा मिश्रा	46
12	बेटी बचाने की मुहिम में जुटीं डॉ. शिप्रा धर	पंकज सिंह	52
13	स्त्री तत्व के बिना राष्ट्रवाद की परिकल्पना संभव नहीं	डा. अर्चना तिवारी	57
14	बाबा की काशी, गंगा, तुलसी और मानस	सिद्धार्थ मणि त्रिपाठी	61

पाठकों से

संस्कृति पर्व का यह विशेष अंक आपके हाथों में है। इस अंक के लिये चित्रों का संकलन गूगल से किया गया है जिसके लिए हम उन सभी छायाकारों के प्रति कृतज्ञ हैं। इस अंक मे संभव है कि संपादन अथवा संयोजन में कुछ त्रुटियां रह गयी हों इसलिए हम अपने सुधी पाठकों से अपेक्षा करते है कि वे त्रुटियों को नजरअंदाज करेंगें। यह अंक आपको कैसा लगा इस बारे में हमें अपने विचारों से अवश्य अवगत कराईएगा। सनातन संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में आपका योगदान अत्यंत मूल्यवान है।

– सम्पादक

संस्कृति संसद-2023

संस्कृति पर्व

sanskritiparva

वर्ष-6 अंक-1 नवम्बर- 2023

सनातन प्रकाश पुंज

जगद्गुरू स्वामी वासुदेवाचार्य जी स्वामी विद्याभास्कर जी महाराज

स्वामी जीतेन्द्रानंद सरस्वती जी

(महामंत्री, अखिल भारतीय संत समिति एवं गंगा महासभा)

जगद्गुरु स्वामी राघवाचार्य जी (श्री अयोध्या जी)

स्वामी राजकुमार दासजी (श्री अयोध्या जी)

संरक्षक

श्री शिव प्रताप शुक्ल

(महामहिम राज्यपाल हिमांचल)

विद्वत परिषद

प्रो. सभाजीत मिश्र - (पूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, (गो.वि.वि.)

प्रो. सुरेन्द्र दुबे - (उपाध्यक्ष, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा)

श्री मनोजकांत - (निदेशक, राष्ट्रधर्म)

प्रो. एम. एम. पाठक - (कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,नई दिल्ली)

प्रो. संजय द्विवेदी - (माखनलाल चतुर्वेदी रा.प.वि., भोपाल)

डॉ. लालता प्रसाद मिश्र - (वरिष्ठ अधिवक्ता, उच्च न्यायालय, लखनऊ)

ए. पी. मिश्र -(अधिवक्ता, उच्च न्यायालय, लखनऊ)

डॉ. आर. सी. श्रीवास्तव - (अवकाशप्राप्त आई.ए.एस.)

प्रो. विनय कुमार पाण्डेय -(अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग का. हि. वि. वि.)

प्रो. रामदेव शुक्ल - (पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गो.वि.वि.)

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय - (पूर्व अध्यक्ष, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा)

प्रो. अजित के चतुर्वेदी - (निदेशक, आईआईटी, कानपुर)

प्रो. मुन्ना तिवारी (अधिष्ठाता एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग बु.वि.वि. झांसी)

श्री प्रफुल्ल केतकर - (सम्पादक, ऑर्गनाइजर)

डॉ मृणालिनी चतुर्वेदी - (अध्यक्ष क्रायोबैंक इंटरनेशनल, नई दिल्ली)

डॉ. योगेश मिश्र - (समूह सम्पादक, अपना भारत/न्यूज ट्रैक, लखनऊ)

श्री कृष्णकांत उपाध्याय - (सम्पादक,जनता टीवी, उ.प्र.)

डॉ. देवर्षि शर्मा - (लेखक एवं समाजसेवी, कानपुर)

प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी - (सदस्य, आईसीएचआर, इतिहास विभाग, गो.वि.वि.)

प्रो. राजेन्द्र सिंह - (पूर्व प्रतिकुलपति, (गो.वि.वि.)

डॉ. नरेश अग्रवाल - (वरिष्ठ बाल रोग विशेषज्ञ, गोरखपुर)

राकेश त्रिपाठी - (आई. आर. एस.)

भास्कर दूबे - (वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)

प्रेरणा

परम पूज्य स्वामी अखण्डानंद जी महाराज

संत साहित्य मर्मज्ञ आचार्य परशुराम चतुर्वेदी

ब्रह्मर्षि रेवती रमण पाण्डेय

सलाहकार परिषद

श्री कुणाल तिलक, (पुणे)

श्री अनीश गोखले, (बेंगलुरु)

श्री अंबरीष फडणवीस, (मुम्बई)

श्री अजय उपाध्याय (वरिष्ठ पत्रकार, नई दिल्ली)

श्री सुजीत कुमार पाण्डेय (वरिष्ठ पत्रकार, गोरखपुर)

दयानंद पाण्डेय (लेखक एवं पत्रकार)

डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव (चिकित्सक एवं लेखक, वाराणसी)

डॉ. वाई के मद्धेशिया (वरिष्ठ चिकित्सक, कुशीनगर)

प्रो. पुनीत विसारिया(हिन्दी विभाग, बुं.वि.वि. झांसी)

आचार्य सोमदत्त द्विवेदी (वाराणसी)

डॉ. ममता त्रिपाठी (दिल्ली वि.वि.)

श्री सुनील जैन (एडवोकेट, इलाहाबाद)

डॉ. मिथिलेश तिवारी (संगीतज्ञ, गोरखपुर)

डॉ. गजेन्द्रनाथ मिश्र (निदेशक, आर.सी. मेमोरियल शिक्षा समूह)

श्री अरुणकांत त्रिपाठी (सम्पादक, कमलज्योति, लखनऊ)

श्री मंकेश्वरनाथ पाण्डेय (सचिव, नेशनल एजुकेशनल सोसाइटी, गोरखपुर)

श्री दीप्तभानु डे (वरिष्ठ पत्रकार, गोरखपुर)

श्री रतिभान त्रिपाठी (वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)

श्री पुरुषोत्तम तिवारी (वरिष्ठ पत्रकार, कोलकाता)

डॉ. रविकांत तिवारी(अमेरिका)

डॉ. राम शर्मा(शिक्षाविद्, मेरठ)

दिवाकर शर्मा (वरिष्ठ पत्रकार, शिवपुरी)

आमोदकांत मिश्र (वरिष्ठ पत्रकार, कुशीनगर)

प्रधान सम्पादक

श्री हनुमानजी महाराज

सम्पादकीय संरक्षक

पद्मश्री आचार्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

अतिथि सम्पादक

स्वामी जीतेन्द्रानंद सरस्वती

प्रबंध सम्पादक

बी के मिश्र

सम्पादक

संजय तिवारी

कार्यकारी सम्पादक

डॉ. अर्चना तिवारी

सहायक सम्पादक

डॉ. अनिता अग्रवाल

सह सम्पादक

गोविन्द शर्मा

प्रज्ञा मिश्रा

संयुक्त सम्पादक

सिद्धार्थ मणि त्रिपाठी

समन्वय सम्पादक

विक्रमादित्य सिंह

विशेष सम्पादकीय परामर्श

आचार्य लालमणि तिवारी

(गीता प्रेस, गोरखपुर)

श्री रसेन्दु फोगला

(गीता वाटिका, गोरखपुर)

श्री अजीत दुबे

(सदस्य साहित्य अकादमी, नई दिल्ली)

केन्द्र प्रभारी, अमेरिका

आचार्य रत्नदीप उपाध्याय

विधि सलाहकार

श्री अमिताभ चतुर्वेदी

(वरिष्ठ अधिवक्ता, नई दिल्ली)

असित के चतुर्वेदी

(वरिष्ठ अधिवक्ता, लखनऊ)

लेखा परीक्षक

अरुण गुप्ता

लेआउट, ग्राफिक्स एवं डिजाइन

संजय मानव

सूचना तकनीक एवं प्रबंधन

उत्कर्ष तिवारी

क्रिएटिव

प्रकर्ष तिवारी

(shot by inflict)

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक संजय तिवारी द्वारा स्वास्तिक ग्रफिक्स, महागनगर, लखनऊ उ0प्र0 से मुद्रित एंव बी–64, आवास विकास कॉलोनी, सूरजकुण्ड, गोरखपुर, उ.प्र. से प्रकाशित

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के लिए संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। किसी भी प्रकार के न्यायिक विवाद का क्षेत्र गोरखपुर जिला न्यायालय के अधीन होगा।

पंजीकृत कार्यालय : बी-64, आवास विकास कालोनी, सूरजकुंड, गोरखपुर-273001

लखनऊ कार्यालय : 2/43, विजय खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010

दिल्ली कार्यालय : बी-38 डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

सम्पर्क - : + **9194508 87186-87**

USA Office : 17413 Blackhawk St. Granada Hills, CA 91344 USA

Cell : 1-818-815-9826

(भारत संस्कृति न्यास और संस्कृति पर्व प्रकाशन का प्रकल्प)

editor.sanskritiparva@gmail.com

www.bharatsanskritinyas.org

Follow us

|| श्री हरि ||

श्री शंकराचार्यो विजयतेतराम्

अनंत श्री विभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर भगवत्पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्य

श्री स्वामी वासुदेवानन्द सरस्वती जी महाराज

ज्योर्तिमठ, बद्रीका आश्रम, जोशीमठ, बद्रीनाथ
ज्योर्तिमठ, जोशीमठ चमोली उत्तराखंड
श्री ब्रह्मनिवास शंकराचार्य आश्रम 56/15,
अलोपीबाग प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

अनंत श्री विभूषित ज्योतिष्पीठोद्धारक भगवत्पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्य ब्रह्मलीन श्री स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी महाराज

आशीर्वाद

यह अत्यंत शुभ है कि काशी में इस वर्ष का संस्कृति संसद आयोजित हो रहा है। अखिल भारतीय संत समिति और श्री गंगामहासभा के तत्वावधान में आयोजित हो रहे इस वैश्विक सांस्कृतिक समागम के अवसर पर मासिक पत्रिका संस्कृति पर्व ने एक विशेषांक इसी आयोजन को केंद्रित कर प्रकाशित करने का निर्णय लिया है, यह उत्तम प्रयास है। संस्कृति पर्व के प्रथम अंक का लोकार्पण भी प्रयागराज में कुम्भ 2019 के अंतर्गत आयोजित इसी संस्कृति संसद में हुआ था। यह अतिविशिष्ट अवसर है जब संस्कृति पर्व अपनी पांच वर्ष की सफल यात्रा पूरी कर संस्कृति संसद 2023 के लिए एक विशेष अंक प्रकाशित कर रही है। यह और भी महत्वपूर्ण है कि इस अंक के लिए पत्रिका ने अखिल भारतीय संत समिति और श्री गंगा महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री स्वामी जीतेन्द्रानंद जी सरस्वती को संपादन का दायित्व सौंपा है। इसके लिए संस्कृति पर्व के संस्थापक संजय तिवारी और उनकी संपादकीय परिषद को अनंत आशीर्वाद। इस अंक की सफलता की मंगलकामनाएं।

जीतेन्द्रानन्द सरस्वती

स्वामी जीतेन्द्रानन्द सरस्वती
शिष्य : अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य
ज्योतिष्पीठाधीश्वर श्री स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती जी महाराज

विश्व इस समय एक विशेष प्रकार के संत्रास के दौर में है। पहले दो वर्ष में जैविक संक्रमण को महामारी के रूप में सभी ने झेला है। छोटे से लेकर हर बड़े और विकसित देश को संकट से गुजरना पड़ा है। अब विश्व के पश्चिमी हिस्से में दो बड़े युद्ध लड़े जा रहे हैं। कहीं न कहीं धीरे-धीरे दुनिया इससे प्रभावित होने लगी है। ऐसे में इस महान संकट ने दुनिया को भारतीय मूल्यों और भारतीय सनातन तत्वों की ओर देखने और समझने की दृष्टि दी है। भारतीय सभ्यता और लोक परंपरा से विश्व ने बहुत कुछ सीखना शुरू कर दिया है और इस समय विश्व की निगाहें भारत पर टिकी हैं। भारत से बहुत उम्मीदें हैं। मानव जगत को भारतीय मूल्यों, परंपराओं और संस्कारों की अत्यंत अवाश्यकता है। भारत के दर्शन, साहित्य, इतिहास और महापुरुषों के जीवन दर्शन को विश्व ठीक से समझने के प्रयास में है। बिना भारत और भारतीयता का आश्रय लिए विश्व का कोई कोना सुगम जीवन की कल्पना नहीं कर सकता। इसी तरह का संकेत जी-20 के शिखर सम्मेलन में नई दिल्ली घोषणा पत्र के माध्यम से विश्व को प्राप्त हुआ है। ऐसे परिवेश में भारत की सांस्कृतिक राजधानी काशी में संस्कृति संसद का आयोजन और इस अवसर पर पत्रिका संस्कृतिपर्व के विशेषांक का प्रकाशन बहुत ही महत्वपूर्ण है। काशी का यह आयोजन निश्चय ही विश्व मे मानवता के लिए बहुत सुखद संदेश देने वाला है। संस्कृतिपर्व का यह विशेषांक मानव जीवन को संस्कार युक्त बनाने और सार्थक दिशा देने में सक्षम साहित्य के रूप में सामने आ सकेगा, ऐसा विश्वास है।

किसी भी समाज और राष्ट्र के लिए यह गर्व का क्षण होता है जब उसके प्राणतत्व की वास्तविक विवेचना और उसके संवर्धन के सटीक प्रयास किये जाते हैं।

संस्कृति पर्व ने अपने इस विशेष अंक के संयोजन में यह प्रयास किया है कि भारतीय मूल्यों को प्रसारित करने की दिशा में कुछ अच्छा और गतिमान हो सके। मुझे भरोसा है कि आप सभी को यह अंक महत्वपूर्ण और लाभकारी लगेगा।

इस अति विशिष्ट अंक के संयोजन और प्रकाशन के लिए संस्कृति पर्व की संपादकीय परिषद को बधाई। हृदय से शुभकामनाएं।

बी के मिश्रा

सनातन था, सनातन है और सनातन ही रहेगा

“क्या यह सामूहिक नरसंहार की चेतावनी नहीं है? अथवा राज्य प्रायोजित हिंसा को उकसाने का मामला नहीं बनता है? राज्य के जिन मन्त्रियों के ऊपर प्रत्येक नागरिक के सुरक्षा की जिम्मेदारी है, विशेषतः हिन्दू मठ-मन्दिरों की चल-अचल सम्पत्तियों की जिम्मेदारी है, वह मन्त्री संविधान से परे जाकर ऐसी बयानबाजी कैसे कर सकते हैं? महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमन्त्री उद्धव ठाकरे के द्वारा यह कहना कि रामजन्मभूमि की प्राण-प्रतिष्ठा के बाद लौट रहे रामभक्तों के साथ 'गोधरा' दुहराया जा सकता है।”

पिछले दो महीने से सनातन हिन्दू धर्म विरोधी वक्तव्यों की बाढ़ सी आ गई है। तमिलनाडु के मुख्यमन्त्री एमके स्टॉलिन के बेटे उदयनिधि स्टॉलिन ने सनातन धर्म की तुलना मच्छर से फैलने वाले डेंगू और मलेरिया से करते हुए कहा कि 'सनातन धर्म को डेंगू और मलेरिया की तरह खत्म करना होगा। उन्होंने कहा कि सनातन का सिर्फ विरोध नहीं किया जाना चाहिए बल्कि इसे समाप्त ही कर देना चाहिए। साथ ही उन्होंने कहा कि कुछ चीजों का विरोध नहीं किया जाता, उन्हें खत्म ही कर देना चाहिए।' सनातन उन्मूलन के इस सम्मेलन में पी.के. शेखर बाबू, जो कि तमिलनाडु सरकार के हिन्दू रिलिजियस एंड एंडाउमेंट मिनिस्टर हैं, भी उपस्थित थे। इसी तरह के बयान प्रियांक खड़गे, कार्ती चिदम्बरम ने भी दिए। पुनः कर्नाटक के गृहमन्त्री द्वारा सनातन हिन्दू धर्म को धर्म मानने से इन्कार करने का बयान जारी हुआ। डीएमके के एक और नेता ए. राजा द्वारा भी हिन्दू समाज को गाली दी गई। बिहार में आरजेडी के तीन नेताओं के द्वारा अलग-अलग तरीके से सनातन हिन्दू धर्म के लिए अपशब्दों का प्रयोग किया गया। रामचरितमानस की एक चौपाई पर बिहार के शिक्षामन्त्री के द्वारा जिस प्रकार प्रश्न किया गया और सनातन हिन्दू धर्म को गाली दी गई। उसके बाद उत्तर प्रदेश के पूर्व मन्त्री और हारे हुए विधायक जो अपने राजनैतिक आकाओं की कृपा से विधान परिषद पहुंचे हैं, उनके द्वारा आपत्तिजनक और कर्नाटक के एक तथाकथित साहित्यकार द्वारा भगवान राम और माँ सीता के लिए अपमानजनक शब्द प्रयोग किए गए। क्या यह सब अनायास ही हुआ या सोची-समझी रणनीति के तहत पूरे देश में दंगे कराने के लिए षड़यंत्रपूर्वक टूलकिट की तरह काम किया गया है। प्रश्न यह उठता है कि 'प्रगतिशील लेखक संघ' के जिस मन्च से सनातन को मिटाने की बात कही जा रही थी, उस मन्च पर तमिलनाडु के 70 हजार से अधिक मन्दिरों के रक्षा, संरक्षण तथा मन्दिर के पुजारियों के वेतन की जिम्मेदारी सम्भालने वाले मन्त्रालय के मन्त्री पी.के. शेखर बाबू भी बैठे हुए थे। क्या यह सामूहिक नरसंहार की चेतावनी नहीं है? अथवा राज्य प्रायोजित हिंसा को उकसाने का मामला नहीं बनता है? राज्य के जिन मन्त्रियों के ऊपर प्रत्येक नागरिक के सुरक्षा की जिम्मेदारी है, विशेषतः हिन्दू मठ-मन्दिरों की चल-अचल सम्पत्तियों की जिम्मेदारी है, वह मन्त्री संविधान से परे जाकर ऐसी बयानबाजी कैसे कर सकते हैं? महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमन्त्री उद्धव ठाकरे के द्वारा यह कहना कि रामजन्मभूमि की प्राण-प्रतिष्ठा के बाद लौट रहे रामभक्तों के साथ 'गोधरा' दुहराया जा सकता है। प्रश्न यह उठता है कि उद्धव देश को सूचना दे रहे हैं अथवा षड्यन्त्र की गतिविधियों में शामिल होकर धमकी दे रहे हैं? भारत देश की जनता की स्मरण-शक्ति इतनी कमजोर भी नहीं है कि वह यह भूल जाए कि 492 वर्षों के संघर्ष के बाद प्राप्त हुई श्रीराम जन्मभूमि पर पूजन के समय न्यायालय में राहुल गांधी के परम मित्र साकेत गोखले के द्वारा याचिका दायर कर यह कहा गया था कि कोरोना के समय भूमि पूजन रोका जाना चाहिए। अलग-अलग तरीकों से सनातन धर्मावलम्बियों की भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए षड़यंत्रपूर्वक राजनेताओं के द्वारा जो प्रयास किए गए क्या उसे हम भूल जाएंगे?

कुछ दिनों पहले अमेरिका के अन्दर जॉर्ज सोरोस ने जब यह बोला कि हम भारत को दंगे की आग में झोक देंगे और इसके लिए हमने ठीक प्रकार से अर्थ (धन) की व्यवस्था की है तो सहसा विश्वास नहीं हो रहा था परन्तु भारत के अन्दर ही नहीं, बाहर भी 'डिस्मेंटलिंग ऑफ ग्लोबल हिन्दुत्व' के नाम पर सेमिनारों का आयोजन, जिसमें भारतीय राजनेताओं में

राहुल गांधी, अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव, सीताराम येचुरी आदि नेताओं के द्वारा जब ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका में बयान दिए गए तो यह प्रश्न खड़ा हुआ कि आखिर इनका आर्थिक प्रदाता कौन है? धीरे-धीरे भारत के अन्दर योजनाबद्ध तरीके से राजनेताओं के द्वारा सनातन हिन्दू धर्म को लक्षित किए जाने के बाद यह स्पष्ट होता जा रहा है कि इन सबके सम्पर्क देश के बाहर कहीं-न-कहीं जुड़े हुए हैं। राजनीति में पक्ष-विपक्ष का होना एक स्वस्थ लोकतन्त्र का परिचायक है, परन्तु जब मोदी विरोध राष्ट्र विरोध में परिवर्तित हो जाए और यह सीमा उससे आगे बढ़कर लाखों वर्षों से पल्लवित-पुष्पित सनातन विरोध पर केन्द्रित हो जाए तो धर्माचार्यों की चिंता का विषय अवश्य ही बन जाता है। 700 वर्षों की पराधीनता के कारण स्वत्व का बोध खो चुके हिन्दुओं के लिए 2014 एक स्वर्णिम काल के रुप में सामने आया, जब समाज का स्वाभिमान, आर्थिक शक्ति, मन्दिर आधारित अर्थव्यवस्था का विकास होना शुरु हुआ। देश की आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था धीरे-धीरे पटरी पर आने लगी। दंगे और आतंकवादी घटनाओं में आश्चर्यजनक रुप से कमी आई परन्तु देश-विरोधी षड्यन्त्रकारी, जो 'बांटो एवं राज करो' की नीति पर कार्य करते थे, उनके लिए एकजुट हिन्दू समाज आंखों में चुभने लगा। वो हिन्दू समाज के जातियों की बात तो करेंगे, परन्तु इस्लाम के 73 फिरकों और क्रिश्चियनिटी के 146 समूहों पर कभी चर्चा नहीं करेंगे। जातिगत गणना की तो बात होगी परन्तु सर्वसमाज ऊपर कैसे उठेगा, इस पर विमर्श नहीं होगा।

तमिलनाडु के अन्दर जिन लोगों ने 'सनातन उन्मूलन सम्मेलन' किए, उसमें उदयनिधि स्टालिन ईसाई हैं, पी.के. शेखरबाबू भी ईसाई हैं, कार्ती चिदम्बरम ईस्लाम स्वीकार कर चुके हैं। दलित के नाम पर सुविधाओं का उपभोग करने वाले मल्लिकार्जुन खड़गे और उनके बेटे प्रियांक खड़गे दोनों ईसाई हैं। प्रश्न यह है कि सनातन की जगह अगर ईस्लाम उन्मूलन या क्रिश्चियन उन्मूलन शब्द का प्रयोग किया गया होता तो क्या देश-विदेश की मीडिया ऐसे ही शान्त बैठी रहती? क्या विपक्ष के नेता ऐसे ही शान्त बैठते? हिन्दू समाज के शान्तचित्त होने का गलत अर्थ लगाया जा रहा है। मोपला दंगे के बाद महात्मा गांधी ने कहा था कि 'हमारी अहिंसा कायरता नहीं सिखाती है।' 2014-15 में दिल्ली के अंदर एक चर्च की खिड़की पर पत्थर का एक टुकड़ा लग जाने से कांच टूट गया, तो पूरी दुनिया की मीडिया ने 'भारत असहिष्णु है...' ऐसे शब्दों का प्रयोग किया, जो कि न्यायसंगत नहीं था। अब तक भारत विरोधी ताकतों के द्वारा हिन्दू समाज को कमजोर करने के लिए विभिन्न नैरेटिव का प्रयोग किया जाता था। पहली बार इन्होंने अपने वास्तविक लक्ष्य को प्रकट किया है। औरंगजेब के बाद पहली बार किसी ने सनातन उन्मूलन की सार्वजनिक धमकी दी है। डीएमके नेता के द्वारा यह कहना कि 'आईएनडीआईए' का गठन ही सनातन धर्म के उन्मूलन के लिए हुआ है। प्रश्न उठता है कि यह लड़ाई राजनैतिक है या धार्मिक? अगर राजनीति में सनातन हिन्दू धर्म को घसीटा जाएगा तो धर्माचार्य अपने मठ-मन्दिरों की सुरक्षा, सनातन हिन्दू धर्म के रक्षार्थ युद्ध करने से पीछे नहीं हटेंगे। विश्व में एकमात्र वैज्ञानिक धर्म सनातन हिन्दू धर्म है। क्या कभी किसी ने सुना कि बाइबिल अथवा कुरान पर रिसर्च हो रहा है? परन्तु जर्मनी से लेकर अमेरिका तक वेद से लेकर वेदांग पर रिसर्च हो रहा है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'विश्व बन्धुत्व' की बात करने वाले जड़-चेतन में आत्मवत स्वरुप का दर्शन करने वाले सनातनियों के बारे में इतने घृणास्पद तर्क देने वाले राजनेताओं पर 'हेट-स्पीच' का मामला बनता भी है कि नहीं? जबकि भारत के उच्चतम न्यायालय ने अपने एक फैसले में यह स्वीकार किया है कि सनातन हिन्दू धर्म न केवल धर्म है बल्कि जीवन जीने की एक पद्धति भी।

वर्तमान में अन्य विषयों पर अतिसक्रियता का प्रदर्शन करने वाले सर्वोच्च न्यायालय पर भी देश के हिन्दू समाज और साधु-सन्तों की दृष्टि है। संविधान की शपथ लेकर उसके विरुद्ध आचरण करने वाले तमिलनाडु सरकार के मन्त्रियों पर स्वयं को संविधान का संरक्षक कहने वाला उच्चतम न्यायालय क्या कार्रवाई करने जा रहा है? क्या भारत में राजनैतिक दलों का गठन अथवा गठबन्धन किसी धर्म को नष्ट करने के लिए बनाया जा सकता है क्या? सर्वधर्म समभाव की बात करने वाले सम्प्रदाय निरपेक्ष नेताओं को जब हम सनातन हिन्दू धर्म को निशाना बनाते देखते हैं तो ऐसा लगता है कि यह राजैनतिक दल नहीं किसी सम्प्रदाय विशेष के 'सुपारी किलर' की भूमिका में हैं। अगर ऐसे राजनेता सभी सम्प्रदायों की आलोचना अथवा प्रशंसा करने में समान दृष्टि रखते तो हमें कोई परेशानी नहीं थी परन्तु इस्लाम और ईसाइयत की प्रशंसा करते हुए सनातन हिन्दू धर्म को निशाना बनाया जाना निश्चित ही किसी बड़े अंतर्राष्ट्रीय षडयन्त्र के तरफ संकेत कर रहा है। ऐसी परिस्थितियों में मद्रास उच्च न्यायालय ने यह कहते हुए एक सकारात्मक राह दिखाई कि सनातन हिन्दू धर्म को समाप्त किए जाने का मतलब है व्यक्ति को कर्त्तव्यों से च्युत कर देना अर्थात माता-पिता, गुरु, भाई-बहन, राज्य-राष्ट्र तथा समाज के प्रति उसके उत्तरदायित्वों को नकारना होगा। हम आशा ही नहीं विश्वास रखते है कि महीनों से चल सभ्यता और संस्कृति के संघर्ष में प्रतीचि एवं प्राची का मेल होगा और भारत की संस्कृति इस संघर्ष से निखरकर सभी प्रश्नों का सत्यक् उत्तर देकर यूरोपीय जगत का भी राजधर्म बनकर मानवता को सच्ची राह दिखायेगी।

स्वामी जीतेन्द्रानन्द सरस्वती

(राष्ट्रीय महामंत्री)

अखिल भारतीय संत समिति, गंगा महासभा

सनातन सिद्धान्तों की पुनर्स्थापना का यज्ञ

संजय तिवारी

यह पथ सनातन है। समस्त देवता और मनुष्य इसी मार्ग से पैदा हुए हैं तथा प्रगति की है। हे मनुष्यों आप अपने उत्पन्न होने की आधाररूपा अपनी माता को विनष्ट न करें।

–ऋग्वेद-3-18-1

आधुनिक विश्व। वर्तमान परिदृश्य। मनुष्यता पर संकट। सनातन सिद्धांतों की या तो उपेक्षा या उपहास। मानव सभ्यता के उत्कर्ष के लिए रचित सनातन सिद्धांतों की इसी उपेक्षा या उपहास ने आज पृथ्वी और सृष्टि के सामने संकट खड़ा कर दिया है। यह संकट आयातित अथवा अमानवीय कुछ सत्ताओं द्वारा निर्मित है। इसको यूं ही देख नही सकते। मानव देह को सम्पूर्ण मनुष्य के रूप में अभिसिंचित कर मानवता की स्थापना के लिए हमारे पास सभी साधन उपलब्ध हैं। अब समय आ गया है कि अपने उन्ही साधनों से आधुनिक विश्व को ठीक से परिचित करा कर मानवीय मूल्यों और सिद्धांतों वाले उस मार्ग को ओर लेकर बढ़ा जाय, जो मनुष्यता के लिए हितकर है। यह केवल सनातन संस्कृति ही है जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्मांड, सृष्टि, पृथ्वी, समस्त प्राणियों, वनस्पतियों के साथ साथ मनुष्यता को व्यवस्थित करने और मानवीय सत्ता स्थापित करने की शक्ति है। काशी में हो रही संस्कृति संसद 2023 इसी दिशा में होरहा एक ऐसा प्रयास है जिसको सनातन सिद्धांतो की पुनर्स्थापना का यज्ञ कहना बिल्कुल समीचीन होगा।

विश्व का जो वर्तमान परिदृश्य है उसमें मानवता की रक्षा की एक मात्र किरण के रूप में सनातन की तरफ ही सभी का ध्यान जा रहा है। युद्धों के इस दौर में अशांत दुनिया को केवल भारत से ही उम्मीद है। हालांकि भारत के भीतर भी ऐसे तत्व सक्रिय हैं जो अशांति पैदा करना चाहते हैं। भारत ऐसी शक्तियों को न सहन करेगा और न ही पनपने देगा बल्कि अशांति के तत्वों को समाप्त कर देगा। इसको समझने के लिए बहुत पीछे लौटना पड़ेगा और सनातन की शाश्वत शक्ति को उसके आधार ग्रन्थों में तलाश कर भावी पीढ़ी को सौंपना होगा।

“विश्व का जो वर्तमान परिदृश्य है उसमें मानवता की रक्षा की एक मात्र किरण के रूप में सनातन की तरफ ही सभी का ध्यान जा रहा है। युद्धों के इस दौर में अशांत दुनिया को केवल भारत से ही उम्मीद है। हालांकि भारत के भीतर भी ऐसे तत्व सक्रिय हैं जो अशांति पैदा करना चाहते हैं। भारत ऐसी शक्तियों को न सहन करेगा और न ही पनपने देगा बल्कि अशांति के तत्वों को समाप्त कर देगा। इसको समझने के लिए बहुत पीछे लौटना पड़ेगा और सनातन की शाश्वत शक्ति को उसके आधार ग्रन्थों में तलाश कर भावी पीढ़ी को सौंपना होगा।”

सनातन संस्कृति मूलतः श्रुति पर आधारित है। समयानुकूल भाषाई सरलता के कारण श्रुति को स्मृति, उपनिषद, शास्त्र, पुराण , इतिहास और साहित्य के रूप में हमारे मनीषियों, आचार्यों और संत पुरुषों ने इसको व्यख्यायित किया और परंपरा के रूप में लोक में स्थापित किया है। ये परंपराएं अभी भी लोकानुकूल क्रियाशील हैं। ॐ एक ऐसा संकेत है जो ध्वनि और भाषा दोनो ही के लिए सर्वोच्च है। यह सनातन का प्रतीक चिह्न ही नहीं बल्कि सनातन परम्परा का सबसे पवित्र शब्द है। सनातन धर्मरू (वैदिक धर्म) जो वैदिक धर्म के वैकल्पिक नाम से जाना जाता है। वैदिक काल में भारतीय उपमहाद्वीप के धर्म के लिये ‘सनातन धर्म’ नाम मिलता है। ‘सनातन’ का अर्थ है दृ शाश्वत या ‘हमेशा बना रहने वाला’, अर्थात् जिसका न आदि है न अन्त। सनातन धर्म मूलतरू भारतीय धर्म है, जो किसी जमाने में पूरे वृहत्तर भारत (भारतीय उपमहाद्वीप) तक व्याप्त रहा है। विभिन्न कारणों से हुए भारी धर्मान्तरण के बाद भी विश्व के इस क्षेत्र की बहुसंख्यक आबादी इसी धर्म में आस्था रखती है। सनातन संस्कृति जिसे आज हिन्दू धर्म अथवा वैदिक धर्म भी कहा जाता है, का 1960853112 वर्षों का इतिहास हैं। भारत और आधुनिक पाकिस्तानी क्षेत्र की सिन्धु घाटी सभ्यता में हिन्दू धर्म के कई चिह्न मिलते हैं।

इनमें एक अज्ञात मातृदेवी की मूर्तियाँ, शिव पशुपति जैसे देवता की मुद्राएँ, लिंग, पीपल की पूजा, इत्यादि प्रमुख हैं। प्राचीन काल में सनातन संस्कृति में गाणपत्य, शैवदेवरूकोटी वैष्णव, शाक्त और सौर नाम के पाँच सम्प्रदाय होते थे। गाणपत्य गणेशकी, वैष्णव विष्णु की, शैवदेवरूकोटी शिव की, शाक्त शक्ति की और सौर सूर्य की पूजा आराधना किया करते थे। पर यह मान्यता थी कि सब एक ही सत्य की व्याख्या हैं। यह न केवल ऋग्वेद परन्तु रामायण और महाभारत जैसे लोकप्रिय ग्रन्थों में भी स्पष्ट रूप से कहा गया है।

सनातन संस्कृति में सबसे महत्वपूर्ण स्थान धर्माचार्यों को दिया गया। राज, समाज और परिवार के संचालन में आचार्यों और धर्मगुरुओं का विशेष महत्व रहा है। सामान्य जन के बीच कोई भेद अथवा कोई भ्रम न उत्पन्न हो इसलिए धर्मगुरुओं ने लोगों को यह शिक्षा देना आरम्भ किया कि सभी देवता समान हैं, विष्णु, शिव और शक्ति आदि देवी-देवता परस्पर एक दूसरे के भी भक्त हैं। उनकी इन शिक्षाओं से सभी सम्प्रदायों में मेल हुआ और समन्वित सनातन जीवन संस्कृति की उत्पत्ति हुई। इसमें विष्णु, शिव और शक्ति को समान माना गया और तीनों ही सम्प्रदाय के समर्थक इस धर्म को मानने लगे। सनातन धर्म का सारा साहित्य वेद, पुराण, श्रुति, स्मृतियाँ,उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता आदि संस्कृत भाषा में रचा गया है।

कालान्तर में भारतवर्ष में मुसलमान शासन हो जाने के कारण देवभाषा संस्कृत का ह्रास हो गया तथा सनातन धर्म की अवनति होने लगी। इस स्थिति को सुधारने के लिये विद्वान संत तुलसीदास ने प्रचलित भाषा में धार्मिक साहित्य की रचना करके सनातन धर्म की रक्षा की। जब औपनिवेशिक ब्रिटिश शासन को ईसाई, मुस्लिम आदि धर्मों के मानने वालों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिये जनगणना करने की आवश्यकता पड़ी तो सनातन शब्द से अपरिचित होने के कारण उन्होंने यहाँ के धर्म का नाम सनातन धर्म के स्थान पर हिंदू धर्म रख दिया।

'सनातन धर्म', हिन्दू धर्म का वास्तविक नाम है। सत्य दो धातुओं से मिलकर बना है सत् और तत्। सत का अर्थ यह और तत का अर्थ वह। दोनों ही सत्य है। अहं ब्रह्मास्मी और तत्वमसि। अर्थात मैं ही ब्रह्म हूँ और तुम ही ब्रह्म हो। यह संपूर्ण जगत ब्रह्ममय है। ब्रह्म पूर्ण है। यह जगत् भी पूर्ण है। पूर्ण जगत् की उत्पत्ति पूर्ण ब्रह्म से हुई है। पूर्ण ब्रह्म से पूर्ण जगत् की उत्पत्ति होने पर भी ब्रह्म की पूर्णता में कोई न्यूनता नहीं आती। वह शेष रूप में भी पूर्ण ही रहता है। यही सनातन सत्य है।

सनातन में आधुनिक और समसामयिक चुनौतियों का सामना करने के लिए इसमें समय समय पर बदलाव होते रहे हैं। यद्यपि आज सनातन का पर्याय हिन्दू है पर बौद्ध, जैन धर्मावलम्बी भी सनातनी ही हैं, क्योंकि बुद्ध भी अपने को सनातनी कहते हैं। यहाँ तक कि नास्तिक जो कि चार्वाक दर्शन को मानते हैं वह भी सनातनी हैं। सनातन धर्मी के लिए किसी विशिष्ट पद्धति, कर्मकांड, वेशभूषा को मानना जरुरी नहीं। बस वह सनातनधर्मी परिवार में जन्मा हो, वेदांत, मीमांसा, चार्वाक, जैन, बौद्ध, आदि किसी भी दर्शन को मानता हो बस उसके सनातनी होने के लिए पर्याप्त है। सनातन धर्म की गुत्थियों को देखते हुए कई बार इसे कठिन और समझने में मुश्किल धर्म समझा जाता है। हालांकि, सच्चाई तो ऐसी नहीं है, फिर भी इसके इतने आयाम, इतने पहलू हैं कि लोगबाग कई बार इसे लेकर भ्रमित हो जाते हैं। सबसे बड़ा कारण इसका यह कि सनातन धर्म किसी एक दार्शनिक, मनीषा या ऋषि के विचारों की उपज नहीं है, न ही यह किसी ख़ास समय पैदा हुआ। यह तो अनादि काल से प्रवाहमान और विकासमान रहा। साथ ही यह केवल एक दृष्टा, सिद्धांत या तर्क को भी वरीयता नहीं देता।

सनातन धर्म का मार्ग और इसके सिद्धांत स्वयं में महाविज्ञान हैं। आधुनिक विज्ञान जब प्रत्येक वस्तु, विचार और तत्व का मूल्यांकन करता है तो इस प्रक्रिया में धर्म के अनेक विश्वास और सिद्धांत धराशायी हो जाते हैं। विज्ञान भी सनातन सत्य को पकड़ने में अभी तक कामयाब नहीं हुआ है किंतु वेदांत में उल्लेखित जिस सनातन सत्य की महिमा का वर्णन किया गया है विज्ञान धीरे-धीरे उससे सहमत होता नजर आ रहा है। हमारे ऋषि-मुनियों ने ध्यान और मोक्ष की गहरी अवस्था में ब्रह्म, ब्रह्मांड और आत्मा के रहस्य को जानकर उसे स्पष्ट तौर पर व्यक्त किया था।

सनतान की इसी शक्ति को रेखांकित और संकल्प के रूप में स्थापित करने के लिए भारत के संतों, मनीषियों और विद्वत जन ने काशी में भगवान विश्वेश्वर के समक्ष उपस्थित होकर संस्कृति संसद-2023 के माध्यम से विश्व को शांति और सद्भाव का संदेश देने का प्रयास किया है। इस प्रयास में निवेदन भी है और सनातन की रक्षा का उद्घोष भी। संस्कृति पर्व परिवार इस आयोजन की सफलता की कामना करता है।

संस्कृति संसद 2023 का औपचारिक उद्घाटन

सशक्त नेतृत्व वाले राष्ट्र के समक्ष झुकती है दुनिया : शिव प्रताप शुक्ल

कोई राष्ट्राध्यक्ष यदि मोदी जी का पैर छूता है तो यकीनन वह भारत को नमन करता है

राष्ट्र के सक्षम और सशक्त नेतृत्व के आगे विश्व हमेशा झुकता है। आज यदि विश्व का कोई राष्ट्रध्यक्ष भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के पैर छूता है तो वह भारत को नमन करता है। राष्ट्र की शक्ति उसके नेतृत्व की शक्ति से जुड़ी है। सनातन भारत हमेशा से विश्व के लिए पथ प्रदर्शक रहा है और आगे भी रहेगा। विगत कुछ समय को छोड़ दें, खास तौर पर मध्यकाल को, तो भारत ने हमेशा अपनी इसी सनातन शक्ति से विश्व को दिशा दी है। कुछ वर्षो के लिए जब भारत का नेतृत्व कमजोर हुआ उसी समय बाहरी शक्तियों ने अवसर पा कर भारत को अपने अधीन कर लिया था। प्राचीन भारत हमेशा से सशक्त नेतृत्व के साथ विश्व के लिए मार्गदर्शक की भूमिका में रहा है और अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में उसी दिशा में आगे बढ़ रहा है ।

भगवान विश्वेश्वर की भूमि और संस्कृति की राजधानी काशी में संस्कृति संसद का आयोजन स्वयं में एक सिद्धि है। इसमें कोई संशय तो हो ही नही सकता कि अपने उद्देश्यों में यह अतीव सफल होगा। आज जब हम इस अत्यंत महत्वपूर्ण सारस्वत यज्ञ के शुभंकर के लोकार्पण के अवसर पर यहां एकत्र हैं तो ऐसे अनेक विंदु हैं जो एक भारतीय के रूप मेरे मन में बार बार उभर भी रहे हैं और बहुत सलीके से ऊर्जस्वित भी कर रहे हैं। जिस पवित्र सनातन तत्व पर व्यापक विमर्श और उसकी अविरल यात्रा को लेकर यह आयोजन किया जा रहा है , मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि इससे मंथन के बाद जो संदेश निकल कर सामने आएगा उसका प्रभाव केवल भारत के लिए ही नहीं बल्कि विश्व के लिए काफी महत्वपूर्ण होने वाला है। मुझे बताया गया है कि सनातन जीवन संस्कृति के लिए सर्वदा मंगल स्वर प्रदान करने वाली अखिल भारतीय संत समिति, हमारी संत परंपरा की अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद और काशी विद्वतपरिषद के साथ महामना मदन मोहन मालवीय जी जैसे सनातन राष्ट्र पुरुष द्वारा स्थापित गंगा महासभा ने यह आयोजन किया है। यह इस श्रृंखला का पांचवां सोपान है, यह और भी महत्वपूर्ण है। आयोजन काशी में हो रहा है तो इसमें कोई संदेह ही नहीं कि इससे निश्चित रूप से एक बहुत बड़ा संदेश विश्व को मिलने वाला है।

यह सभी की जानकारी में है कि हमारे देश ने अभी अपनी स्वाधीनता के 75 वर्ष पूरे किए हैं और इस अमृत वर्ष के साथ ही हमारे दूरदर्शी प्रधानमंत्री जी ने अब से 2047 तक की अवधि को अमृत काल के रूप में सुनिश्चित किया है। यह संयोग ही है कि जिनके नेतृत्व में भारत आज नित नए कीर्तिमान गढ़ रहा है , भारत की संसद में वह इसी धरती का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। आज विश्व में जिस नायकत्व के साथ भारत की स्थापना हो चुकी है वह निश्चित रूप से हमारे इसी नेतृत्व के परिश्रम और दूरदृष्टि तथा संकल्प शक्ति का परिणाम है। भारत ने अभी जी20 का शिखर सम्मेलन आयोजित किया है और नई दिल्ली घोषणापत्र के माध्यम से जो संदेश दिया है उससे आप सभी अवगत हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के एक पृथ्वी, एक परिवार के उद्घोष से अब विश्व सहमत भी हो रहा है और अनेक वैश्विक समस्याओं का समाधान भारतीयता के इसी सनातन तत्व में मिलने उम्मीद दुनिया ने लगा रखी है।

जब हम भारतीय अथवा सनातन जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं तो यह ठीक से समझना चाहिए कि यह अस्तित्व और संस्कृति के रूप में यह सृष्टि के आरंभ से मानव सभ्यता की अब तक की यात्रा का ऐसा प्रमाण है जिसके बिना मनुष्यता की कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक पृथ्वी , एक परिवार का हमारे नेतृत्व का उद्घोष केवल एक नारा नहीं है। ऐसा हजारों वर्षों से होता आ रहा है। सनातन का उद्घोष ही यही है। वसुधैव कुटुंबकम्, विश्व बंधुत्व , सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः जैसे वैश्विक उद्घोष सदा से हमारी संस्कृति करती आई है। भारत के यही संस्कार हैं कि हमने कभी भी कहीं भी पंथ, संप्रदाय या मजहब के आधार पर मनुष्य को मानव भावना से अलग करने और समझने की कोशिश नहीं की। हमारा धर्म मानव ही नही अपितु समस्त जीवों और वनस्पतियों तक के कल्याण का है। यही धर्म का मूल है और इसीलिए यह सनातन है। इसको अब आधुनिक विश्व भी स्वीकार कर रहा है। विश्व अब इस तथ्य को आधार बनाकर ही आगे बढ़ रहा है कि अपौरुषेय वेदों से संचालित जीवन की सनातन संस्कृति से ही अस्तित्व अथवा साहस्तित्व का निर्धारण संभव है। यह संस्कृति केवल किसी कर्मकांड या पूजापद्धति अथवा उपासना का मार्ग नहीं दिखाती बल्कि सृष्टि में जड़ चेतन जो कुछ भी है उसकी सुरक्षा और संरक्षा कैसे की जा सकती है। इस संस्कृति

के लिए जितने महत्वपूर्ण मनुष्य की प्रजाति है उतने ही महत्व के साथ समस्त वनस्पतियां, जंगल, प्राणी, पहाड़, नदियां यानी पृथ्वी, प्रकाश, पवन, वायु , आकाश और अग्नि जैसे सभी पांच महाभूतों की सुरक्षा और संरक्षा आवश्यक है। आज विश्व केवल मानव समुदाय के लिए चिंतित नहीं है बल्कि पर्यावरण के सभी क्षेत्रों में बढ़ चुके भयानक प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, अंतरिक्ष के प्रदूषण, ओजोन परत में विघटन आदि बहुत बड़ी चिंता का विषय बन चुके हैं जिनका समाधान केवल भारतीय सनातन संस्कृति ही उपलब्ध करा सकती है। यह सत्य है कि इस सदी में अब दुनिया की गति जितनी तेज हुई है उसी अनुपात में मनुष्य जीवन के संकट भी बढ़े हैं। आज विश्व में दो स्थानों पर प्रत्यक्ष युद्ध लड़े जा रहे हैं। इसके साथ ही अनेक राष्ट्र परोक्ष रूप से इन युद्धों में शामिल हो चुके हैं। मानव जीवन की सबसे भीषण त्रासदी , कोविड के प्रकोप से अभी दुनिया उबर भी नहीं पाई थी कि यूक्रेन और रूस के बीच युद्ध शुरू हो गया। विश्व की समस्त आपूर्ति व्यवस्था धराशाई हो गई। इसी बीच हमास का इजरायल पर आतंकी हमला और अब इजरायल द्वारा आतंक के खिलाफ छिड़े युद्ध की स्थिति। स्वाभाविक है कि मानवीय और अमानवीय संघर्षों में पिसेगी मनुष्यता और प्रकृति ही।

वैश्विक परिदृश्य अब ऐसा बन चुका है कि सभी की निगाहें अब उम्मीद से भारत पर ही टिकी हैं। कारण यह कि इस सृष्टि के संचालन की जो प्राचीन भारतीय दृष्टि है उसी में जगत को अपने अस्तित्व के संरक्षण की आशा दिख रही है। बीते लगभग ढाई हजार वर्षों में विश्व ने अनेक संस्कृतियों या सभ्यताओं का उदय और पतन देखा है। पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक अनेक महान सभ्यताएं कैसे कैसे अस्तित्वविहीन होती गई हैं , इसका इतिहास विश्व के सामने है। उनमें से अधिकांश ऐसी हैं जिनका कोई नामलेवा तक नहीं बचा है। ऐसे में विश्व देख रहा है कि भारत की सनातन संस्कृति की प्राचीनता लिए सर्वाधिक युवा ऊर्जा से भरपूर भारत वर्ष अब विश्व के संचालन और नए वर्ल्ड ऑर्डर के निर्माण के लिए बिल्कुल तैयार है। आर्थिक, सामरिक और संख्याबल के साथ ही अपनी प्राचीन ज्ञान और कौशल की विराट परंपरा के साथ इस युवा भारत के सामने समस्त वैश्विक चुनौतियां हैं जिनके समाधान के सभी तत्व भी इसी के पास हैं।

इसीलिए जब हमारे स्वप्नदृष्टा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी 2047 के विश्वगुरू भारत की बात करते हैं तो बहुत यकीन के साथ करते हैं क्योंकि आने वाले 25 वर्षों में दुनिया के लिए भारतीयता के तत्व ही संरक्षक बन कर इसे सम्हाल पाएंगे। सनातन पर विमर्श के लिए आयोजित की जा रही इस संस्कृति संसद में हमारी समग्र सनातन विरासत के सभी स्तंभ काशी में एकत्र होकर चिंता करने वाले हैं। इस चिंता की तुलना हम उस अवस्था से भी कर सकते हैं जब कलियुग के आरंभ में मानव संस्कृति की सुरक्षा और संरक्षा के लिए हमारे सभी ऋषियों ने एकत्र होकर गंभीर विमर्श किया था और उस विमर्श के बाद अनेक ग्रंथ अस्तित्व में आए जिनको आज भी सनातन का आधार मान कर उन सभी ग्रंथों पर चर्चाओं से समाधान निकाले जा रहे हैं। जब मैं यह कह रहा हूं कि वैश्विक चुनौतियों का समाधान केवल हमारे पास ही है तो इसका बहुत बड़ा आधार है। अभी जब हैं चंद्रयान को भेजा और चंद्रमा की सतह पर वह सफलता पूर्वक उतरा उसके बाद इसरो के प्रमुख सोमनाथ जी के वक्तव्यों को देखिए। एक तो उन्होंने सबसे पहले संस्कृत में वक्तव्य दिया। दूसरी बात उन्होंने यह कही कि यह सब कुछ करने की दिशा उनको वेदों और सनातन ग्रंथों से प्राप्त हुई है। इसको और भी स्पष्टता से कहा जा सकता है कि पश्चिम के अधिकांश वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है कि भारत के ग्रंथों ने ही उन्हें उनके कार्य के लिए दिशा दी। आइंस्टीन से लेकर कई अन्य वैज्ञानिकों ने अपनी आत्मकथाओं में लिखा भी है। यह सर्वविदित है कि वेद से उत्पन्न दर्शन को व्याख्यायित करते हुए भारत ने जब अपने 6 आस्तिक और 3 नास्तिक दर्शन तलाश लिए उसके बाद पहली बार ईसा से 600 साल पहले पश्चिम ने दर्शन की अवधारणा समझी और उस पर कार्य शुरू किया। इसी भारत के दर्शन में आज विश्व में प्रचलित सभी विषय समाहित हैं जैसे दर्शन ने जब मन की चिंता की तो हमें मनोविज्ञान विषय मिला। दर्शन ने राजनीति की चिंता की तो राजनीति शास्त्र मिला। दर्शन ने अर्थ की चिंता की तो अर्थ शास्त्र मिला। दर्शन ने जब जीव की चिंता की तो वही से जीवन विज्ञान मिला जिसकी अनेक शाखाएं अब कार्य कर रही है। प्राणी शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, गणित, अंक शास्त्र, खगोल विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, अभियांत्रिकी, अंतरिक्ष विज्ञान आदि समस्त विषयों

का मूल दर्शन ही है और दर्शन केवल भारत में उत्पन्न चिंतन प्रणाली है। इस दर्शन का आधार ही सनातन संस्कृति है।

ऐसे में जब काशी में सनातन की चार प्रमुख संस्थाएं, अखिल भारतीय संत समिति, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद, अखिल भारतीय गंगा महासभा और काशी विद्वत परिषद एक साथ बैठ कर वर्तमान विश्व परिदृश्य और सनातन की स्थिति पर चिंतन करेंगी तो इस चिंतन और मंथन से जो तत्व निकलेगा उससे केवल भारत की ही नहीं, विश्व की भी अनेक गंभीर समस्याओं का समाधान प्राप्त होगा।

मां गंगा के पावन आंचल में, भगवान विश्वनाथ की धरती पर अपने राष्ट्र पुरुष और यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की कर्म स्थली पर इस आयोजन के शुभंकर के लोकार्पण का यह अत्यंत शुभ कार्य करने के लिए आपने मुझे अवसर प्रदान किया, यह मेरे लिए सौभाग्य का विषय है। इसके लिए स्वामी जीतेंद्रानंद सरस्वती जी और गोविंद शर्मा जी के प्रति मैं हार्दिक आभार ज्ञापित करता हूं। मेरे अनुज एवं संस्कृति पर्व के संपादक संजय तिवारी ने इस आयोजन से मुझे जोड़ा और निरंतर समन्वय बनाए रखा उसके लिए मैं उन्हे आशीष देता हूँ।

मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत को विश्वगुरु बनाने का जो स्वप्न देखा गया है उस को साकार करने की दिशा में काशी का यह आयोजन एक गंभीर प्रयास है जिसका सुफल सभी के लिए कल्याणकारी होगा। आयोजन की सफलता की कामनाओं के साथ आप सभी के प्रति आभार।

धन्यवाद

वन्देमातरम।।

क्या है सनातन, चुनौतियाँ कहाँ से?

सनातन धर्म या धर्म है क्या ? उसके सामने चुनौतियां कहां से हैं ?इस विषय पर चर्चा होती है। धर्म को हमें धारण करना है। किसी व्यक्ति वस्तु या किसी चीज की जिस जिस गुण के कारण उसकी धारणा बनती है वह उसका धर्म है।अग्नि का धर्म है जलना अग्नि अपनी दाहकता छोड़ दे जल अपनी शीतलता छोड़ दे तो उसका अस्तित्व बचेगा ही नहीं। सनातन यानी जिसका तन कभी क्षीण न हो। इसके आदि का अंत का पता न हो। धर्म का जन्म नहीं हुआ है।

ब्रजेश उपाध्याय

"औद्योगिक क्रांति के बाद भारतीय युवकों में एक हीनता की ग्रंथि आयी कि जो कुछ भी अच्छा है वह पश्चिम में है। उनकी हीनता को दूर करने के लिए हमारे बीच महापुरुष आए। उन्होंने वेदों के सच को हमारे सामने रखा। विवेकानंद दयानंद अनेक महान व्यक्तियों ने युवाओं में आत्म सम्मान की भावना भरी, किंतु आज कैसा परिदृश्य है सामान्य युवा अपने धर्म के प्रति कितने उपेक्षा के भाव से भरा हुआ है। प्रत्येक संस्कार को हमने फोटो खींचने के तमाशे के रूप में खड़ा कर दिया है।"

न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण की खोज नहीं की। न्यूटन के जन्म के हजारों वर्ष पूर्व भी गुरुत्वाकर्षण था। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के नियम खोजें। वह यह देख सका की गुरुत्वाकर्षण किस प्रकार कार्य कर रहा है। वह गुरुत्वाकर्षण का जन्मदाता नहीं है। धर्म भी कुछ ऐसे ही है। ऋषियों ने दृष्टा भाव से इसे देखा और लिपिबद्ध किया। इसीलिए वेद को अनादि कहा गया। ऋग्वेद में धर्म शब्द का प्रयोग 56 बार हुआ है उसके पहले इसे ऋत कहते थे। मनु महाराज ने धर्म के 10 लक्षण कहे-

धृति क्षमा दमो अस्तेय
शौतमिन्द्रिय निग्रहः
धीर्विद्या सत्यम अक्रोधो
दशकम् धर्म लक्षणम्

याज्ञवल्क्य ने धर्म के 9 लक्षण बताए-

दानं दमो दया शान्तिः
सर्वेषां धर्मसाधनम्।।

(याज्ञवल्क्य स्मृति १.१२२)

लेखक भारत संस्कृति न्यास के वैचारिक परिषद के सदस्य हैं। उत्तर प्रदेश स्वास्थ्य सेवा में कार्यरत रहते हुए सनातन संस्कृति के लिए लेखन और चिंतन में रत हैं।

अर्थात 'अहिंसा, सत्य, चोरी न करना (अस्तेय), शौच (स्वच्छता), इन्द्रिय-निग्रह (इन्द्रियों को वश में रखना), दान, संयम (दम), दया एवं शान्ति– धर्म के ये नौ लक्षण है।'

विदुर जी महाराज ने धर्म के आठ लक्षण कहे। यज्ञ अध्ययन दान तप सत्य क्षमा दया निर्लोभिता।

प्रथम चार का तो कोई भी दम्भ पूर्वक दिखावा कर सकता है अंतिम चार का महात्माओं के जीवन में ही प्रकृटी कारण होता है

श्रीमद् भागवत गीता में दैवी गुणों की चर्चा करते हुए भगवान स्वयं धर्म के लक्षणों की चर्चा करते हैं। अभय, अंतःकरण की पूर्ण निर्मलता, तत्व ज्ञान के लिए ध्यान योग में दृढ़ स्थिति, सात्विक दान, इंद्रियों का दमन,यज्ञ, स्वाध्याय, तप, शरीर तथा इंद्रियों सहित अंतःकरण की सरलता, अहिंसा, सत्य अक्रोध त्याग शांति किसी की भी निंदा न करना, सब प्राणियों में हेतु रहित दया, इंद्रियों का विषयों के साथ संजोग होने पर भी उसमें आसक्ति का न होना, कोमलता शास्त्र के विरुद्ध आचरण में लज्जा, व्यर्थ की चेष्ठाओं का अभाव,तेज क्षमा, धैर्य, बाहर की शुद्धि, किसी में भी शत्रु भाव का न होना, अपने में पूज्यता के अभियान का अभाव, इन सबको दैवी गुण यानी ईश्वर का गुण कहा है। यह सब धर्म के लक्षण ही हैं। यानी यह लक्षण जहां उपस्थित है वहां धर्म उपस्थित है।

लंका कांड में विभीषण को समझाते हुए प्रभु श्री राम कहते हैं,

सौरज धीरज तेहि रथ ढाका, सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका।
बल विवेक दम परहित घोरे, क्षमा कृपा समता रजु जोरे।।
ईस भजनु सारथी सुजाना, विरति चर्म संतोष कृपाना।
दान परसु बुधि शक्ति प्रचंडा, बर विज्ञान कठिन कोदंडा।।
अमल अचल मन त्रोन समाना, सम जम नियम सिलीमुख नाना।
कवच अभेद बिप्र गुरु पूजा, एहि सम विजय उपाय न दूजा।।
सखा धर्ममय अस रथ जाके, जीतन कहं न कतहुं रिपु ताके।।

इस प्रकार गीता में धर्म के 26 लक्षण रामचरितमानस में धर्म के 30 लक्षण बताए गए हैं। यह धर्म के लक्षण ही हैं इन्हीं के आधार पर जीवन का संग्राम जीतना है।

युधिष्ठिर ने धर्म के पांच पैर कहे। अहिंसा समता शांति दया अमत्सर। भागवत के प्रथम स्कंध के 24 में श्लोक में परीक्षित ने कहा कि हे धर्मदेव , सतयुग में आपके चार चरण थे। तप पवित्रता दया और सत्य। आपके तीन चरण नष्ट हो गए, गर्व आसक्ति मद के कारण केवल एक पैर बचा है सत्य।

इन लक्षणों को अपने जीवन से प्रकट करने वाले जिस मात्रा में कम होते जाएंगे, उसी अनुपात में धर्म पर संकट आता जाएगा। कोई वाह्य कारक हिंदू धर्म पर आंच नहीं ला सकता। मूल प्रश्न यह है कि हम हिंदू हैं किंतु इसके परंपराओं के प्रति, इनके मान्यताओं के प्रति हमारे अंतरमन में कितनी भक्ति है।

पूर्व काल में भी धर्म को खतरा गर्व आसक्ति और मद से था और जब जीवन का आधार ही गर्व आसक्ति मद और और प्रपंच हों तो सनातन के पतन का कारण अन्य स्थानों पर क्या खोजना

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनःप्रतिकूलानि परेशान न समाचरेत।।

ऋषियों ने व्यवस्था दी सत्यम् बद् धर्मं चर्। हमने धर्मं बद् बना दिया। हम धर्म प्रवचन करने में धर्म की सार्थकता खोजने लगे। धर्म आधारित जीवन खड़ा करना धर्म को या सनातन को बचाने का एकमेव मार्ग है।

धर्म का सर्वस्व जिसमें समाया हो,ऐसे धर्म का सार सुनिए और सुनकर ह्रदय में उतारिए कि, अपनी आत्मा को जो दुखदाई लगे वैसा आचरण दूसरों के साथ मत करिए।

औद्योगिक क्रांति के बाद भारतीय युवकों में एक हीनता की ग्रंथि आयी कि जो कुछ भी अच्छा है वह पश्चिम में है। उनकी हीनता को दूर करने के लिए हमारे बीच महापुरुष आए। उन्होंने वेदों के सच को हमारे सामने रखा। विवेकानंद दयानंद अनेक महान व्यक्तियों ने युवाओं में आत्म सम्मान की भावना भरी, किंतु आज कैसा परिदृश्य है सामान्य युवा अपने धर्म के प्रति कितने उपेक्षा के भाव से भरा हुआ है। प्रत्येक संस्कार को हमने फोटो खींचने के तमाशे के रूप में खड़ा कर दिया है। 16 संस्कार में जो एक दो बचे हुए हैं वह पार्टियों और तमाशो में बदलती जा रही हैं अब यज्ञोपवीत और विवाह नहीं हो रहे पार्टियां हो रही हैं और हम सनातन के कमजोर होने का कारण इस इसाइयत और इस्लाम में खोज रहे हैं। नैतिक जीवन की प्रतिष्ठा, परोपकार और मानववाद सनातन धर्म की मूल मान्यतायें हैं। हमारे वेदों, पुराणों और धर्मशास्त्रों में समस्त मानव को एक साथ गमन और आगमन करने, एक सा ह्रदय और समान मन रखने तथा सह अस्तित्व की भावना के साथ संसार को संगठित कर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया है। मानव जीवन की प्रतिष्ठा और सम्मान सनातन का प्राणतत्व है। यहाँ बिना भेदभाव के सभी के कल्याण की बात की गयी है। बृहदारण्यकोपनिषद में कामना की गयी है -

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामया :
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चित दुःख भाग्भवेत

अर्थात सभी मानव सुखी हों, निरोग हों। सभी लोग अच्छी घटनाओं के साक्षी बने तथा किसी को किसी प्रकार के दुःख का भागी न बनना पड़े। सच्चे सनातनी का ह्रदय मक्खन के समान नहीं होता क्योंकि मक्खन स्वयं अपने ताप से द्रवित हो जाता है जबकि सनातनी व्यक्ति दूसरों के दुःख से द्रवित होता है, अपने दुःख से नहीं। सनातन धर्म एवं दर्शन मानव को मानव से जोड़ने में विश्वास करता है क्योंकि प्रत्येक मानव मे एक ही ईश्वर का वास है। ईश्वर ही समस्त जगत का रचयिता, पालनहार तथा संहारकर्ता है। सृष्टि के समस्त मानव उसी की कृति हैं। अतः मानव सेवा ही

भगवान की सेवा है। सनातन धर्म की यह अवधारणा उसे मानव समानता की ओर ले जाती है जहां प्रत्येक व्यक्ति जन्मना समान है और केवल अपने गुण और कर्म के कारण ही वह पूज्यनीय या निंदनीय होता है। सनातन धर्म वैचारिक रूप से समन्वयवादी है तथा अनेकता में एकता का प्रतीक है। यह धर्म एकेश्वरवादी होने के साथ साथ सर्वेश्वरवादी भी है। इसमें शैव मतावलम्बी हैं तो वैष्णव भी है ; इसमें शाक्त हैं तो तांत्रिक भी है। इसमें ज्ञान,भक्ति और कर्म तीनों का अद्भुत समन्वय है। यहाँ कर्मयोग और कर्म संन्यास दोनों का वर्णन है। कोई भी व्यक्ति उपरोक्त मार्गों में से चाहे जिस मार्ग को चुन सकता है। इसीलिये यवन, शक, कुषाण, हूण,तुर्क, मुग़ल,और अंग्रेजों जैसे बाह्य आक्रमणकारियों को झेलते हुए भी सनातन धर्म निरंतर प्रवाहमान है और आज देश विदेश मे अपनी ख्याति फैला रहा है। स्वामी विवेकानंद ने वेदांत की मानववादी व्याख्या की है और कहा है कि मानव सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है। नर सेवा ही वास्तव में नारायण सेवा है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में मात्र एक चौपाई में सनातन धर्म की सुन्दर व्याख्या कर दी है। वे कहते हैं कि कीर्ति, यश और धन वही अच्छा है जो गंगा के समान सबका हित करने वाला हो-

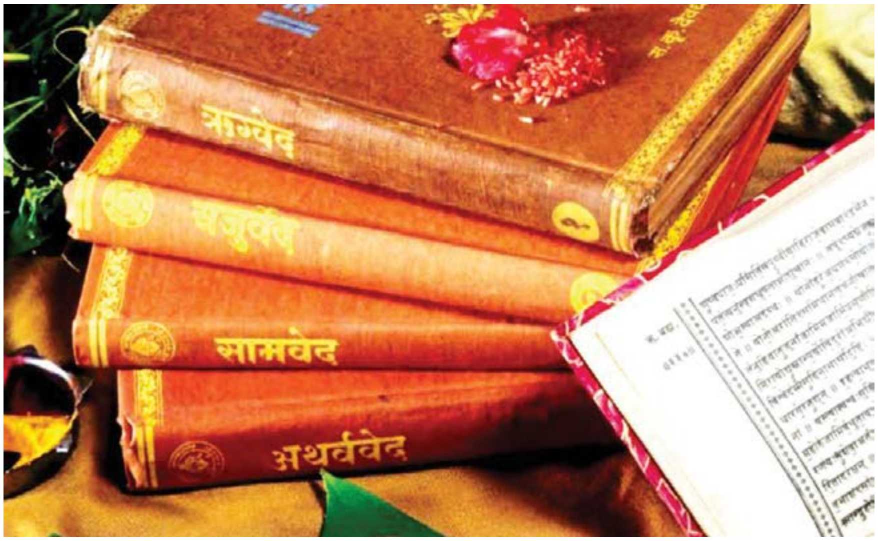

कीरति भनिति भूति भलि सोई,
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।

तुलसीदास जी आगे लिखते हैं कि दूसरों के उपकार जैसा कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा पहुँचाना ही सबसे बड़ा अधर्म है -

परहित सरिस धरम नहिं भाई,
पर पीड़ा सम नहिं अघमाई।।

जिनका मन परोपकार में लगा रहता है उनके लिए इस जगत में कुछ भी दुर्लभ नहीं है -

परहित बस जिनके मन माहीं,
तिन्हहीं न कछु दुर्लभ जग माही।।

सनातन धर्म में मानववाद वैदिक काल से ही मन्त्रों, सुक्तों, ऋचाओं के रूप में वेदचतुष्टय, उपनिषदों और आरयणकों में प्रतिपादित है। वैदिक मन्त्रों के मूल में सर्वोभ्युदय, लोकसंग्रह, विश्वबंधुत्व की भावना ही निगूढ़ है जो मानववाद का आधारस्तम्भ है। सनातन धर्म में मानववादी विचारधारा का चरमोत्कर्ष महाभारत में वर्णित राजा रंतिदेव की कथा में परिलक्षित होता है। राजा रंतिदेव के साम्राज्य मे एक बार अकाल पड़ गया तथा जनता भूख से तड़पने लगी। राजा ने अपना सारा खजाना जनता में बाँट दिया किन्तु अकाल का समय बढ़ता ही गया और अंततः जनता भूखों मरने लगी। राजा रंतिदेव बहुत दुःखी हुए और नैतिक उत्तरदायित्व लेते हुए वे अपना सिंहासन छोड़ कर जंगल में प्रायश्चित करने चले गए। इस बीच भगवान प्रकट हुए और उनसे बर मांगने को कहा तो राजा रंतिदेव ने कहा - ' न तु अहं कामये राज्यम् न स्वर्गम न पुनरभवं, कामये दुखतप्तानाम प्राणिनाम आर्तिनाशनम ' (हे भगवन! न तो मुझे राज्य पाने की लालसा है, न ही स्वर्ग या मोक्ष चाहता हूँ, मैं तो दुखों से तड़पती अपनी जनता के कष्टों का निवारण चाहता हूँ)। राजा रंतिदेव का यह कथन सच्चे अर्थो में राजधर्म का सर्वोच्च प्रतिमान प्रस्तुत करता है।सनातन धर्म में मानव सेवा ही राजा का परम धर्म माना गया है। चाणक्य ने अर्थशास्त्र मे लिखा कि- ' प्रजा सुखे सुखम राज्ञः (प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है)।' तुलसीदास ने रामचरितमानस में कहा है कि जिस राजा के राज्य में प्रजा कष्ट में रहती है वाह अवश्य ही नरक में जाता है - ' जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवसि नरक अधिकारी।' वस्तुतः सनातन धर्म एक मानव कल्याण केंद्रित आध्यात्मिक परंपरा है जो सम्पूर्ण विश्व को अपना परिवार मानती है,जहाँ युद्ध की नहीं शांति की बात की जाती है, जहाँ भोग की नहीं त्याग की बात की जाती है और जहाँ रावणराज्य की नहीं रामराज्य की बात की जाती है। सनातन धर्म में रामराज्य एक ऐसा राज्य होगा जहाँ कोई दरिद्र नहीं होगा, जहाँ कोई मानव दैहिक, दैविक और भौतिक दुखों से पीड़ित नहीं होगा, कोई मूर्ख और कुलक्षणी नहीं होगा, जहाँ सभी लोग आपस में प्रेम और साहचर्य से काम करते हुए नैतिक जीवन व्यतीत करते हैं। जहाँ ऐसे धर्मपारायण लोग रहते हैं,ब्रह्माण्ड के ऐसे भूखंड का नाम ही भारत है और वहाँ की संतति भारती कहलाती है, जो स्वर्ग से भी सुन्दर है और जहाँ देवता भी जन्म लेने के लिए लालायित रहते हैं -

गायन्ति देवा: किल गीतकानि
धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे। स्वर्गापवर्गास्पदमार्गेभूते
भंवन्ति भूयः पुरुष : सुरत्वात।।

।। इति।।

आधार आलेख

धर्म का आत्मसंघर्ष

डॉ. प्रमोदकुमार दुबे

> अविद्या से भौतिक सुख-समृद्धि मिलती है। भौतिक समृद्धि का कारक अर्थ तंत्र है। अर्थतंत्र को फलित करने के लिए विकास, सुरक्षा, संसाधन, श्रमनियोजन, उत्पादन, वाणिज्य प्रबंधन आदि आवश्यक है। इन सभी कार्यों की व्यवस्था राज्य करता है। इसीलिए राज्य को अर्थ मूल कहा गया- अर्थस्य मूलं राज्यम्।।3।। (चाणक्य-सूत्र)। राज्य व्यवस्था पार्थिव सुख के लिए होती है। राज्य का आधार त्रिवर्ग है। त्रिवर्ग बनता है धर्म, अर्थ और काम से।

लेखक प्रख्यात सनातन चिंतक और भारतविद् हैं। श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन से अबतक राष्ट्र जागरण के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं।

रामकुटी, सी-3115 ग्रीनफील्ड कालोनी, फरीदाबाद- 121010, फोन-8368930736, 9810780771

ईशावासोपनिषद ने विद्या और अविद्या दोनों को उभय रूप से उपासने का आदेश दिया है।

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयः सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ।।11।।

आध्यात्मिक ज्ञान को विद्या कहा गया और भौतिक ज्ञान को अविद्या। अविद्या से भौतिक साधन अर्जित कर मृत्युदायी अभावों को पार करने का परामर्श दिया गया और विद्या से अमरता प्राप्त करने का परामर्श। ये दोनों ज्ञान धाराएँ एक- दूसरे की पूरक हैं, परस्पर विपरीत और विरोधी नहीं।

अविद्या से भौतिक सुख-समृद्धि मिलती है। भौतिक समृद्धि का कारक अर्थ तंत्र है। अर्थतंत्र

को फलित करने के लिए विकास, सुरक्षा, संसाधन, श्रमनियोजन, उत्पादन, वाणिज्य प्रबंधन आदि आवश्यक है। इन सभी कार्यों की व्यवस्था राज्य करता है। इसीलिए राज्य को अर्थ मूल कहा गया- अर्थस्य मूलं राज्यम्।।3।। (चाणक्य-सूत्र)। राज्य व्यवस्था पार्थिव सुख के लिए होती है। राज्य का आधार त्रिवर्ग है। त्रिवर्ग बनता है धर्म, अर्थ और काम से। इसके मूल में त्रयी है। त्रयी वेद है।

मुण्डकोपनिषद ने वेदों और षड्शास्त्रों को अपरा विद्या कहा है-

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो अथर्ववेदः .... ।।5।।

(खं.1, मुं.1)।

जिस विद्या से उस अक्षर परमात्मा का ज्ञान होता है वह परा विद्या है- अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते (वही)। ईशावास्य ने जिस ज्ञान को विद्या कहा, उसे ही मुण्डक ने परा विद्या कहा और जिस ज्ञान को ईशावास्य ने अविद्या कहा, उसे ही मुण्डक ने अपरा विद्या कहा। वेद त्रयी से धर्म, अर्थ और काम का त्रिवर्ग निसृत हुआ है। त्रिवर्ग पर राजसत्ता आधारित है, जिसका उद्देश्य पार्थिव सुख है। त्रिवर्ग के प्रथम अंग धर्म को सुख का मूल कहा गया है- सुखस्यमूलं धर्मः ।।3।। (चाणक्य सूत्र)। वस्तुतः धर्म भौतिक और आध्यात्मिक प्रवृत्तियों के मध्य का सेतु है। यही त्रिगुण के पार विद्या की ओर प्रवृत्त कर अमृत की प्राप्ति करवाता है। धर्म ही लोक को धारण करता है- धर्मेण धार्यते लोकः ।।234।। (चा.सू.), धर्म की ग्लानि से लोक संत्रस्त होता है। विद्या की उपासना से धर्म की स्थापना होती है। विद्या एकात्म दृष्टि देती है, जिससे प्राणिमात्र के प्रति दया उत्पन्न होती है। दया ही धर्म की जन्मभूमि है- दया धर्मस्य जन्मभूमिः ।।236।। (चा.सू.)। दया से दाय और दायित्व बोध उत्पन्न होता है। यही धर्म में चरितार्थ होता है। दया रहम या मर्सी नहीं है, कर्तव्य की प्रेरक शक्ति है। यही कारण है कि विद्या उपासक लोक दायित्व का वहन करते हैं, लोक कल्याण में प्रवृत्त होते हैं।

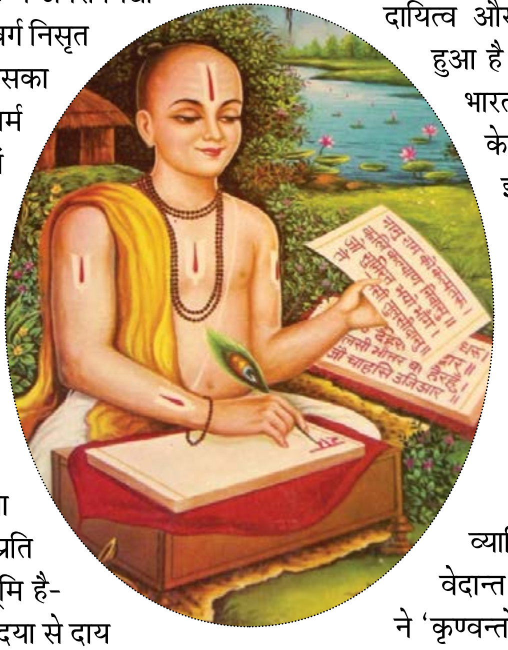

इतिहास साक्ष्य है कि अविद्याजन्य भौतिक समृद्धि और राज वैभव के लिए द्वन्द्व होता है, सुखभोग की लालसाएँ संघर्ष करती हैं। राजाओं में परस्पर युद्ध होता है और दुर्बल दशा में बाह्य शत्रुओं के आक्रमण से राष्ट्र पराधीन हो जाता है। जन जीवन के पोषक धन-साधन पर शत्रुओं का अधिकार हो जाता है। लेकिन, विद्याजन्य अमृत तत्त्व कभी पराधीन नहीं होता, कभी क्षरित नहीं होता। यह अक्षर ब्रह्म है। यह नित्य है। यही नित्य स्रोत नवीन का पुनर्सृजन करता है। यह ब्राह्मी सत्ता है। मुण्डकोपनिषद कहता है कि देवताओं से पूर्व सर्वप्रथम उत्पन्न विश्व सर्जक और त्रिभुवन के रक्षक ब्रह्मा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा को समस्त विद्याओं को प्रसूत करनेवाली ब्रह्मविद्या का उपदेश दिया -

ओम् ब्रह्मा देवानां प्रथमः सम्बभूव विश्वस्य कर्ता भुवनस्य गोप्ता।
स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रतिष्ठामथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह ।।1।।

(खं.1, मु.1)।

विद्या एवं अविद्या दोनों की उभय उपासना से व्यक्ति और राष्ट्रजीवन उभय रूपेण सर्वसमृद्ध, सशक्त, अजेय और पूर्णकाम होते हैं। जब जब भारत पर दुर्दिन की काली घटाएँ छायीं, अविद्यजन्य भौतिक समृद्धि पराधीन हुई, विद्याजन्य अमृत के उपासक वितराग महात्माओं ने राष्ट्ररक्षा का दायित्व वहन किया, शत्रुओं से सतत संघर्ष किया। नाथों, संतों, नागाओं, संन्यासियों, वैरागियों, सिक्खों के शौर्य-पराक्रम, बलिदान की गौरव गाथा अत्यंत उज्ज्वल और गरिमाशाली है। यह इतिहास धर्म केन्द्रित है। इस इतिहास में विद्याजन्य लोक दायित्व और दया प्रसूत धर्म का शौर्य-पराक्रम प्रकट हुआ है। यह इतिहास केवल राज्य केन्द्रित नहीं है। भारत की आध्यात्मिक संस्थाएँ राष्ट्र और विश्व के हितार्थ कार्यरत रही हैं। इनके योगदान का इतिहास राजाओं के इतिहास से भी व्यापक है। अध्यात्म की कोई भौगोलिक सीमा नहीं होती। सुबुद्ध राजाओं ने भी राजर्षियों का आदर्श अपनाया। उन्होंने आध्यात्मिक सत्ता की संगति में प्रजा पालन और राष्ट्र रक्षा का दायित्व निभाया। इस कथन के पक्ष में अनेक काल खण्डों के साक्ष्य मिलेंगे।

वर्तमान काल में अध्यात्म की विश्व व्याप्ति का एक उदाहरण स्कॉन का भक्ति-वेदान्त आन्दोलन है। पूर्व काल में वैदिक ऋषियों ने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' और 'श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः' के वैश्विक अभियान चलाए थे। विश्व कल्याणार्थ आरोग्य, योग, ज्ञान-विज्ञान, कला, संगीत और अध्यात्म इत्यादि अनेक क्षेत्रों में कार्य हुए थे। भारत के आर्थिक इतिहास से ज्ञात होता है कि विश्व भर में भारत का वाणिज्य फैला हुआ था, कई भूखण्डों में भारतीय मूल के राजा प्रजापालन कर रहे थे। भारत की वैश्विक भूमिका नई नहीं है।

जब भारत अँग्रेजों की पराधीनता के अन्धकार डूब हुआ था, भारत की वैश्विक गरिमा और तेजस्विता धूमिल हो गई थी, 19 वीं शताब्दी के मध्य स्वामी रामकृष्ण परमहंस के प्रथम तपस्या काल 1856 से 1859 तक चार वर्षों की अवधि में आविर्भूत आध्यात्मिक शक्ति का बाह्य प्रभाव दिखाई पड़ा। इसी अवधि के मध्य 1857 में राष्ट्र व्यापी प्रथम स्वाधीनता संग्राम की अजेय चेतना प्रत्यक्ष हुई और 19 वीं शताब्दी के ही अन्तिम दशक 1893 में स्वामी विवेकानंद ने विश्व के सम्मुख भारतीय अध्यात्म का प्रखर स्वरूप प्रकट किया। तबसे

न अँग्रेज के विरुद्ध स्वाधीनता का संघर्ष थमा और न अध्यात्म का वैश्विक अभियान रुका।

भारत की अनेक आध्यात्मिक संस्थाओं ने विश्व मानवता के आत्मोत्थान हेतु विभिन्न क्षेत्रों में श्रेयस्कर कार्य आरंभ किए, जो अविराम चल रहे हैं। भारत में अनेक शताब्दियों से आक्रांताओं के विरुद्ध रक्षात्मक संघर्ष और रचनात्मक कार्य दोनों ही मोर्चों पर अध्यात्म ने निरंतर योगदान दिया है। सच ही कह गया है- 'परमारथ के कारने साधुन धरा सरीर'। साधु समाज के योगदान का वर्णन शब्दों में नहीं समा सकता। मुगलों और अँग्रेजों की बर्बरता के विरुद्ध धर्म रक्षा और स्वाधीनता के संघर्ष में कदम- कदम पर आध्यात्मिक पुरुषों का योगदान है।

स्वतंत्रोत्तर भारत में भी सर्वहितकारी धर्म का संघर्ष निरंतरमान रहा। धर्मसम्राट करपात्री की रामराज्य परिषद और गोहत्या बंदी के आन्दोलन की करुण कथा सुन-जानकर प्रतीत होता है कि स्वतंत्रोत्तर भारत अपनी पूर्ण स्वतंत्रता के लिए आज भी संघर्ष कर रहा है। इसी क्रम में श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति अभियान को भी देखना चाहिए और याद रखना चाहिए कि बाबर की बर्बरता के विरुद्ध भारत की आध्यात्मिक चेतना से सम्पन्न शौर्य-पराक्रम ने सतत संघर्ष किया। नागाओं के अखाड़े, सिक्खों की सेना और अयोध्या के संत योद्धाओं की छावनियाँ सतत लक्ष्य संधान में तत्पर रहीं। अन्ततः पाँच सौ वर्ष बाद उनका ध्येय साकार हुआ।

भारत के राजेतिहास की पृष्ठभूमि में आदि युग से सर्वतंत्र स्वतंत्र आध्यात्मिक चेतना सक्रिय भूमिका निभाती रही है। अखिल भारतीय भक्ति आन्दोलन के विषय में यह भ्रान्त धारणा है कि 'जब मुस्लिम साम्राज्य दूर तक स्थापित हो गया, तब परस्पर लड़नेवाले स्वतंत्र राज्य भी नहीं रह गए। इतने भारी राजनीतिक उलटफेर के पीछे हिन्दू जनसमुदाय पर बहुत दिनों तक उदासी छाई रही। अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था?' (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पूर्वमध्यकाल- भक्तिकाल, पृ.39)। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने सहस्रों वर्ष पूर्व से निरंतरमान बौद्धिक इतिहास का साक्ष्य प्रस्तुत कर केवल आचार्य शुक्ल की भ्रान्त धारणा 'हारे को हरिनाम' का खण्डन ही नहीं किया है, प्रोफेसर हेवेल की पुस्तक हिस्ट्री ऑफ आर्यन रूल के कथन- 'मुसलमानी सत्ता के प्रतिष्ठित होते ही हिन्दू राजकाज से अलग कर दिए गए। इसीलिए दुनिया के झंझटों से छुट्टी मिलते ही उनमें धर्म की ओर, जो उनके लिए एकमात्र आश्रय स्थल रह गया था, स्वाभाविक आकर्षण पैदा हुआ' को भी गलत व्याख्या कहा (हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृ.25.)। उन्होंने भक्तों की परंपरा के ऐतिहासिक क्रम का उल्लेख करते हुए भक्ति की अचानक उत्पत्ति मानने वाले डॉ. ग्रियर्सन के कथन-'बिजली की चमक के समान अचानक इस समस्त पुराने धार्मिक मतों के अन्धकार के ऊपर एक नई बात दिखाई दी। कोई हिन्दू यह नहीं जानता कि यह बात कहाँ से आई और कोई भी इसके प्रादुर्भाव का काल निश्चित नहीं कर सकता' का भी खण्डन किया और ग्रियर्सन की कुत्सित मानसिकता को उजागर करते हुए लिखा- 'स्वयं डॉ. ग्रियर्सन का अनुमान है कि यह (भक्ति) ईसाइयत की देन है। पर यह बात अत्यंत उपहासास्पद है और यह कहना तो और ही उपहासास्पद है कि जब मुसलमान हिन्दू मंदिरों को नष्ट करने लगे, तो निराश होकर हिन्दू लोग भजन भाव में जुट गए' (वही, पृ. 52-53)।

आचार्य द्विवेदी के बाद हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में मार्क्सवादी आलोचकों का आगमन हुआ। उन्होंने आचार्य द्विवेदी के ऐतिहासिक विश्लेषण से प्राप्त तथ्यों और प्रतिपादनों को अपने खास उद्देश्यों के लिए मनमाना उपयोग किया। मार्क्सवादी आलोचना राजसत्ता केन्द्रित है। वह राज्य व्यवस्था पर आधिकार चाहती है, इसके लिए वर्ग भेद और वर्गसंघर्ष की रचना करती है और अध्यात्म को बाधक मानकर अपमानित करती है, उसे सामंती शोषण की ढाल और परजीवी बताती है। इसी विघटनकारी विचार का दुष्परिणाम है कि वर्तमान राजनीति में वोट बैंक के लोभ से धर्म के विरुद्ध नेता को अनर्गल तर्क के साथ बोलने का अवसर मिल गया है। धर्म को भ्रामक, संक्रीण, विघटनकारी, भौतिक उन्नति में बाधक, सामाजिक व्याधि आदि बताने के पीछे अयोध्या आन्दोलन में बाबरी बर्बरता के विरुद्ध रामभक्तों की इच्छा शक्ति का प्रकटीकरण और राष्ट्रवादी राजनीतिक चेतना की जागृति है। मार्क्सवादी आलोचक और विश्वविद्यालयों में युवा विद्यार्थियों का मानस तैयार करनेवाले प्रोफेसर भक्ति साहित्य के पठन-पाठन के विरुद्ध हैं। वे लोग भक्ति साहित्य को मध्य कालीन साहित्य बताते हैं और मध्यकाल को पतनशील युग। उनकी दृष्टि में आधुनिकयुग ही श्रेष्ठ है। एक मार्क्सवादी आलोचक का तर्क है कि 'आधुनिक युग में जीवविज्ञान, इतिहास, और मनोविज्ञान के क्षेत्र में डार्विन, मार्क्स, फ्रायड आदि विचारकों ने चिन्तन का नया पाराडाइम हमारे सामने उपस्थित किया, जिसने सारी दुनिया में मध्ययुगीन ढाँचे को तोड़ने में हमारी मदद की। सोच के नए दृष्टिकोण में इतिहास और विज्ञान को महत्त्व दिया गया' (नित्यानंद तिवारी, मध्यकालीन साहित्य पुनरवलोकन, पृ. 10)।

मार्क्सवादी आलोचक ध्यान नहीं देते कि यूरोप का मध्ययुग अन्धकारमय है और भारत के भक्ति साहित्य का मध्ययुग आर्थिक रूप से संपन्न है और ये जिस आधुनिक काल की बखान करते हैं, वह भारत के आर्थिक पतन का काल ही नहीं है, बौधिक पराभव का भी काल है। यह पश्चिमी शिक्षा, अँग्रजी भाषा, डार्विन, मार्क्स, एडम स्मिथ, फ्रायड, न्यूटन इत्यादि के पीछे- पीछे चलनेवाले बुद्धिजीवियों का काल है।

इन्हें कहने में संकोच होता है कि आर्थिक समृद्धि के कारण ही विदेशी दरिद्र आक्रांता भारत पर हमले कर रहे थे। हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्ति साहित्य का मध्ययुग 1400 ई. से 1650 ई. तक माना जाता है। विश्व के आर्थिक इतिहास के अद्यतन तथ्यों के समानान्तर भारतीय मध्ययुग की आर्थिक स्थिति देखना चाहिए। अद्यतन आर्थिक तथ्यों के अनुसार ईसा की पहली शताब्दी से 1000 ई. तक हिन्दू राजाओं के काल में भारत का सकल घरेलू आय 34% थी। यह विश्व के आर्थिक इतिहाल में सर्वाधिक सकल घरेलू आय है। इस आर्थिक विवरण के साथ यह भी उधृत किया गया है कि यह आर्थिक समृद्धि भारत ने बिना किसी शोषण- दमन के अर्जित की थी। मुस्लिम आक्रांताओं के उत्पात के कारण 1700 ई. तक यह आय घट कर 24.5 % हो गई। अँग्रेजों ने 1757 से 1800 तक भारत का आय लूट कर 20 % कर दिया। तब भी अँग्रेज की भूख शांत नहीं हुई, उसकी बर्बर लूट का सिलसिला जारी रहा। उसने 1830 तक भारत की आय 17% कर दिया और 1900 ई. आते- आते भारत को कंगाल बना दिया, तब भारत की सकल घरेलू आय 1.7 % तक रह गया।

इस विवरण से ज्ञात होता है कि 14 वीं से 17वीं शताब्दी तक भक्ति साहित्य के मध्ययुग में भारत की सकल घरेलू आय 24.5 % थी। आर्थिक इतिहास के आधार पर यह विश्लेषण गलत है कि दरिद्र मुस्लिम आक्रांताओं के आगे हिन्दुओं का प्रभुत्व समाप्त हो गया था।

मार्क्सवादी आलोचकों की तुलना में अधिक स्पष्ट इतिहास दृष्टि 'हिन्दू मैनर, कस्टम, एण्ड सेरेमनी' पुस्तक के लेखक फ्रांसीसी पादरी अब्बे डुबोज की है जो यह मानता है कि 'हिन्दुओं की व्यवस्था हजारों वर्ष की परीक्षा में भी सफल उतरी है और विश्व के इस भाग में उलटफेर तथा परिवर्तन के बाद भी चिरकाल से जीवित बनी रही।' पादरी डुबोज का आशय यह है कि विदेशी आक्रांताओं के कारण भारत की आर्थिक और सामाजिक स्थिति पर कोई गंभीर प्रभाव नहीं पड़ता था। वस्तुतः पादरी डुबोज भारत की शिक्षा और आध्यात्मिक परंपरा का समूल नाश करना चाहता था। इसी कार्य के लिए उसने 1792 से 1823 तक लगभग तीस वर्ष तमिलनाडु के ग्रामीण परिवेश में रहकर भारतीय समाज का अध्ययन किया था और वह अँग्रेजों को भारत के विध्वंस की योजना सौंप गया था। डुबोज के फ्रांस लौटने के बारह वर्ष बाद 1835 में उसके अध्ययन और योजनाओं को अपना अध्ययन तथा योजना बताकर टी.बी. मैकाले ने भारत के विध्वंस का कार्य आरंभ किया था। मैकाले की शिक्षा योजना से निकले हुए आधुनिक भारतीय शिक्षित लोग अँग्रेज की शिक्षा पाकर ही भारत के मध्ययुग को भी यूरोप के समान अन्धकार युग कहते हैं और इसके लिए क्षोभ व्यक्त करते है कि यूरोप की तरह हम क्यों नहीं हैं? यह हास्यास्पद स्थिति है। उन्हें समृद्ध भारत के ज्ञान-विज्ञान के इतिहास का पता नहीं है, भारत को लूटकर धनी हुए अँग्रेजों के ज्ञान-विज्ञान का पता है। इसी आधुनिक युग के अन्धकार में भारत के मार्क्सवादी बुद्धिजीवी हीनभावना से ग्रस्त होकर भारत-निन्दा करते रहते हैं।

अपने सभी पूज्यपाद आचार्यों और भक्तों के सामाजिक, राष्ट्रीय और वैश्विक योगदानों का इतिहास सहेजने में किसी समक्ष संस्था को भी वर्षों कार्य करना होगा, तब भी आवश्यक नहीं कि परमात्म सत्ता और जगत के मध्य की इस व्यक्ताव्यक्त सेतु के विषय में पूरी जानकारी प्राप्त हो जाए। हमारे आचार्य और भक्त ही विद्याजन्य अमृत को मर्त्यलोक से जोड़कर रखते है, जिससे सनातन धर्म जनजीवन में व्याप्त रहता है।

अपने संतों के संघर्ष का सार-संक्षेप विवरण कालक्रम से देखना चाहिए, इससे इतिहास के सापेक्ष अध्यात्म के राष्ट्रीय योगदान के इतिहास की एक झलक मिल सकती है। अखिल भारतीय भक्ति आन्दोलन की आधारशिला दर्शन है, दर्शन की ठोस पृष्ठभूमि पर भक्ति के लता-निकुञ्ज विकसित हुए हैं। दार्शनिक पृष्ठभूमि का निर्माण आद्यजगद्गुरु शंकराचार्य (788-820), रामानुजाचार्य(1037-1137), मध्वाचार्य(1238-1317), स्वामी रामानन्द(1299-1410) और वल्लभाचार्य (1477-1530) की कालावधियों में हुआ। इस कालखण्ड में अनेक भव्य मंदिरों का निर्माण हुआ। तब भारत भूमण्डल का एकमात्र स्वर्ग था।

भारत का वैभव पाने के लिए आक्रांता विधर्मी उद्विग्न रहते थे। भौतिक समृद्ध का सबसे बड़ा अन्तरिक शत्रु भोग विलास और अकर्मण्यता है। इस दुर्बलता से विमुक्ति के लिए दर्शन की आधारशिला आवश्यक थी। इन कालखण्डों में विद्याजन्य ज्ञान-वैराग्य, भक्ति के अनुशासन में अविद्याजन्य पराक्रम, वैभव- विलास रहता था। विजया नगरम् का साम्राज्य इसका एक उदाहरण है। इसके

आगे के कालखण्डों में भारत में जब विधर्मी शासन आया, विद्याजन्य अध्यात्म के अमृत से अविद्याजन्य मर्त्य भौतिक समृद्धि का संबन्ध टूटने लगा।

वैभवशाली भारत पर मुस्लिम आक्रंता बार-बार आक्रमण कर रहे थे। 5 वीं शताब्दी में निर्मित विश्वविख्यात नालंदा महाविहार को 1193 ई. में आततायी आक्रांत बख्तियार खिलजी ने जला दिया था। इस तरह के अनेक ध्वंस भारत में होने लगे थे। हिन्दुओं को धर्मास्था से विचलित कर उन्हें मुसलमान बनाने के दुष्ट प्रयास हो रहे थे। इस संकट काल में अखिल भारतीय भक्ति आन्दोलन ने अपनी सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्व का निर्वाह किया।

सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351) के अत्याचार से हिन्दू दहल उठे थे। तुगलक इस्लाम कबूलवाने के लिए हिन्दुओं को कत्ल कर रहा था। इस दुर्दिन में संतशिरोमणि नामदेव (1270-1350) धर्मास्था के रक्षार्थ हिन्दू समाज में अलख जगा रहे थे। तुगलक से उनका सामना हुआ। गुरुग्रंथ साहेब के साक्ष्य बताते हैं कि कुपित तुगलक ने नामदेव को बंदी बनाया और कहा- मुझे अपने राम की शक्ति दिखा दे, नहीं तो तुम्हें मार दूँगा-

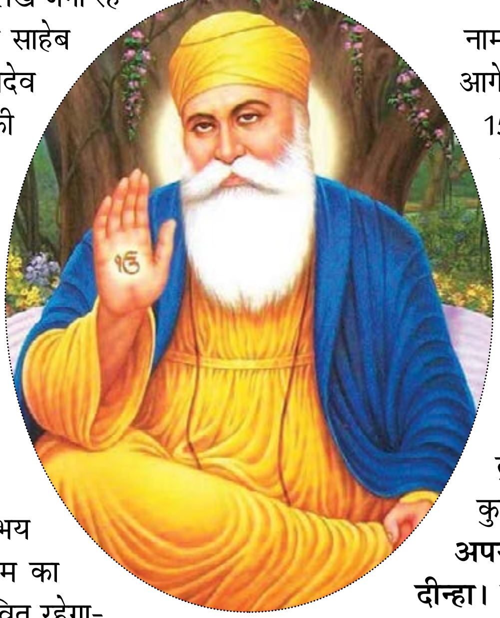

सुलतानु पूछे सुन बे नामा। देखहु राम तुम्हारे कामा ।।

नाम सुलताने बधिला। देखउ तेरे हरि बिठुला ।।

नामदेव ने कहा- **'मेरे कीआ कहु न होई। करिहै रामु होइ हैं सोई ।।'** मेरे करने कुछ नहीं होता, राम करते हैं, वही होता है।

नामदेव की माता अपने पुत्र की हत्या के भय से रोने लगीं। पुत्र मोह में उन्होंने कहा- राम का भजन छोड़ दे बेटा, खुदा का नाम ले, तू जीवित रहेगा- 'रुदन करे नामे की माइ। छोड़ रामु को भजहि खुदाइ।' नामदेव अडिग रहे। उन्होंने कहा- मैं तेरा पुत्र नहीं हूँ, न तू मेरी माँ है। जब तक इस देह पिण्ड में हूँ, हरि का ही गुणगान करूँगा- **'न हउ तेरा पुंतड़ा न तू मेरी माइ। पिंड पड़ै तउ हरिगुन गाइ ।।'** तुगलक ने नामदेव को कुचल कर मारने के लिए उनपर हाथी हँकवाया। हाथी नामदेव के सिर पर सूड़ से चोट कर पीछे हट गया- **'करै गजिंदु सुंड की चोट। नामा उबरे हरि की ओट ।।'** इस घटना को देखकर काजी- मुल्ले नामदेव को सलाम करने लगे और कहने लगे- इन हिन्दुओं ने हमारा मान मर्दन कर दिया- **'काजी मुला करे सलामु। इनि हिन्दू मेरा मलिया मान।।'** नामदेव का प्रण था कि गंगा- यमुना यदि उलटी बहने लगें, तब भी मैं हरि- हरि करता रहूँगा- **'गंग जमुन जउ उलटा बहे। तऊ नाम हरि करता रहे।।'** (ईमानवाले, लेखक- डॉ. के.पी. अग्रवाल, पृ.420-21 की सामग्री पर आधारित)।

नामदेव ने एक रचना में अपनी आस्था के आधार हरि की शक्ति और साम्राज्य का वर्णन किया है। जैसे कि भक्त प्रह्लाद ने नरसिंह का स्मरण किया हो। वस्तुतः उनका जीवन भी प्रह्लाद के समान ही संघर्षरत है। नामदेव ने सर्वसमर्थ उस केशव को स्मरण किया है जिसने सारे आकाश को श्रीयंत्र बनाया है और जो अग्निसोमात्मक सृष्टि की त्रिसप्त शक्ति संरचना में प्रविष्ट हो गया है- **'आउ कलंदर केसवा। करि अबदाली भेसवा। जिन आकस कुलहु सिरी कीनी, पउसै सपत पयाला।।'** (कृ.गो. वनखडे गुरुजी, संत नामदेव, पृ. 119)। नामदेव ने हरि की शक्ति का गहन वर्णन किया है। यही वह शक्ति है जो समय के सघन अन्धकार को चीर कर सनातन का मार्ग प्रशस्त करती है। भक्ति केवल भावना नहीं है, इसमें अपराजेय हरि की शक्ति है। दुर्दिन में भक्तों के हृदय से निकलकर इसी शक्ति ने हिन्दुओं की धर्मास्था रक्षित की।

नामदेव के संघर्ष को कबीर (1398-1518) ने आगे बढ़ाया। कबीर ने सिकंदर लोदी (1489-1517) का सामना किया। कबीर खुली चुनौती देते हुए कहते हैं- किताब छोड़ दो बाँवलो, तुम लोग भारी जुल्म कर रहे हो। कबीर ने राम का टेक पकड़ा है, उसके आगे तुर्कों को हारना ही है- **'छाड़ि कतेब राम भजु बाँउरे, जुल्म करत है भारी। कबीर पकरी टेक राम की तुरक रहे पचि हारी।'** गुरुग्रंथ साहेब के अनुसार इस्लाम विरोध के कारण तुर्कों ने कबीर को बाँधा और हाथी के पाँव तले कुचलवा कर मारने का प्रयास किया- **'किया अपराधु संत है कीन्हा। बाँधि पोट कूँजर कउ दीन्हा। कूँजर पोट लै लै नमस्कारैं। बूझी नहीं काजी अँधियारैं।।'** कबीर को तीन प्रकार से मारने के प्रयत्न हुए- हाथी से कुचलवा कर, अग्नि में जलाकर और गंगा में डुबो कर, (ईमानवाले, पृ. 418.)। कबीर ने सामान्य जनजीवन के धर्म भाव की रक्षा की। इस्लाम के विस्तार को रोकने में कबीर की सशक्त भूमिका है।

कबीर के उपरांत नानकदेव (1469-1538) बाबर के आगमन (1526) के समय हिन्दू धर्म के रक्षार्थ उपदेश किया करते थे। उन्होंने दुखी मन से इस्लाम के भय और अत्याचार का वर्णन किया है-

'इकना वखत खुवाई अहि इकन्हा पूजा जाइ।

चउके विणु हिन्दवाणिआ किउ टिके कदाहि नाइ।

राम न कबहु चेतओं हुणि कहाणि न मिले खुदाइ।'

मुसलमानों की नमाज के समय हिन्दुओं की पूजा बन्द हो गई थी। बिना स्नान, तिलक के हिन्दू समाज रह रहा था। जिन्होंने कभी राम

नाम की सुधि नहीं ली, उन्हें आज खुदा- खुदा कहकर भी इस्लाम के अत्याचारों से छुटकारा नहीं मिल रहा (वही, पृ. 360)।

नानक ने मुगल और पठानों के बीच हुए युद्ध के दुष्प्रभावों का उल्लेख किया है- 'मुगल पठाना भई लड़ाई रण महँ तेग बगाई। ओन्ही तुपक ताणि चलाई। ओन्ही हसती चढ़ाई। जिन्ह की चीरी दरगाह पाटी तिन्हा गरणा भाई।' पाठान और मुगल में भारी लड़ई हुई। रण में तलवारें खुल कर चलीं, मुगलों ने निशाना साध कर तोपें और बन्दूकें चलाई और पठानों ने हाथी हूल दिए। पर, हे भाई! जिसकी आयु की चिठ्टी यम के यहाँ फाड़ दी गई थी, उसका मरना निश्चित था, (वही, पृ. 360)। मारकाट वर्णन से नानक ने धर्महीन राजभोग के लोभियों की निकृष्टता उजागर किया है।

पानीपत की जंग (1526ई.) में जीतने के बाद बाबर की सल्तनत कायम हो गई। दो वर्ष बाद बाबर ने 1528ई. में अयोध्या का श्रीराम जन्मभूमि मंदिर तोड़ दिया। नानक के बाद गोस्वामी तुलसीदास (1532-1623) का आविर्भाव हुआ। तुलसीदास के विषय में बताने के लिए बहुधा विद्वान लोग इतिहासकार वेन्सेन्ट स्मिथ का कथन उधृत करते हैं। वेन्सेन्ट ने तुलसी को अपने युग का सर्वश्रेष्ठ महापुरुष बताया है। उसने तुलसी को अकबर से महान इसलिए कहा है कि तुलसी ने करोड़ों मानव हृदय पर अपनी रचनाओं द्वारा शाश्वत विजय प्राप्त की है। उसके सामने सम्राट अकबर की राजकीय विजय नगण्य है।

तुलसी के जन्म के चार वर्ष पूर्व श्रीराम जन्मभूमि मंदिर टूट चुका था। इसकी घनीभूत पीड़ा से तुलसी ने श्रीरामचरितमानस सृजित कर लोकमानस में श्रीराम का शाश्वत साम्राज्य बनाया। वह लोकवेद जनमन में प्रतिष्ठित हुआ और फलिभूत होने लगा। उसका प्रतिफल हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि लोक मानस से निसृत हो पुनः अयोध्या में श्रीराम लल्ला अपने भव्य मंदिर में विराजमान हो गए हैं। श्रीरामचरित मानस स्वयं चैतन्य है, सबके दुख-सुख में सम्मिलित और सक्रिय।

तुलसी की दृष्टि में सारा जगत सियाराममय है- सियाराम मय सब जग जानी। करउ प्रणाम जोरि जुग पानी।। तुलसी ने अपने युग के संत्रासों को आत्मभाव से देखा और मर्माहत हो गए। उन्होंने लिखा है-

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि,
बनिक को न बनिज न चाकर को चाकरी।
जीविका विहीन लोग सीधमान सोच बस,
कहै एक- एकन सौं- कहाँ जाइ का करीं ।।

उन्होंने विधर्मी शासन को कलियुग कहा, श्रीराम को ही कलियुग की एकमात्र औषधि बताया और लोक मानस में रामराज्य की कामना स्थापित की। यह अकारण नहीं है कि तुलसी की कामना की कड़ी में कड़ियाँ जुड़ती चली गईं । उनके जीवन काल में ही 1608 ई. में ठीक रामनवमी के दिन श्रीसमर्थ रामदास का आविर्भाव हुआ और उनके आलोक में शिवाजी अग्रसर हुए, रामराज्य का सजीव उदाहरण भारत भूमि पर प्रकट हुआ।

साहित्य सृजन के क्षेत्र में भी तुलसी की मनोधारा निरंतरमान है। जिस अकबरी काल को तुलसी ने कलियुग कहा था, उसी कलियुग को महाकवि भूषण ने औरंगजेब की हरकतों में देखा- कलियुग के समुद्र में अधर्म की उत्ताल तरंगें उठ रही हैं, जिसमें लाखों मलेच्छ कच्छ-मच्छ और मगर समूह हैं-

कलियुग जलधि अपार उद्ध अधरम्म उर्मिमय।
लच्छिनि लच्छ मलिच्छ अरु कच्छ मगरचय ।।58।।

(शिवराज भूषण)।

कलियुग की प्रतिमूर्ति मानकर भूषण ने औरंगजेब और उनके सहयोगियों को अंग-प्रत्यंग के रूप में वर्णन किया-

यहि रूप अवनि अवतार धरि जेहि जालिम जग डंडियव।... कलियुग सोई खल खंडियव ।।59।।

(शिवराज भूषण)।

महाकवि भूषण में तुलसी निरंतरमान हैं, तुलसी में नानक, कबीर, नामदेव के लोक दायित्व निरंतरमान हैं। भूषण से आगे अँग्रेजी राज के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम के प्रेरक कवियों में भूषण और तुलसी की काव्य चेतना को देखा जा सकता है। महाकवि निराला इसके उदाहरण हैं।

अध्यात्म अमृत है। अध्यात्म का राष्ट्रीय योगदान विद्योपासकों के अमृततत्त्व का लौकिक अवघटन है। भौतिक इतिहास में विमुग्ध लोग अध्यात्म के योगदान को देखें नहीं, आँखें मूँद लें, संतों-महात्माओं को समाज निरपेक्ष बता दें, इससे क्या अध्यात्म की निरंतरमान भूमिका ठहर जाएगी? अविद्याजन्य भौतिक समृद्धि मृत हो जाती है, यदि उसे विद्या निसृत अमृत का पावन प्रसाद न मिले।

आलेख

विश्व को दिशा देगा संस्कृति संसद काशी का संकल्प

डॉ. धर्मेंद्र सिंह

काशी ने सदा से ही विश्व को दिशा दी है। सनातन जीवन संस्कृति की इस आधारभूमि के कण कण में जीवन का संदेश है। यही संदेश विश्व को नियोजित करने की क्षमता रखता है। ऐसा सदियों से होता आ रहा है और आगे भी होता रहेगा। इस बार काशी के संस्कृति संसद का जो संकल्प होगा उसी से दुनिया को उचित दिशा मिलने वाली है। विश्व के वर्तमान हालात ठीक नहीं हैं। दुनिया युद्धों की विभीषिका में है। सबकी निगाहें भारत की ओर हैं। भारत के सक्षम और सशक्त नेतृत्व से ही अब विश्व को उम्मीद है। ऐसे में भारत के बाहर ही नहीं, भीतर से भी कुछ आसुरी शक्तियां भारत की गरिमा, महत्ता और इसकी सनातन शक्ति को क्षीण करने में लगी हैं। अनायास ही एक क्रम में सनातन के विरुद्ध अनर्गल प्रलापों की एक श्रृंखला चलाने की कोशिश हो रही है। यह सब नियोजित भाव में है इसलिए राष्ट्र सब समझ रहा है। साजिश करने वालों को नहीं समझ में आ रहा लेकिन भारतीय मूल्यों को जानने वाले ठीक से सब समझ रहे हैं।

प्राचीन समय में धर्म एक नागरिक के जीवन के उद्देश्यों का आधार था। धर्म मात्र प्रतीक नहीं होकर समग्र चेतना का स्तंभ था तब संस्कृति भारतीयता को परिभाषित करती थी और भारत की सारी व्यवस्थाएं संस्कृति पर आधारित थीं। संस्कृति का गौरव ही हमारे राष्ट्र का गौरव था हमारे वैचारिक दृष्टिकोण का ताना-बाना हमारी संस्कृति पर ही आधारित था। धीरे-धीरे हमारी धार्मिक मान्यताएं स्थिर होती गईं और संस्कृति का क्रमिक विकास होता गया।

काशी में संस्कृति संसद की उपादेयता को सनातन के लोग ही नहीं, विश्व की समस्त बौद्धिक परिधि ठीक से जान रही है। काशी केवल एक नगर नहीं है। यह केवल भारत राष्ट्र में भूमि का एक अंश भर नहीं है। कासिपुरी, काशी, वाराणसी और बनारस। पतित पावनी मां गंगा का तट। समग्र सृष्टि और विश्व के नाथ भगवान विश्वनाथ की नगरी। इसी काशी में हैं सृष्टि के प्राण तत्व। अयोध्या पुरी में अवस्थित भगवान मनु से आरंभ सृष्टि की अंतर्धारा मां गंगा के साथ काशी में अवस्थित होती है। माँ गंगा भी एक प्रकार से श्री अयोध्या धाम की ही पुत्री हैं क्योंकि इक्ष्वाकु कुल के भगीरथ ही इन्हें पृथ्वी पर लेकर आये। काशी और अयोध्या जी का यह संबंध अद्भुत है। मथुरा भी उसी इक्ष्वाकु कुल एक वंश की राजधानी रही है। काशी, अयोध्या और मथुरा के किसी इतिहास या विस्तार पर अभी चर्चा नहीं। इस की महत्ता यह कि काशी में आयोजित संस्कृति संसद- 2023 की उपादेयता और इसके उद्घोष का अभिप्राय क्या है। जिस परिवेश में यह आयोजन हो रहा वह महत्वपूर्ण है। विगत लगभग 10 वर्षों से भारत एक अघोषित युद्ध लड़ रहा है। भारत बोध की स्थापना का युद्ध तब और ही महत्वपूर्ण हो जाता है जब विश्व की एकमात्र उम्मीद की किरण बन कर भारत आज उभर रहा है। इसमे कोई दो राय नही कि इसके पीछे भारत के वर्तमान राजनैतिक नेतृत्व की दृढ़ संकल्पशक्ति है। यह संयोग ही है कि हमारे राष्ट्र नायक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी इसी काशी का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। काशी के इस प्रतिनिधि ने भारत बोध की स्थापना के इस युद्ध मे स्वयं को एक महायोद्धा के रूप में स्थापित भी किया है। वह श्री अयोध्याधाम का पुनरुद्धार हो, केदार का कायाकल्प हो या काशी का श्रृंगार। भगवान आदिशंकराचार्य की समाधिस्थल के बारे में तो सामान्य लोग जानते तक नही थे, लेकिन आज दुनिया उस स्थल के प्रकाश से अचंभित भी है और आलोकित भी। आज यदि वास्तव में कश्मीर से कन्या कुमारी तक , पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण

तक भारत भूमि में सनातन सिद्धांतों के गीत गाये जा रहे और अपनी सांस्कृतिक भावनाओं के साथ देश आगे बढ़ रहा है तो यह निश्चय ही हमारे राजनैतिक नेतृत्व की संकल्प शक्ति से ही संभव हो रहा है। स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी, गृह मंत्री अमित शाह जी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के सद्प्रयासों से ही यह वातावरण तैयार हुआ है।

ऐसे समय मे यदि श्री गंगामहासभा और अखिल भारतीय संत समिति ने काशी में ही संस्कृति संसद के आयोजन का निर्णय लिया है तो स्वाभाविक है कि यह एक सामान्य आयोजन नही है। वास्तव में यह काशी का विश्वघोष है जिसमे सनातन मूल्यों की अवधारणा से विश्व लाभान्वित होगा। जिन लोगो को अब दुनिया समझ में आ रही है उनको भारत और भारतीयता भी समझ में आने लगी है। वे इस तथ्य को बखूबी समझाने लगे है कि अगर भारतीयता , जिसे भारत की संस्कृति कहा जाता है , यदि उसको अंगीकार नहीं किया गया तो दुनिया नष्ट हो जायेगी। संघर्षो और युद्धों से किसी का भला नहीं होने वाला। युद्ध न तो कभी विकल्प था और न कभी हो सकता है लेकिन इसका यह भी तात्पर्य नहीं कि अनैतिकता और अधार्मिकता को बढ़ने दिया जाय और हम तमाशबीन बने रहे। ऐसा नहीं है क्यों कि हमारी संस्कृति इस बात की भी संरचना करती है कि जब आसुरी वृत्तियां बढ़ें तो उनसे निपटना कैसे है। त्रेता और द्वापर के सबसे बड़े युद्ध सनातन के ही नायकों ने लड़ा और धर्म की स्थापना की। आज से पांच हज़ार साल पहले जब समाज और सत्ता अधर्म के मार्ग पर चल रहे थे, अनैतिकता इतनी बढ़ चुकी थी कि राजपरिवार के एक पक्ष के लोग अपने ही परिवार के दूसरे पक्ष की बहू के शरीर से उसका वस्त्र भरी सभा में उतार रहे थे तब उस युग के महानायक को युद्ध ही विकल्प दिखा। तब उसने ऐसा युद्ध कराया की वह अनैतिक सभ्यता सदा के लिए ही ख़त्म हो गयी और नए सिरे से न्याय का शासन स्थापित हुआ।

ठीक है कि उस न्याय के शासन के बाद हमने पांच हज़ार साल से ज्यादा समय की यात्रा कर ली है। आज का मनुष्य उस समय की अवधारणाओ को जितना संचित रख सका है उससे ज्यादा भूल चुका है, लेकिन केवल भारतीय संस्कृति के सनातन तत्व हैं जो अभी भी हमारे पास सुरक्षित है। यह भी तथ्य है कि इतनी लम्बी यात्रा के दौरान इस संस्कृति पर भी सभ्यताओ की परतो की कुछ मोटी, कुछ मैली धूल की परत जम गयी है। इस परत के कारण ही भारत की धरती पर पिछले ढाई हज़ार वर्षो में कई बार कई ऐसे महापुरुषों ने यह प्रयास किया कि इस परत को साफसुथरा कर के भारत की मूल आत्मा को विकसित होने दिया जाय लेकिन दुर्भाग्य यह हुआ कि जिन जिन ने ऐसे शोधन के प्रयास किये उन्ही के अनुयायियों ने एक नए पंथ का की निर्माण कर दिया। हर बार इसे नयी नयी पूजा पद्धतियों से जोड़ने की ऐसी कोशिशे हुई की पूरी अवधारणा ही दायित्व वाले धर्म से पूजा वाले धर्म के रूप में स्थापित हो गयी। प्रचलन ऐसा बिगड़ा की भारत की मानवीय संस्कृति को भी एक पंथ या मज़हब जैसा देखा जाने लगा। हमारी सनातनता को इन अज्ञानी लोगो ने नष्ट करने की खूब कोशिश की। उसे पूजा पद्धति बनाने का प्रयास हुआ। आज भी बहुत से लोग अज्ञानतावश इसे एक पूजापद्धति मानने की गलती कर बैठते है और इसी को सत्ता लोलुप राजनीति के अलमबरदार अपना हथिया भी बनाने की कोशिश करते है। यह वास्तव में समय का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि जिस भारतीयता को लेकर आज पूरा पश्चिम चौधियाया हुआ है, हमारे देश के भीतर उसको लेकर पंथिक बहसे हो रही है।

आज विश्व हमारी तरफ आशा भरी निगाह से देख रहा है। अब उसकी समझ में यह तथ्य आ चूका है कि भारतीयता को अपनाए बिना कोई समाधान संभव नहीं है। आज की नयी नयी खतरनाक बीमारियों के इलाज के लिए वह भारतीय शास्त्र खंगाल रहा है। आज मन की अशांति को दूर करने के लिए वह भारत के योग और आध्यात्म को अपना रहा है। जीवन को सुगम बनाने के लिए वह भारत के शास्त्रों का खोज खोज कर अध्ययन कर रहा है। जीवन की अवधारणा को समझाने और जीवन प्रबंधन के लिए वह गीता के श्लोको के सही अर्थ तलाश रहा है। भारतीय वांग्मय और चिंतन में वह डूबना चाहता है। अब वह भारत को सपेरो और मदारियों का देश नहीं मानता। उसे इस धरती पर केवल भारत से ही जीवन की उम्मीद मिल रही है। यह बात केवल आज की भी नहीं है, पश्चिम में अब तक जितने भी बड़े दार्शनिक, विचारक, साहित्यकार, लेखक और वैज्ञानिक हुए है, सभी ने यह माना है कि विश्व का हित केवल भारतीयता ही कर सकती है।

प्रख्यात इतिहासकार और प्राचीन भारत के इतिहास पर सबसे बड़ा शोध कर अद्भुत भारत नामक ग्रन्थ के रचयिता ए एल वाशम स्वयं स्वीकार कर चुके है कि भारत की धरती कोई सामान्य धरती नहीं है , इस धरती ने ही मनुष्य को संस्कृति दी है और आने वाले समय में विश्व को यदि कही से कुछ दिशा मेलने की उम्मीद है तो सिर्फ भारत से ही है। भारत और भारतीय सनास्कृति ही विश्व की प्रत्येक सभ्यताओं का मार्गदर्शन करा पाने में सक्षम है। आज ए एल वाशम की भविष्यवाणी के साथ ही पुरातन अतीत के प्रमाणों ने विश्व को सनातन से जोड़ना और जुड़ा हुआ प्रमाणित करना शुरू कर दिया है। सनातन संस्कृति अर्थात भारतीय संस्कृति अर्थात हिन्दू आस्था की जड़ों के प्रमाण विश्व के कोने कोने से मिल रहे हैं। यह धरती मूल रूप से सनातन संस्कृति के साथ ही गति करती रही है। इस धरती और इस पर विद्यमान सृष्टि के लिए एक मात्र जीवन साधन सनातन ही है। ऐसे समय मे काशी में आयोजित संस्कृति संसद से जो उद्घोष होगा उससे विश्व की दिशा और दृष्टि मिलने जा रही है। अभी हाल में ही संपन्न जी 20 के नई दिल्ली घोषणा पत्र में भारत के प्रधानमंत्री जी ने एक पृथ्वी, एक परिवार का उद्घोष कर विश्व को स्पष्ट संदेश दे दिया है। केवल युद्ध विकल्प नहीं, भारत की सनातन शक्ति से ही विश्व का कल्याण संभव है।

(लेखक उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य और भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष हैं।)

आलेख

धर्म नहीं आत्मा है सनातन

सनातन धर्म अचानक राजनितिक विमर्श और रणनीति के केंद्र में आ गया है। हालिया शुरुआत तमिलनाडु से हुई है, जहाँ द्रमुक नेता अचानक बिना किसी सन्दर्भ के सनातन पर हमलावर हो चले। बात वहां से शुरू हुई और पूरे देश में फ़ैल गयी। तमिलनाडु के लिए यह कोई नई बात भी नहीं है। दरअसल, तमिल समाज दशकों से ईवी रामास्वामी पेरियार, डीएमके संस्थापक सीएन अन्नादुरई और अन्य नेताओं को सुनता और सीखता रहा है। ये धर्म, जाति पदानुक्रम, ब्राह्मणवादी आधिपत्य, जाति, धार्मिक, लिंग उत्पीड़न आदि के मुखर आलोचक रहे हैं। उदाहरण के लिए द्रविड़ आइकन पेरियार के इस उद्धरण को ही देखें - 'कोई भगवान नहीं है। जिसने भगवान को बनाया वह मूर्ख है; जो उसका नाम फैलाता है वह बदमाश है और जो उसकी पूजा करता है वह जंगली है।'

योगेश मिश्र

> अठारहवीं सदी की शुरूआत में सनातन और नूतन की पहली पहली बहस बंगाल में छिड़ी। अंग्रेज़ी पढ़े लिखे लोगों के नूतन वर्ग ने सती प्रथा, बाल विवाह जैसी प्रथाओं को ख़त्म करने की माँग की। यह बहस तीन दशक तक चली। फिर पुनर्जागरण की शुरूआत हुई। वैसे तो सनातन का रिश्ता केवल आत्मा से है। पर इसे धर्म से जोड़ कर देखने की समझ चल निकली। सनातन को हिन्दू धर्म से जोड दिया गया। बताया गया कि यह एक जीवन पद्धति है।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार और न्यूज़ट्रैक समूह के चेयरमैन हैं।

तमिलनाडु के सीएम के पुत्र तथा राज्य के मंत्री उदयनिधि स्टालिन ने 'सनातन धर्म को मिटाने' की आवश्यकता पर टिप्पणियाँ की, जिस पर देश भर से तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की गयी। इन टिप्पणियों को 'हिंदुओं का अपमान' बताया गया। लेकिन तमिलनाडु में इस मंत्री और उनकी बातों की ज्यादा आलोचना नहीं हुई। क्योंकि उनके शब्दों की जड़ें राज्य के राजनीतिक और सांस्कृतिक लोकाचार में निहित हैं।

दरअसल, तमिलनाडु की सत्तारूढ़ पार्टी द्रविड़ मुनेत्र कड़गम की जड़ें पेरियार द्वारा शुरू किए गए स्वाभिमान आंदोलन में हैं। 20वीं सदी के शुरुआती आंदोलन ने जाति और धर्म के विरोध का समर्थन किया। खुद को सामाजिक बुराइयों के खिलाफ एक तर्कवादी आंदोलन के रूप में स्थापित किया। वर्षों से, इन आदर्शों ने राज्य की राजनीति को प्रभावित किया है, जिसमें द्रमुक और आंदोलन से उभरी अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम पार्टियां भी शामिल हैं। पेरियार जाति और धर्म के घोर विरोधी थे। उन्होंने जाति और लिंग से संबंधित प्रमुख सामाजिक सुधारों की वकालत की। तमिल राष्ट्र की विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान पर जोर देते हुए हिंदी के वर्चस्व का विरोध किया। 1938 में जस्टिस पार्टी, जिसके पेरियार सदस्य थे, और आत्म-सम्मान आंदोलन एक साथ आये। 1944 में नये संगठन का नाम द्रविड़ कषगम रखा गया जो ब्राह्मण विरोधी, कांग्रेस विरोधी और आर्य विरोधी यानी उत्तर भारतीय विरोधी था। उन्होंने एक स्वतंत्र द्रविड़ राष्ट्र के लिए आंदोलन चलाया। इसी विचारधारा के तहत सनातन पर हमला है।

सनातन शब्द का ही मतलब है कि जो कालातीत है - जिसका न तो समय में आरंभ है, न ही अंत। सनातन वह है जो निराकार, अनंत, नामहीन, गुणहीन और अपरिवर्तनीय है।सनातन धर्म का उल्लेख गीता में है। गीता में श्री कृष्ण कहते हैं-

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ।।

अर्थात - हे अर्जुन! जो छेदा नहीं जाता। जलाया नहीं जाता। जो सूखता नहीं। जो गीला नहीं होता। जो स्थान नहीं बदलता। ऐसे रहस्यमय व सात्विक गुण तो केवल परमात्मा में ही होते हैं। जो सत्ता इन दैवीय गुणों से परिपूर्ण हो। वही सनातन कहलाने के योग्य है। इस श्लोक के माध्यम से भगवान कृष्ण कहते हैं कि जो न तो कभी नया रहा। न ही कभी पुराना होगा। न ही इसकी शुरुआत है। न ही इसका अंत है। अर्थात ईश्वर को ही सनातन कहा गया है।

यानी साफ़ है कि सनातन शब्द वेदों से नहीं आया है, सनातन का पहला उल्लेख श्रीमद्भागवत गीता में मिलता है। जिसका मतलब आत्मा के ज्ञान से है। जो शाश्वत है। पुनर्जन्म की बात करता है। शाश्वत शब्द का इस्तेमाल जैन बौद्ध धर्मों में भी है। क्योंकि ये धर्म पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं। इस्लाम, यहूदी व ईसाई धर्म में सनातन का ज़िक्र नहीं है। क्योंकि ये पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करते । इन धर्मों में स्वर्ग या नर्क के बाद कुछ भी नहीं हैं। जो पुण्य करेगा वह स्वर्ग पायेगा। जो पाप करेगा वह नर्क पायेगा। यह व्याख्या इन तीनों धर्मों को नैतिक तो बनाती है। पर धार्मिक नहीं बना पाती है। भारत के तीनों धर्म- हिंदू, जैन, बौद्ध मोक्ष की बात करते है।यह स्वर्ग व नर्क से ऊपर की बात है। यही हमें सनातन बनाती है। सनातन बताती है। हिंदू धर्म बारह हज़ार साल पुराना है। जबकि कुछ पुराणिक मान्यताओं के अनुसार हिंदू धर्म नब्बे हज़ार साल पुराना है।इस्लाम 1400 साल पूर्व , यहूदी व ईसाई धर्म 2000 ईसा पूर्व , जैन बौद्ध 500 ईसा पूर्व के धर्म हैं। ईसाई, यहूदी, इस्लाम का कालखंड इतना नहीं है कि यह उनको सनातन बना पाये।यही नहीं, सनातन किसी एक परंपरा या व्याख्या में विश्वास करने वाला विचार नहीं है। सनातन युग में लिखे गये ग्रंथों में वर्ण स्वीकार किया गया है। वर्ण यानी वर्ग। जाति नहीं। जाति व्यवस्था का कोई आधार आध्यात्मिक नहीं है। यह पेशागत है। जाति को कोई दैवीय, वैदिक या उपनिषदीय मान्यता नहीं है।

अठारहवीं सदी की शुरूआत में सनातन और नूतन की पहली पहली बहस बंगाल में छिड़ी। अंग्रेज़ी पढ़े लिखे लोगों के नूतन वर्ग ने सती प्रथा, बाल विवाह जैसी प्रथाओं को ख़त्म करने की माँग की। यह बहस तीन दशक तक चली। फिर पुनर्जागरण की शुरूआत हुई। वैसे तो सनातन का रिश्ता केवल आत्मा से है। पर इसे धर्म से जोड़ कर देखने की समझ चल निकली। सनातन को हिन्दू धर्म से जोड दिया गया। बताया गया कि यह एक जीवन पद्धति है। ऋग्वेद एवं अन्य वेदों में 'सनत धर्म' और 'प्रथम धर्म' शब्दों का प्रयोग किया गया है। सत्य, ऋत, धर्म और यज्ञ को प्रथम धर्म कहा गया है। जिन नियमों से समस्त ब्रह्मांड गतिशील हैं, उन्हें ही सनातन धर्म कहते हैं। मनुष्यों का धर्म उसी का एक अंग है। महात्मा गांधी ने स्वयं को पक्का सनातनी हिन्दू कहा है। उनके अनुसार हिन्दू वह है जो यह मानता है कि वेद सृष्टि के आरम्भ से हैं और वे सर्वपूज्य हैं, कर्मफल अटल और अनिवार्य है, ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है, प्रत्येक जीव में ईश्वर का अंश है, अहिंसा ही परम धर्म है।मध्यप्रदेश की एक जनसभा में मोदी ने दावा किया कि सनातन धर्म ने महात्मा गाँधी को छुआ-छूत प्रथा के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा दी। गांधी से जुड़कर यह मुद्दा और धारदार बनता है। अपनी किताब कास्ट प्राइड : बैटिल्स फ़ॉर इक्वालिटी इन हिंदू इंडिया में मनोज मिट्टा लिखते हैं कि महात्मा गांधी ने रुढिवादिता से मुक़ाबला करने के लिए खुद को सोच समझ कर सनातनी के तौर पर पेश किया था।

बहरहाल, एक और पहलू ध्यान देने योग्य है – धार्मिकता का। सच्चाई ये है कि सन 81 के एक सर्वे में पता चला था कि दुनिया की 60 फीसदी आबादी वाले 49 देशों में लोगों में धर्म के प्रति झुकाव बढ़ा नहीं है बल्कि - अधिकांश उच्च आय वाले देश कम धार्मिक होते जा रहे थे। 2007 के बाद से चीजें आश्चर्यजनक गति से बदल गई हैं। 2007 से 2020 तक इन्हीं देशों का भारी बहुमत (49 में से 43) कम धार्मिक हो गया। ये भारी बहुमत अब सिर्फ उच्च आय वर्ग तक तक सीमित नहीं है। मिसाल के तौर पर ईरान जैसे देश में आम जन के बीच धार्मिक झुकाव घट रहा है।आस्था या विश्वास में यह गिरावट उच्च आय वाले देशों में सबसे मजबूत है । लेकिन भारत में ऐसा कुछ नहीं है। प्यू रिसर्च इंस्टिट्यूट के आंकड़ों के अनुसार सन 51 से भारत में धार्मिक संरचना में कोई बदलाव नहीं हुआ है। 1947 में देश के विभाजन के बाद भारत की जनसंख्या तीन गुना से अधिक हो गई है। रिसर्च में पाया गया कि इस अवधि के दौरान भारत में हर प्रमुख धर्म की संख्या में वृद्धि देखी गई।

बहरहाल, मान्यताओं, आस्थाओं और विश्वास पर प्रहार कतई सही नहीं ठहराया जा सकता। एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कुरीतियों, अंधविश्वासों, कर्मकांडों को अवश्य दूर किया जाना चाहिए। इन्हीं में जात-पांत भी शामिल है। पर यह तो ईसाईयत और इस्लाम में भी है। सनातन कहे जा रहे धर्म में राजा राम मोहन राय, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गाँधी, रामकृष्ण परमहंस जैसे महापुरुषों ने इसी दिशा में काम किया। पर सवाल उठता है कि पश्चिमी देशों में धर्म से जुड़ी बुराइयों को दूर करने में कितनों ने अथक प्रयास किये। ईसाईयत तो यह सहन भी कर लेता है। पर इस्लाम हमेशा खतरे में आ जाता है। यहूदियों ने तो खुद को पवित्रता और रेस में इस तरह जकड़ रखा है कि खंडन मंडन के लिए इनके पास भी कोई जगह नहीं है। यानी इन तीनों धर्मों व उनके अनुयायियों में धार्मिक सहिष्णुता है ही नही। यह केवल सनातन कहे जाने वाले हिंदू धर्म में ही है, जहां वाद- विवाद को जगह है। जहां शास्त्रार्थ की परंपरा है। पर जिस तरह पिद्दी पिद्दी भर के लोग सनातन पर हमलावर हो रहे हैं। उससे तो अब लगता है कि सहिष्णुता को कायरता माना जाने लगा है।

सनातनियोंको देना होगा चुनौतियों का जवाब

अनुराग शुक्ला

एक सितंबर को मार्क्सवादी पार्टी से जुड़ा संगठन तमिलनाडु प्रगतिशील लेखक और कलाकार संघ की ओर से चेन्नई के कामराजार एरिना में आयोजित एक समारोहमें डीएमके नेता उदयनिधि स्टालिन ने अपने संबोधन में कहा, 'इस सम्मेलन का शीर्षक बहुत अच्छा है. आपने 'सनातन विरोधी सम्मेलन' के बजाय 'सनातन उन्मूलन सम्मेलन' का आयोजन किया है. इसके लिए मेरी बधाई. हमें कुछ चीजों को ख़त्म करना होगा.हम उसका विरोध नहीं कर सकते. हमें मच्छर, डेंगू बुखार, मलेरिया, कोरोना वायरस इत्यादि का विरोध नहीं करना चाहिए.हमें इसका उन्मूलन करना चाहिए. सनातन धर्म भी ऐसा ही है. तो पहली चीज़ यही है कि हमें इसका विरोध नहीं करना है बल्कि इसका उन्मूलन करना है. सनातन समानता और सामाजिक न्याय के ख़िलाफ़ है. इसलिए आपलोगों ने सम्मलेन का शीर्षक अच्छा रखा है. मैं इसकी सराहना करता हूँ.'

इसके कुछ ही दिन बात उनकी पार्टी के नेता ए राजा ने तो एक कदम आगे बढाकर अपने नेता की प्रवंचना में कह दिया कि सनातन धर्म की तुलना एड्स और कुष्ठ रोग जैसी बीमारियों से की जानी चाहिए, जिनके साथ सामाजिक कलंक जुड़ा हुआ है. उदयनिधि स्टालिन ने तो मलेरिया और डेंगू से तुलना करके विनम्रता दिखाई है.

इन विनम्र नेताओं ने सनातन के उन्मूलन के पीछे इसके ना बदलने के भाव पर निशाना साधा है। उनके मुताबिक सनातन में कुरीतियों को बदलने की व्यवस्था नहीं है। इन विनम्र, शलीन और विद्वान नेताओँ को सनातन का अर्थ ना पता हो यो तो संभव नही है पर अर्थ का अनर्थ करना तो राजनीतिक कला है। वैसे 'सनातन' का शाब्दिक अर्थ है - शाश्वत या 'सदा बना रहने वाला', यानी जिसका न आदि है न अन्त। सनातन धर्म जिसे हिन्दू धर्म अथवा वैदिक धर्म के नाम से भी जाना जाता है। दुनिया के सबसे प्राचीनतम धर्म के रूप में मान्यता के बाद भी अगर यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है। वो भी तब जब हिंदू धर्म के प्रचार प्रसार

> “सनातन निंरतरता पर विश्वास करता है। प्रवाह और परिवर्तन दोनों का हामी है। सनातन पर बार बार हमले होने के लिए उसके अनुयायी ही सबसे बड़ा कारण हैं। जब तक किसी भी धर्म के अनुयायियों में अपने ग्रंथों के प्रति सम्मान रहेगा, झुकाव रहेगा और धर्मग्रंथों का ज्ञान रहेगा तब तक धर्म को खतरा नहीं हो सकता।”

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार है)

के लिए ना तो वैचारिक ना ही सैन्य अभियान दुनिया में चलाए गए। रुका पानी सड़ जाता है ये सब को पता है।

ना बदलने की प्रवृति वाले और हमेशा रहने वाले धर्म के बीच का अंतर शायद राजनीतिक बयानबाजी में भुला दिया गया। कई बार राजनीति में तथ्य से ज्यादा कथ्य महत्वपूर्ण बना दिए जाते हैं। तथ्यों को नज़रअंदाज किया जाता है। सनातन में समय समय पर बदलाव होते रहे हैं। राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद आदि ने सती प्रथा, बाल विवाह, अस्पृश्यता जैसे असुविधाजनक परंपरागत कुरीतियों से असहज महसूस करते रहे। इन कुरीतियों की जड़ो (धर्मशास्त्रो) में मौजूद उन श्लोको -मंत्रो को 'क्षेपक' कहा या फिर इनके अर्थो को बदला और इन्हें त्याज्य घोषित किया तो कई पुरानी परम्पराओं का पुनरुद्धार किया जैसे विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा आदि।

दरअसल सनातन की जिन कुरीतियों की बात की जा रही है वो कुरीतियां समय के साथ पनपी। सती प्रथा का कभी रामायण और महाभारत मे तो उल्लेख नही हैं। राजा दशरथ की मृत्यु के बाद तीन रानियां ना तो सती हूईं ना ही महाभारत में कौरव पक्ष और अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा ने चिता में छलांग नहीं लगा दी। नारी शिक्षा की अगर बात की जाय तो गार्गी, सूर्या, अपाला, लोपामुद्रा, रोमशा आदि के नाम इस झूठ की बेनकाब करते हैं कि सनातन स्त्री शिक्षा का विरोधी है। ऋग्वेद की ऋचाओं में लगभग 414 ऋषियों के नाम मिलते हैं जिनमें से 30 नाम महिलाओं के हैं। स्त्रियाँ वेद शिक्षित तथा युद्धकला में भी निपुण हुआ करती थीं इस बात का उल्लेख साफ तौर पर मिलता है।

विधवा पुनर्विवाह को लेकर बाली की पत्नी का सुग्रीव से विवाह होने से लेकर ऐसे बहुत से उदाहरण है जो सनातन में स्त्री सम्मान के लिए विधवा पुनर्विवाह को मान्यता देने का प्रमाण है। दरअसल जिन कुरीतियों की बात आज की जा रही है वो भारत पर हुए विदेशी आक्रमणों की देन है। राजस्थान में आक्रांताओं के कहर से बचने के लिए सती प्रथा मजबूरी बनी। कालांतर में इसे प्रथा के तौर पर स्थापित किया गया। स्त्री शिक्षा कैसे हो जब 1 हजार साल तक देश में अलग अलग आक्रांता देश की शिक्षा, बेटियों और सम्मान पर घात लगाए बैठे हों। किसी बी देश में 1000 साल का काल किसी अपवाद को परंपरा बनने के लिए पर्याप्त है।

जिस जाति प्रथा को लेकर इन दिनों कुछ लोग सनातन को निशाने पर उसे लेकर भी भ्रम फैलाया गया है। सनातन में साफ लिखा है कि जन्मना जायते शूद्रः कर्मणा द्विज उच्यते। इसका मतलब है। अर्थात् जन्म से सभी शूद्र होते हैं और कर्म से ही वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र बनते हैं। अतः वेदों की भांति मनुस्मृति में भी वर्ण व्यवस्था पर जोर दिया गया है न कि जाति व्यवस्था पर। यानी सनातन में कर्म प्रधान को महत्व है। यही वजह है कि महर्षि वाल्मीकी से लेकर रैदास, कबीरदास सब ऋषि हैं।

वतर्मान भारत में सनातन के दो बड़े नायक हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम और जनार्दन श्री कृष्ण का जीवन भी इस बात की गवाही नहीं देता है कि जाति के आधार पर भेद किया जाय। राजकुमार राम जब अयोध्या के महल से निकलकर वनवन गए तभी मर्यादापुरुषोत्तम श्री राम बने। राम जब महल से निकले तो अपने मित्र निषादराज के गले लगे उनसे मदद मांगी। वन में गए तो ना अहिल्या से भेद किया ना शबरी से। शबरी से मिलकर उन्होंने साबित किया कि अगर सच्चे दिल से कोई भीलनी, कोई भक्त इंतजार देखेगी तो उससे मिलने चतुरंगिनी सेना का प्रमुख, अयोध्या का राजा, उनका आराध्य जंगल जंगल खोजता हुआ उनके पास आएगा।

रामायण की पूरी कथा तो खुद में ही बिना किसी भेदभाव के जनभागीदारी की मिसाल है। श्रीराम तो विष्णु का अवतार थे, अयोध्या के मनोनीत राजा थे। वे चाहते तो एक चक्र चलाकर रावण का संहार कर देते। चाहते तो अपनी सेना से लंका जीत सकते थे। लेकिन उन्होंने रामायण में जनभागीदारी का महत्व बताया है। उन्होंने भालु, बंदर, वनवासियों की सहायता से क्यों लंका विजय की। हम उस गिलहरी को क्यों याद करते हैं जिसने लंका तक पुल बांधने में अपनी भूमिका निभाई। क्योंकि सनातन के नायक श्रीराम के समभाव में सिर्फ इंसान ही नहीं पशु, पक्षी, पेड़ पौधे सब शामिल हैं। रामायण की समावेशी भावना में सब शामिल हैं। तभी तो माता सीता पशु पक्षियों की बात समझती हैं, उनके अपरहण पर श्री राम हे खग मृग हे मधुकर श्रेणी से उनका पता पूछते हैं।

सनातन समावेशी है, सर्व आग्रही है, सर्व सम्मत होते हुए भी अपने अपने मत की विभिन्नता की छूट देता है फिर भी उस पर हमला एक फैशन बन गया है। स्टालिन या ए राजा जैसे नेताओं को अपनी राजनीति चमकाने का ये सबसे आसान शॉर्टकट लगता है। वो आर्य द्रविड की अपनी पुरानी राजनीति को इन बयानों के बहाने नई पैकेजिंग में पेश करना चाहते हैं। वो द्रविड सनातन की लड़ाई छेड़कर एक बार फिर बैक टू बेसिक्स की तरफ जा रहे हैं। वैसे डीएमके अपनी विचारधार को हर तरह से हमेशा से ही प्रकट करता रहा है। यही वजह है कि सरकारी ऑट्र्स कॉलेज से जारी एक सर्कुलर के खिलाफ दायर की गई. याचिका में बताया गया कि कॉलेज ने 'सनातन का विरोध' विषय पर छात्रों से अपने विचार साझा करने के लिए कहा था। इसका समान्य लोगों ने विरोध किया मामला हाईकोर्ट तक पहुंच गया। मद्रास हाई कोर्ट के जस्टिस एन. शेषशायी जो एलंगोवन नाम के व्यक्ति की याचिका कर दी। याचिका पर सुनवाई के दौरान मद्रास हाई कोर्ट ने एक बड़ी टिप्पणी की है. हाई कोर्ट ने एक मामले की सुनवाई के दौरान कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को नफरत फैलाने के लिए इस्तेमाल नहीं करना चाहिए. कोर्ट ने कहा कि सनातन धर्म शाश्वत कर्तव्यों का समूह है, जिसमें देश के लोगों, राजा, माता-

> “
> सनातन पर हो रहे हमले में सनातनियों की कमजोरी बहुत बड़ा कारण हैं। मजाल है किसी और धर्म के बारे में यही नेता एक शब्द भी कह सकें। सनातन अनुयायियों के अंदर एक विश्वास भर दिया गया है कि हम कभी खत्म नहीं हो सकते। सनातन शाश्वत है। शायद इस विश्वास ने अब अतिविश्वास की शक्ल ले ली है। सनातन के अनुयायी मानने लगे हैं कि वो सनातन की परंपरा को पग-पग पर चुनौती देंगे पर हमारा सनातन का कुछ नहीं बिगड़ सकता। सनातन तो शाश्वत है।
> ”

पिता और गुरुओं के प्रति कर्तव्य शामिल हैं. इसमें गरीबों की देखभाल करना भी शामिल है, इसे क्यों नष्ट किया जाना चाहिए। क्या ये सभी कर्तव्य नष्ट होने योग्य हैं. क्या एक नागरिक को अपने देश से प्यार नहीं करना चाहिए? क्या उसका अपने राष्ट्र की सेवा करना कर्तव्य नहीं है?

कोर्ट की ये प्रतिक्रिया इस बात का सबूत है कि तमिलनाडू का आम नागरिक अपने इन नेताओं की बातों से सहमत नहीं है। नेता को भी चुनाव में वोट चाहिए तो वो ऐसे भावनात्मक मुद्दों से ध्रुवीकरण की कोशिश करते रहे हैं। खासकर खुद को पेरियार और अंबेडकर की विरासत वाले नेता। ऐसी ही कोशिश यूपी में वोट का करिश्मा कही जाने वाली मायावती ने करीब 3-4 दशक पहले तिलक तराजू और तलवार के नारे से की थी। इसके जरिए वो सत्ता में पहुंचीं और सत्ता में बने रहने के लिए नारे बदलकर हाथी नहीं गणेश है, ब्रह्मा विष्णु महेश है तक पहुंच गया।

सनातन निंरतरता पर विश्वास करता है। प्रवाह और परिवर्तन दोनों का हामी है। सनातन पर बार बार हमले होने के लिए उसके अनुयायी ही सबसे बड़ा कारण हैं। जब तक किसी भी धर्म के अनुयायियों में अपने ग्रंथों के प्रति सम्मान रहेगा, झुकाव रहेगा और धर्मग्रंथों का ज्ञान रहेगा तब तक धर्म को खतरा नहीं हो सकता। सनातन की शक्ति अब कठघरे में हैं। बल्कि हालत बहुत बिगड़ गए हैं। आज उपनिषदों का उल्लेख या कोई उक्ति, कोई उद्धरण कहीं प्रकाशित होता है तो लोग पूछते हैं ये उपनिषद क्या हैं, हम इन्हें कहाँ से पढ़ सकते हैं, कहाँ से खरीदें?

कितने वेद हैं ये तो शायद 90 फीसदी लोगों को पता हो पर 50 फीसदी लोगों को ये नहीं पता होगा कि कितने उपनिषद और पुराण हैं। नाम तो आप भूल ही जाइए। सनातन में धर्म और संस्कृति को लेकर घाल मेल कर दिया गया है। यही इस पर हमले का सबसे बड़ा कराण हैं। धर्म संस्कृति नहीं होता। आप ईसाईयत को ले लीजिए, दुनियाभर में फैली हुई है। अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग संस्कृति है। आप अफ्रीका के किसी ईसाई को ले लीजिए, ठीक है, आप यूरोप के किसी ईसाई को ले लीजिए, संस्कृति बिलकुल अलग-अलग है, पर बाइबल में दोनों का विश्वास अटूट और अखंड होगा। तो धर्म संस्कृति नहीं होता।

कौन सा ईसाई है जो कहता मिले कि बाइबिल पढ़ने की क्या जरूरत है? कौनसा मुसलमान है जो कहता है क़ुरआन पढ़ने की क्या जरूरत है? हिंदू में एक बड़ी संख्या आपको ये कहती मिल जाएगी 'अरे, उपनिषद, पुराण वेद क्यों पढ़ते हो, इससे क्या होगा। इसे समझाने के लिए पंडितजी हैं ना।' इन धर्मग्रंथों को पढ़ना रुढिवाद बना दिया गया है। भगवान के पास लोग ऑफर लेकर जाते हैं। एक्सचेंज आफर, भगवान हमें ये दो, भगवान हमें वो दो, भगवान अगर ये हो गया तो मैं यहां दर्शन करूंगा, मैं वहां जाऊंगा, मै ये करूंगा। भगवान के साथ भी इबादत नहीं तिजारत की जा रही है।

सनातन पर हो रहे हमले में सनातनियों की कमजोरी बहुत बड़ा कारण हैं। मजाल है किसी और धर्म के बारे में यही नेता एक शब्द भी कह सकें। सनातन अनुयायियों के अंदर एक विश्वास भर दिया गया है कि हम कभी खत्म नहीं हो सकते। सनातन शाश्वत है। शायद इस विश्वास ने अब अतिविश्वास की शक्ल ले ली है। सनातन के अनुयायी मानने लगे हैं कि वो सनातन की परंपरा को पग-पग पर चुनौती देंगे पर हमारा सनातन का कुछ नहीं बिगड़ सकता। सनातन तो शाश्वत है। इतिहास इस तर्क को शक्ति भी देता है पर यही इतिहास हमें ये भी बताता है कि इसी मान्यता की वजह से सनातन की सीमा गंधार, हिंदुकुश श्रीलंका, अफगानिस्तान, वर्तमान पाकिस्तान, वर्तमान बांग्लादेश, वर्तमान म्यांमार, थाईलैंड, कम्बोडिया, वियतनाम, इंडोनेशिया, आदि देशो में हिन्दू (वैदिक/आर्य) धर्म व संस्कृति (सनातन धर्म व संस्कृति+बौद्ध धर्म व संस्कृति +जैन धर्म व संस्कृति) से समेट कर भारत और नेपाल और दुनिया के कुछ देशों तक (जहां इसके अनुयायी है) तक सीमित हो गयी है। आज भारत में भी इसके सामने एक से ज्यादा चुनौतियां हैं।

दरअसल सनातन के अनुयायियों को ये समझना होगा कि यह प्रकृति का नियम है कि जगह कभी खाली नहीं रहती है, जितनी छोड़ते जाओगे उतनी दूसरे भरते जाएगें। हम जितना आत्मप्रवंचना और अतिविश्वास में हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे उतना ही दूसरे हमें खिसकाकर अपनी जड़े जमाते जाएंगे। सनातन के अनुयायियों को यह भी समझना होगा कि सहिष्णुता की सीमा कहां तक हो, यह भी कि सनातन को अंदर की कमजोरी के दीमक के साथ

बाहर के परजीवियों से भी खतरा है। हम सनातन हैं शाश्वत हैं हमारा कुछ नही होगा, इस भाव से बैठने पर क्या हश्र होता है इसका अंदाजा दुनिया में एक-डेढ़ हजार साल के अंदर ही खाडी देशों और यूनान की महान संस्कृति को देखकर समझा जा सकता है। हमास के आतंकी हमले के बाद दुनिया भर के मुस्लिम देश कैसे उसके पीछे लामबंद हुए। इस्त्राइल के प्रतिकार को जो बोएगा वही पाएगा साबित करने में लग गए। दशकों से दब चुकी मुस्लिम ब्रदरहुड की चिंगारी कैसे ज्वाला बन गयी यह सारी बातें भी सनातन के अनुयायियों को सीखनी होगी।

आज खतरा एक तरफा नहीं है, चुनौती एक रास्ते से नहीं आ रही बल्कि हर तरफ से सनातन के सामाने संकट बनी खड़ी है। आज के समय में फिल्में, मीडिया, सोशल मीडिया में बैठे सनातन विरोधी और सेक्युलर सनातन का चोला ओढ़े लोग एक के बाद एक चुनौती प्रस्तुत कर रहे हैं। फिल्मों में तो पिछले 7-8 दशक से पंडितो को धूर्त और पादरी पठान को सच्चा दिखाने की एक मुहिम चल रही है। अकसर पंडित को पाखंडी, दुराचारी दिखाया जाता है। फिल्मी गानों में रब, खुदा, रब्बा, आयते हों तो सृजनात्मक सौंदर्य और हनुमान चालीसा, संस्कृत के मंत्र पोंगा पंडिताई बताए जाते रहे हैं। यहां बहुत से अपवाद भी हैं पर ये सिर्फ अपवाद तक सीमित हैं नियम नहीं बन सके। इन दिनों समलैंगिकता को लेकर जोर शोर से बालीवुड स्वीकार्यता दिलाने में जुटा है। फिल्में समाज के सामूहिक बौद्धिकता और स्वीकार्यता पर सबसे तेज असर करता है ऐसे में समलैंगिकता को हाशिये से निकाल कर मुख्यधारा में लाने की एक मुहिम चल रही है। सनातन में काम भी एक कला है, शास्त्र है उसका भी एक समय है बाकायदा इस पर ग्रंथ है पर कहीं भी समलैंगिकता का दुहाई नहीं दी गयी है।

सनातनी सेक्युलर और सनातन विरोधी कई बार समलैंगिकता के कुछ उदाहरण पेश कर इसे सही साबित करने में जुट जाते हैं। लेकिन हजारों वर्ष के इतिहास, विविध समाजिक संरचना में समलैंगिकता और सनातन के मेल की घटनाएं अपवाद की भी अपवाद हैं। इन्हें स्वीकार्यता दिलाने का माध्यम नहीं माना जा सकता है।

इसी तरह अगर कोई सनातनी किसी धर्म को स्वीकार करता है तो हो हल्ला नहीं मचता पर अगर किसी अन्य धर्म का व्यक्ति सनातन स्वीकार कर ले तो इस पर मुहिम छिड़ जाती है। पहले केस में इसे जीने की आजादी, विचारों की स्वतंत्रता से जोड़ा जाता है। इससे उल्टा होने पर वैश्विक मीडिया इसे दुनिया भर में कट्टरवाद, राजनीति से प्रेरित करार देते हैं। इसका मैं एक उदाहरण देता हूं। 22 सितंबर को बागपत से बीबीसी के रिपोर्टर् रजनीश कुमार ने एक ऐसे परिवार पर खबर लिखी जो मुस्लिम से हिंदू बन गया। इसका शीर्षक था, 'मुसलमान से हिन्दू बनना इस परिवार के लिए कैसा रहा, क्या हिन्दुओं ने इन्हें अपनाया?- ग्राउंड रिपोर्ट'। इसमें इस फैसले को अपनाकर पछताने की बात का दावा किया गया था। हालांकि अब भी परिवार ने अपना फैसला नहीं बदला है। ऐसी ही रिपोर्ट उन हजारों परिवारों, उन बेटियों के बारे में क्यों नहीं लिखी जाती जो अमन, कबीर नाम के सेक्युलर नामों या फिर बदले हुए नामों वाले लड़कों के साथ शादी करने के बाद सरस्वती से सारा, आशा से आएशा या कुछ और बन जाती हैं। ऐसी रिपोर्ट परिवारों के बारे में क्यों नहीं लिखी जाती हैं जो हिंदू परिवार ईसाई बन जाते हैं।

धर्मांतरण का खेल धमकाकर, प्रलोभन या लालच देकर धर्मांतरण का खेल मिशनियां और मुस्लिम बेखौफ चला रहे है। ईसाई मिशनरियों की बदमाशी दरअसल गैर भाजपाई राज्यों में ज्यादा चल रही है। इन राज्यों में सरकार द्वारा धर्मांतरण पर अंकुश लगाने के बजाए इस ओर के आंखे मूंदकर इन्हें समर्थन ही दिया जा रहा है। दूसरी ओर नेपाल बॉर्डर पर धर्मांतरण कराने का नया तरीका ही सामने आया है। ईसाई मिशनरियां पोल खुलने के डर से यहां दलित और गरीब हिंदुओं का धर्मांतरण तो कर रही हैं, लेकिन उनके नाम नहीं बदल रही हैं। ताकि पुलिस को कार्रवाई करने में मुश्किल आए। यहां लोगों के घरों के उनके इष्टदेव भगवान की मूर्तियों को हटा दी गईं हैं। इसके स्थान पर जन्म से हिंदुओं से भी जीसस की प्रेयर कराई जा रही है। मिशनरियों ने धर्मांतरण का ये नया तरीका निकाला है।

नेपाल से सटे यूपी के कई जिलों में धर्मांतरण और क्रिश्चियन-मुस्लिम आबादी बढ़ने की खबरें अक्सर सामने आती हैं। इस दौरान पता चला था कि लखीमपुर के 30 गांवों में ईसाई मिशनरी एक्टिव हैं। ये गांव थारू जनजाति के हैं और चंदन चौकी से गौरीफंटा बॉर्डर के करीब बसे हैं। ये एरिया पलिया तहसील में आता है। यहां की 15 ग्राम पंचायतों में 50 हजार से ज्यादा थारू आबादी रहती है। यहां पास के नझौटा गांव में एक चर्च है, जो दूर से दिखता है। यह चर्च घर में ही है और रमाकांत कश्यप इसका पादरी भी हैं। यहां आसपास के 300 से 400 लोग प्रेयर के लिए आते हैं। पिछले साल ही लखीमपुर के तिकुनिया बॉर्डर से 25 किमी दूर निघासन में धर्मांतरण का मामला सामने आया था। इसमें कुछ लोगों की गिरफ्तारी भी हुई थी

सेक्युलर दिखने की होड़ में कांग्रेस, आम आदमी पार्टी और दूसरे दल अब सनातन से किस कदर नफरत करते हैं इसका उदाहरण तो स्टालिन का खुला बयान है। कांग्रेस पार्टी ने देश पर 70 सालों तक शासन के दौरान सनातन धर्म को हर स्तर से नुकसान पहुंचाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। वहीं आम आदमी के पार्टी के मंत्री राजेंद्र पाल गौतम ने तो 10 हजार लोगों को एक साथ हिंदू धर्म के खिलाफ शपथ दिलवाकर रिकार्ड ही बना डाला।

आज सनातन के केद्र भारत में कुछ लोग कुछ संस्थाएं ऐसी हैं जो भारत को गजवा ए हिंद बनाने का रोडमैप तक बना चुकी हैं। एक तरफ भारत 2047 तक विकसित देश बनने की कवायद में लगा है वहीं पीएफआई ने 2047 तक भारत को इस्लामी मुल्क बनाने का ब्लूप्रिंट तैयार कर लिया है। चरण दर चरण उसे लागू करने की

कोशिश कर रहे हैं। बिहार पुलिस ने 8 पन्नों के पीएफआई दस्तावेज़ बरामद किया था। इसमें चौंकाने वाले खुलासे किए गएं हैं। इसके मुताबिक भारत के 'कायर हिंदुओं' को सबक सिखाने की बात इसमें हैं। यह दस्तावेज़ आने वाले वर्षों के लिए पीएफआई लक्ष्य को रेखांकित करता है। 'इंडिया विजन 2047' नाम के दस्तावेज़ में, पीएफआई ने अपने कैडर के बीच आंतरिक रूप से प्रसारित किया है। ये लक्ष्य वो पीएफआई के पीछे 10% मुसलमानों के जुटने से भी हासिल होने की बात करता है।

'भारत 2047' दस्तावेज़ में एक टैगलाइन है 'भारत में इस्लाम के शासन की ओर'। इसमें लिखा है 'हम 2047 का सपना देखते हैं जहां राजनीतिक शक्ति मुस्लिम समुदाय के पास लौट आई है, जिनसे ब्रिटिश राज ने इसे अन्यायपूर्ण ढंग से छीन लिया था।' इसमे यह भी लिखा है कि मुस्लिम समुदाय हमेशा अल्पसंख्यक रहा है और उसे जीतने के लिए बहुसंख्यक होने की आवश्यकता नहीं है। 'अगर हम इस्लाम के इतिहास पर नज़र डालें, तो मुसलमान हमेशा अल्पसंख्यक थे और जीत के लिए हमें बहुमत की ज़रूरत नहीं है। पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) को भरोसा है कि अगर कुल मुस्लिम आबादी का 10% भी उसके पीछे आ जाए, तो पीएफआई कायर बहुसंख्यक समुदाय को घुटनों पर झुका देगा और भारत में इस्लाम का गौरव वापस लाएगा, 'दस्तावेज़ में कहा गया है ।

इसे चरण दर चरण बांटा गया है। पहले चरण में, विभिन्न क्षेत्रों में और विभिन्न संप्रदायों से संबंधित सभी मुसलमानों को पीएफआई के बैनर तले एकजुट होने की जरूरत बताई गयी है। वे अधिक सदस्यों की भर्ती करेंगे और उन्हें हथियारों का प्रशिक्षण देंगे, जिसमें छड़ों, तलवारों और अन्य हथियारों का उपयोग शामिल होगा - इस प्रशिक्षण में आक्रामक और रक्षात्मक तकनीकें भी शामिल होंगी।

'इसके लिए मुस्लिम समुदाय को बार-बार उसकी शिकायतें याद दिलानी होंगी और जहां कोई शिकायत नहीं है वहां शिकायतें स्थापित करनी होंगी। पार्टी सहित हमारे सभी फ्रंटल संगठनों को विस्तार और नए सदस्यों की भर्ती पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। साथ ही, हमें भारतीय होने की अवधारणा से परे सभी के बीच एक इस्लामी पहचान स्थापित करनी होगी।

मुस्लिम के बीच 'भारतीय' होने से परे एक मुस्लिम पहचान स्थापित करने की बात करता है। हाल में हुई इस्त्राइय हमास संघर्ष में जिस तरह से मुस्लिमों के कुछ वर्ग ने प्रदर्शन किए वो इस मंसूबे को खाद पानी देने का काम करेंगे।

अपने चरण 2 में, पीएफआई खुले तौर पर हिंदुओं के खिलाफ हिंसा का इस्तेमाल करने का आह्वान करता है। इसमें कहा गया है कि मुसलमानों की शिकायतों को बार-बार दोहराया जाना चाहिए और 'विरोधियों' (हिंदुओं) को आतंकित करने और अपनी सामूहिक ताकत प्रदर्शित करने के लिए हिंसा का 'चुनिंदा' इस्तेमाल किया जाना चाहिए। वे आगे बड़े पैमाने पर लामबंदी और 'सुरक्षा बलों के लिए प्रशिक्षित कैडर के जोखिम' को सीमित करने की बात करते हैं। इसी चरण में यह भी बताया गया कि कि कैसे वे 'अम्बेडकर', 'संविधान', 'राष्ट्रीय ध्वज', आदि जैसी पंच लाइनों का उपयोग करके अपनी नापाक गतिविधियों को जारी रख सकते हैं। इस चरण में, पीएफआई जो गठबंधन बनाना चाहता है वह 50% मुसलमानों और 10% एससी/एसटी/ओबीसी के साथ है।

इसके अलावा पीएफआई अपने कैडरों से इस स्तर पर हथियार जमा करने के लिए कहता है। 'पीई विभाग को अपने सदस्यों के अनुशासन, वर्दीधारी मार्च और जहां भी आवश्यक हो, समुदाय की रक्षा में शारीरिक रूप से हस्तक्षेप करने और इसके हितों के खिलाफ किसी पर भी हमला करने के माध्यम से अपनी ताकत का प्रदर्शन करना चाहिए। दस्तावेज़ में कहा गया है कि इस चरण में हथियारों और विस्फोटकों का भंडारण किया जाना चाहिए। पीएफआई का लक्ष्य न्यायपालिका और कार्यपालिका में घुसपैठ करना और फंडिंग के लिए विदेशी इस्लामी देशों के साथ संपर्क करना भी शामिल है। पीएफआई के इस विजन डॉक्यूमेंट का मानना है कि भारतीय राज्य के साथ पूर्ण टकराव की स्थिति में, उन्हें तुर्की जैसे 'मित्र इस्लामी राष्ट्रों' से मदद की आवश्यकता होगी। जबकि उनका कहना है कि उन्होंने तुर्की के साथ घनिष्ठ संबंध विकसित किए हैं, अन्य इस्लामी देशों तक भी पहुंचने की जरूरत है। उसके मुताबिक,'राज्य के साथ पूर्ण प्रदर्शन के परिदृश्य में, हमारे प्रशिक्षित पीई कैडरों पर भरोसा करने के अलावा, हमें मित्रवत इस्लामी देशों से मदद की आवश्यकता होगी। पिछले कुछ वर्षों में, पीएफआई ने इस्लाम के ध्वजवाहक तुर्की के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित किए हैं। दस्तावेज़ में कहा गया है कि कुछ अन्य इस्लामी देशों में विश्वसनीय मित्रता विकसित करने के प्रयास जारी हैं।'

इस तरह के संगठनों पर कार्रवाई करने में सरकार सक्षम पर एक नागरिक के तौर, सनातन के शुभचिंतक के तौर पर हमें सचेत रहना होगा। यह सच्चाई है कि पूरे विश्व में इन दिनों सनातन को लेकर एक आकर्षण हैं। पूरी दुनिया खासकर यूरोप और अमरीका में लोग टकराव के रास्तों पर चलने के बाद अब सनातन को शांति का मार्ग मान रहे हैं यही वजह है कि बालीवुड अभिनेत्री अमरीकी जूलिया रॉबर्ट्स हों, रूसी सिंगर सती काजानोवा विश्वानंदा, फ्रेंच विद्वान एलेन डेनिएल्यू और ऐसे फेहरिस्त में बहुत से नाम हैं जो सनातन की शरण में आ रहे हैं। जो अपने धर्मों में है वो सनातन के योग, ध्यान, आहार को अपना रहे हैं टेनिस में सबसे ज्यादा ग्रैंड स्लैम जीत चुके नोवाक जोकोविच का योग और शाकाहार प्रेम किससे छिपा है। आज विश्व सनातन को लेकर आशांवित है, चमत्कृत है पर हम सनातन की चुनौतियों को लेकर हम कितने सजग है इसका भी सनातन के भविष्य पर बहुत बड़ा असर पड़ेगा।

आलेख

सनातन भारत और भाईजी

सनातन संस्कृति में आस्था रखने वाला दुनिया में शायद ही कोई ऐसा परिवार होगा जो गीता प्रेस गोरखपुर के नाम से परिचित नहीं होगा। इस देश और दुनिया के हर कोने में रामायण, गीता, वेद, पुराण और उपनिषद् से लेकर प्राचीन भारत के ऋषियों-मुनियों की कथाओं को पहुंचाने का एक मात्र श्रेय गीता प्रेस, गोरखपुर के संस्थापक 'भाई जी' हनुमान प्रसाद पोद्दार को है। प्रचार-प्रसार से दूर रहकर एक अकिंचन सेवक एवं निष्काम कर्मयोगी की तरह हनुमान प्रसाद पोद्दार भाई जी' ने सनातन संस्कृति की मान्यताओं को घर-घर तक पहुँचाने में जो योगदान दिया है, वह युगों-युगों तक अविस्मरणीय रहेगा। इस कार्य के तहत ही उन्होंने अध्यात्म भावना का पुनरुद्रेक, 'कल्याण' का शुभारम्भ, 'साधना समिति' की स्थापना, 'कल्याण कल्पतरु' (अंग्रेजी पत्रिका, विदेशों में सनातन संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए), 'कल्याण' के चित्र शास्त्रीय आधार पर प्रकाशन, श्रीराधाष्टमी महोत्सव आदि की शुरुआत की थी।

प्रो. हिमांशु चतर्वेदी

"भाई जी ने गीता प्रेस के माध्यम से जब साहित्य प्रकाशन प्रारम्भ किया उसके पूर्व हिन्दी धार्मिक ग्रन्थों की उपलब्धि अल्प मात्रा में थी। यहाँ तक की गीता का शुद्ध हिन्दी अनुवाद भी कठिनता से प्राप्त होता था। महाभारत, पुराणों के प्रामाणिक अनुवाद हिन्दी में दुर्लभ थे। इन ग्रन्थों का मूल ही सामान्य हिन्दुओं को पता नहीं था। वे ही ग्रन्थ आज जो लाखों-लाख की संख्या में हिन्दी में उपलब्ध हैं, इनका श्रेय 'भाई जी' को ही है।"

पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग,
दी.द.उ.गो.वि.वि., गोरखपुर
सदस्य, आई0सी0एच0आर0, नई दिल्ली

गोरखपुर स्थित गीतावाटिका में प्रायः सभी अवतारों के प्राकट्य-उत्सव के रूप में मनाने का कार्य भी उन्हीं के द्वारा प्रारम्भ किया गया, जैसे—नृसिंह-चतुर्दशी, वामन द्वादशी, राम-नवमी, जानकी नवमी आदि, परन्तु श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं श्रीराधाष्टमी के उत्सव विशेष रूप से मनाये जाते हैं। इनमें 'श्रीराधाष्टमी' का स्थान सर्वोपरि रहा। राधाष्टमी महोत्सव रूप में मनाने का प्रचार विशेषतया 'भाई जी' के द्वारा ही हुआ और वर्तमान में भी यह सनातन परम्परा के लिए विशेष पर्व के रूप में मनाया जाता है। आध्यात्मिक जगत में भाई जी का सर्वोच्च स्थान है। हिन्दी साहित्य का उन्होंने जो सामग्री प्रदान की है वह भी अनुपम है। भाई जी ने गीता प्रेस के माध्यम से जब साहित्य प्रकाशन प्रारम्भ किया उसके पूर्व हिन्दी धार्मिक ग्रन्थों

की उपलब्धि अल्प मात्रा में थी। यहाँ तक की गीता का शुद्ध हिन्दी अनुवाद भी कठिनता से प्राप्त होता था। महाभारत, पुराणों के प्रामाणिक अनुवाद हिन्दी में दुर्लभ थे। इन ग्रन्थों का मूल ही सामान्य हिन्दुओं को पता नहीं था। वे ही ग्रन्थ आज जो लाखों-लाख की संख्या में हिन्दी में उपलब्ध हैं, इनका श्रेय 'भाई जी' को ही है। केवल अनुवाद ही नहीं 'कल्याण' के माध्यम से 'भाई जी' ने हिन्दी साहित्य में जो अभिवृद्धि की है वह अतुलनीय है। गीता प्रेस, धार्मिक पुस्तकें और हनुमान प्रसाद पोद्दार 'भाई जी' एक-दूसरे के पर्याय हैं। गीता प्रेस से प्रकाशित धार्मिक ग्रन्थों से लेकर 'कल्याण' पत्रिका आध्यात्मिक क्षेत्र में अग्रदूत के रूप में विद्यमान है। सेठ जयदयाल गोयनका ने गीता प्रेस की स्थापना 1923 में की, जिसे हनुमान प्रसाद पोद्दार जी ने वटवृक्ष का रूप दिया। उत्तर भारत की आध्यात्मिक, सामाजिक, साहित्यिक और राजनीतिक क्षेत्र में योगदान देने वाले 'भाई जी' को ऐतिहासिक दृष्टि से पिरोना महत्वपूर्ण है। गीता प्रेस के माध्यम से उन्होंने भारतीय सनातन संस्कृति की सेवा करते हुए भारत के समृद्ध ग्रन्थों-वाङ्मय एवं परम्पराओं की व्याख्या कर उनको जन-जन तक पहुँचाने का कार्य ही नहीं किया, अपितु राष्ट्रीय चेतना को भी नवीन ऊर्जा प्रदान की। हनुमान प्रसाद पोद्दार 'भाई जी' ने कल्याण प्रकाशन के माध्यम से पत्रकारिता के क्षेत्र में एक नया आयाम जोड़ा। उन्होंने तत्कालीन जनजीवन को एक नया मोड़ दिया। वे भारत ही नहीं, वरन् विश्व में भी भारतीय आध्यात्मिक साहित्य को पहुँचाने में सफल रहे। उन्होंने सांस्कृतिक नवचेतना जागृत की और आध्यात्मिक दृष्टि से मूल्यवान तथ्यों को आधुनिक शब्दावली में व्यक्त किया। परन्तु उनके विविध आयाम थे, जैसे 'भाई जी' की पत्रकारिता के सन्दर्भ में राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर का कहना था कि "हनुमान प्रसाद पोद्दार जी की विशेषता थी कि वे प्राचीन भारत के ज्ञान को प्राचीन (संस्कृत) अथवा आधुनिक भारत की भाषा (हिन्दी) में फैलाते थे, जिन प्राचीन पुराणों और ग्रन्थों का जनता पहले केवल नामभर सुना करती थी, वो अब उसके हाथ में हैं और हिन्दी में, उस भाषा पर जनता का स्वाभाविक अधिकार है।" अतः सनातन के साथ उन्होंने भाषा को भी समृद्ध किया। सुमित्रानन्दन पन्त का भी मानना था कि सनातन भारतीय हिन्दू संस्कृति के पुनरुत्थान में श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कल्याण के सम्पादन के द्वारा उन्होंने भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति तथा तत्सम्बन्धी शास्त्रों, पुराणों आदि में जो कुछ सनातन मूल्यवान, श्रेष्ठ तथा वरेण्य था, उसका सहस्रों नर-नारियों में प्रचार-प्रसार कर उन्हें नवीन आस्था, स्फूर्ति तथा जीवन आदर्शों के प्रति श्रद्धा एवं निष्ठा प्रदान की। भाई जी की भाषा सरल, स्पष्ट और शुद्ध होती थी। पोद्दार जी का दर्शन मात्र कल्याण और सनातन ही तक सीमित नहीं किया जा सकता है। हनुमान प्रसाद पोद्दार भाई जी ने कल्याण को एक आदर्श और रुचिकर पत्रिका का रूप देने हेतु देशभर के महात्माओं, धार्मिक विषयों में स्पष्ट दृष्टि रखने वाले लेखकों और सन्तों आदि को पत्र लिखकर इसके लिए विविध विषयों पर लेख आमंत्रित किए। इसके साथ ही उन्होंने श्रेष्ठतम कलाकारों से देवी-देवताओं के आकर्षक चित्र बनवाए और उनको कल्याण में प्रकाशित किया। कल्याण को उन्होंने मात्र हिन्दू धर्म की ही पत्रिका के रूप में पहचान देने की बजाय, उसमें सभी धर्मों के आचार्यों जैसे—जैन मुनियों, रामानुज, निम्बार्क, माधव आदि सम्प्रदायों के विद्वानों के लेखों का प्रकाशन किया। भाई जी आजीवन आम आदमी के लिए सोचते रहे। ये कहना किंचित भी अपर्याप्त नहीं होगा कि सनातन हिन्दुत्व की मान्यताओं को गीता प्रेस ने घर-घर तक पहुँचाया और हिन्दुत्व पुनरुत्थानवादियों की शृंखला में सर्वोच्च योगदान दिया। अपने सम्पूर्ण साहित्यिक एवं पत्रकारिता के जीवन में हनुमान प्रसाद पोद्दार अपने लेखन के माध्यम से भारतीय संस्कृति का सुव्याख्यान करते

"भाई जी ने गीता प्रेस के माध्यम से जब साहित्य प्रकाशन प्रारम्भ किया उसके पूर्व हिन्दी धार्मिक ग्रन्थों की उपलब्धि अल्प मात्रा में थी। यहाँ तक की गीता का शुद्ध हिन्दी अनुवाद भी कठिनता से प्राप्त होता था। महाभारत, पुराणों के प्रामाणिक अनुवाद हिन्दी में दुर्लभ थे। इन ग्रन्थों का मूल ही सामान्य हिन्दुओं को पता नहीं था। वे ही ग्रन्थ आज जो लाखों-लाख की संख्या में हिन्दी में उपलब्ध हैं, इनका श्रेय 'भाई जी' को ही है। केवल अनुवाद ही नहीं 'कल्याण' के माध्यम से 'भाई जी' ने हिन्दी साहित्य में जो अभिवृद्धि की है वह अतुलनीय है।"

रहे। तत्कालीन नेपाल नरेश ने कहा—'मैं तीन दशकों से भी अधिक समय से श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार को 'कल्याण' में प्रकाशित उनके लेखों के माध्यम से जानता हूँ और मैं कह सकता हूँ कि श्री पोद्दार का जीवन एक उत्थानकारी और महान उद्देश्य के प्रति पूर्ण समर्पण था। हनुमान प्रसाद पोद्दार ने भारत की सनातन संस्कृति की आजीवन सेवा की थी। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी 'भाई जी' गोरखपुर आये तो गोरखपुर के ही होकर रह गये और गोरखपुर से ही उन्होंने भारतीयता का एक वैश्विक सन्दर्भ सम्पूर्ण विश्व के सामने रखा। इस कालखण्ड में भाई जी यह कार्य अकेले ही नहीं कर रहे थे। मदन मोहन मालवीय जी अपने व्यावसायिक जीवन को 1911 में छोडने के बाद सम्पूर्ण हिन्दू शास्त्रों के, हिन्दू समाज के हित के लिए हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना कर रहे थे, जिससे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में एक ऐसा स्वप्न साकार हुआ था जिसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता था। रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे व्यक्ति, जो हिन्दू राष्ट्रीयता के समर्थक नहीं थे, लेकिन उन्होंने कहा कि मालवीय जी ने विश्वविद्यालय स्थापित करके पूरी दुनिया में हिन्दू जीवन दृष्टि के बारे में व हिन्दू क्षमता दृष्टि के बारे में एक परिवर्तन किया है, क्योंकि माना जाता है कि हिन्दू पाठशाला चला सकता है, छोटे-छोटे विद्यालय चला सकता है, विश्वविद्यालय वैश्विक सन्दर्भ और शिक्षण संस्थान, हिन्दू जीवन दृष्टि के आधार पर हिन्दू मूल्य दृष्टि के आधार पर नहीं चला सकता। मालवीय जी ने इसको बदला। आध्यात्मिक साधना और धर्म के प्रचार का मालवीय जी का अपना चिन्तन था जिसके विषय में उन्होंने कहा था कि शिक्षित युवा पूरी दुनिया में सांस्कृतिक राजदूत के रूप में भारत का काम करेगा। तो वहीं दूसरी तरफ अरविन्द एक क्रान्तिकारी, एक सन्त के रूप में कार्य कर रहे थे। इन्हें लगा कि यदि इन परिस्थितियों में स्वतन्त्रता मिलती है, जबकि भारत अपने आध्यात्मिक साधना के मूल्यों पर जागृत नहीं है, तो स्वतन्त्रता व्यर्थ और निष्फल होगी। अतः उन्होंने व्यक्ति परिष्कार का रास्ता योग के माध्यम से चुना और पांडिचेरी में केन्द्रित होकर एक समन्वित योग, जिसमें दैहिक, भौतिक सभी प्रकार के दुखों के परिसीमन के लिए जागृत व्यक्ति को सचेत व्यक्ति के रूप में निर्मित किया जा सके की साधना में लगे। लेकिन भाई जी ने एक दूसरा रास्ता चुना, उन्होंने सम्पूर्ण समाज को, सम्पूर्ण हिन्दू समाज को, सम्पूर्ण राष्ट्र को एक पाठशाला के रूप में लिया। गीता प्रेस के माध्यम से, कल्याण के माध्यम से, एक समन्वित हिन्दू समाज की बात आरम्भ हुई, जो आध्यात्मिक परम्परा और वैदिक परम्परा दोनों को समन्वित करते हुए अनुभव और अनुभूति के आधार पर एक वास्तविक जीवन प्रणाली थी, जो वस्तुतः सच्ची धार्मिक जीवन प्रणाली है, को प्रस्तुत किया और जब सत्य जीवन प्रणाली प्रस्तुत होती है तो व्यक्ति के स्तर पर विचार होता है, परिवार के स्तर पर विचार होता है, समाज के स्तर पर विचार होता है, और राष्ट्रीय स्तर पर विचार होता है, अन्ततः सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए विचार होता है। यह आसान नहीं था कि, भागवत की भक्ति परम्परा और भगवद्गीता के आधार पर विस्तारित हुई, कर्मगाथा एवं वेदान्त की ज्ञान परम्परा इन तीनों के बीच जो विभेद था, संन्यासी और वैरागी के बीच विभेद था, उसमें सामंजस्य स्थापित करना दुष्कर था। सम्पूर्ण विश्व को अद्विक रूप से एक मानकर निराकार ब्रह्म की उपासना का जो भेद था और भेद के आधार पर समाज में व्यावहारिक स्तर पर जो विभाजन था इसको समाप्त करना एक असम्भव सा जो कार्य था, उस कार्य को मूर्त रूप देने का बीड़ा भाई जी ने उठाया। हिन्दू समाज स्वरूप में जो हम चर्चा करते हैं तो आज एक समग्र दृष्टि प्राप्त होती है। इस समग्र दृष्टि को प्राप्त कराने में भारतीय इतिहास का यह कालखण्ड अत्यंत महत्वपूर्ण है। क्योंकि यही वह काल है जब भारत अपने आधुनिक स्वरूप में उत्पन्न हो रहा था। पश्चिम का दर्शन बंगाल के 'भद्रलोक' से अरविन्द की 'पुनः खोज' के द्वन्द्व पर खड़े थे, मार्क्स भारतीय चैतन्य को अपने अनुसार चुनौती दे रहा था। इन सब के मध्य बंकिम का 'वंदे मातरम', विवेकानंद का 'गर्व', तिलक का 'गीता रहस्य', अरविंद की 'योग साधना' एवं सर्वोपरि 'भाई जी' की 'सनातन साधना' भारत को अपने मूल में रखने को सचेष्ट थी। स्वतन्त्रता पश्चात् के भारतीय इतिहास लेखन की एक धारा यह प्रश्न उठा सकती है कि क्या 'भाई जी इतिहास के विषय वस्तु हैं? प्रत्युत्तर में सुयोग्य होगा कि क्या मार्टिन लूथर के 95 प्रश्न इतिहास के विषय वस्तु हो सकते हैं? अवश्य, क्योंकि समस्या यह हो गई कि 'भारत को खोजने' यह कहना बेहतर होगा कि 'भारत को खोने' की एक मार्क्सवादी दृष्टि ने हर सम्भव प्रयास किए। किसी भी राष्ट्र की चैतन्यता का आधार उसकी सांस्कृतिक चैतन्यता एवं सभ्यता की विरासत होती है। उत्तर आधुनिक विचारधारा में कहा जाए तो 'अतीत के बिना राष्ट्र हो ही नहीं सकता'। इस अतीत की धुरी क्या है? सांस्कृतिक धरोहर और इस पर जब वैचारिक आक्रमण होता है तो राष्ट्र अपने मूल में नष्ट होता है। सम्भव है कुछ विचारधाराओं के लिए यह दृष्टि महत्वपूर्ण नहीं होती, परन्तु भारतीय विमर्श में यह है, अगर ना होती तो शायद सभ्यता का इतिहास ही समाप्त हो गया। होता—भारतीय सन्दर्भ में। यहाँ यह भी कहना महत्वपूर्ण होगा कि सनातन एक संस्कृति है—किसी धर्म का आधार नहीं, यदि यह नहीं रहती तो भारतीयता का प्रश्न ही समाप्त हो जाता। अतः भाई जी इतिहास के वे पथ हैं, जिन्होंने भारतीयता को अपने मूल में जीवन्त रखा। यह ग्रन्थ इसी जीवन्तता का एक ऐतिहासिक प्रयास है।

सनातन जीवन संस्कृति भारतीय संस्कृति का अनोखा स्वरुप

डॉ. अर्चना पाठ्या

हमारा भारत देश 'विविधता में एकता' वाला देश है यहाँ पर विभिन्न धर्मो व सम्प्रदायों के लोग रहते हैं सभी की अपनी-अपनी भाषाएं रहन-सहन वेशभूषा रीति-रिवाज वेद-पुराण एवं साहित्य हैं सबकी अपनी-अपनी संस्कृति है। हम भारतवासी अपनी भाषा रहन-सहन खान-पान और वेशभूषा में भले ही अलग-अलग हों परन्तु हमारी संस्कृति एक ही है। अर्थात् भारतीय राष्ट्र-राज्य का आधार एक संस्कृति नहीं अनेक संस्कृतियों की पारस्परिक सहिष्णुता और सहअस्तित्व है| यह संसार की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है।

"प्राचीन समय में धर्म एक नागरिक के जीवन के उद्देश्यों का आधार था। धर्म मात्र प्रतीक नहीं होकर समग्र चेतना का स्तंभ था तब संस्कृति भारतीयता को परिभाषित करती थी और भारत की सारी व्यवस्थाएं संस्कृति पर आधारित थीं। संस्कृति का गौरव ही हमारे राष्ट्र का गौरव था हमारे वैचारिक दृष्टिकोण का ताना-बाना हमारी संस्कृति पर ही आधारित था। धीरे-धीरे हमारी धार्मिक मान्यताएं स्थिर होती गईं और संस्कृति का क्रमिक विकास होता गया।"

भारतीय संस्कृति कर्म प्रधान संस्कृति है प्राचीनता के साथ इसकी दूसरी विशेषता अमरता तीसरी विशेषता उसका जगद्गुरु होना है। किसी भी देश के विकास में उसकी संस्कृति का बहुत योगदान होता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्र हित में अनेक श्रेष्ठ कार्य किए हैं और अब इसी क्रम में आचार्य शंकर की समाधि और प्रतिमा की स्थापना भारतीय संस्कृति-संस्कार और उसकी दिव्य संवेदनाओं एवं संसार की आद्य सभ्यता का जयघोष ही है। भारत की आध्यात्मिक चेतना के केंद्र बिंदु हिमालय पर्वत में अवस्थित श्री केदारनाथ धाम में भगवान आदि शंकराचार्य की समाधि एवं भव्य-दिव्य प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई। सनातन संस्कृति के लिए आदि शंकराचार्य जी का योगदान अमूल्य रहा है।

धर्म एवं संस्कृति पर प्रायः होने वाली बहस में यह भुला दिया जाता है कि भारत की पहचान सदा से धर्म एवं संस्कृति ही रही है। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। जहां धर्म संस्कृति का आधार है वहीं संस्कृति धर्म की संवाहिका है। दोनों ही अपने-अपने परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र के निर्माण एवं राष्ट्रीयता के संरक्षण में सहायक सिद्ध होते हैं। जहां धर्म अपनी स्वाभाविकता के साथ सामाजिक परिवेश का आधार बनता है वहीं संस्कृति सामाजिक मूल्यों का स्थायी निर्माण करती है। धर्म का सूत्र मानव के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करता है तो वहीं संस्कृति मानवीय संवेदनाओं को सामाजिक सरोकार से जोड़ती है इस तरह धर्म कालांतर में संस्कृति का रक्षण करता है और

लेखिका सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् कवयित्री एवं सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

संस्कृति धर्म के आधार का उन्नयन करती है। जहां धर्म हमारे सर्वस्व का प्रतीक रहा है तो वहीं संस्कृति हमारी स्वाभाविक जीवनशैली की वाहिका रही है दोनों ने ही भारतीय मूल्यों को जीवंत रखा है और संसार में इसी कारण से भारत का मान-सम्मान रहा है। प्राचीन समय में धर्म एक नागरिक के जीवन के उद्देश्यों का आधार था। धर्म मात्र प्रतीक नहीं होकर समग्र चेतना का स्तंभ था तब संस्कृति भारतीयता को परिभाषित करती थी और भारत की सारी व्यवस्थाएं संस्कृति पर आधारित थीं। संस्कृति का गौरव ही हमारे राष्ट्र का गौरव था हमारे वैचारिक दृष्टिकोण का ताना-बाना हमारी संस्कृति पर ही आधारित था। धीरे-धीरे हमारी धार्मिक मान्यताएं स्थिर होती गईं और संस्कृति का क्रमिक विकास होता गया। धर्म और संस्कृति ने मिलकर हमारी भारतीयता को विकसित किया। यह भारतीय धर्म की विशेषता रही है कि वह जटिलताओं में जकड़ा न रहा और सतत चिंतन की अवधारणा को विकसित होने में सहायक सिद्ध हुआ जिसके कारण अनेक भारतीय धर्मों का उदय हुआ। बौद्ध जैन एवं बाद में सिख धर्म ने अपनी चिंतनशैली को विकसित किया परंतु मूल में सनातन धर्म ही रहा। सनातन धर्म का आशय हिंदू धर्म मात्र से नहीं बल्कि बौद्ध जैन सिख धर्म से भी है। भगवान बुद्ध एवं महावीर ने सनातन धर्म के संस्कार में ही जन्म लिया और इस तरह उन्होंने अपने चिंतन को स्वतंत्र स्वरूप प्रदान कर नई धार्मिक व्यवस्था का निर्माण किया। भगवान बुद्ध ने सनातन धर्म के अनेक पहलुओं में परिपक्वता प्रदान की और उनमें व्याप्त कुंठित व्यवहारों और विचारों से मुक्त होकर भारतीय धर्म को मजबूत किया उन्होंने धर्म की स्वतंत्र व्याख्या अवश्य की पर मूल में उसके सांस्कृतिक चिंतन को सर्वोच्च स्थान दिया भारतीय मानसिकता को धर्म की वास्तविकता से संयुक्त किया और हर वर्ग को धर्म से होने वाले लाभ को सुनिश्चित किया। इस तरह हिंदू बौद्ध जैन एवं सिख धर्म उस व्यवस्था को मजबूत करते हैं। यद्यपि इन धर्मों को अपने-अपने परिवेश में विकसित होने में धार्मिक स्वतंत्रता अवश्य रही परंतु सांस्कृतिक एकता बनी रही। भारतीय संस्कृति के समग्र विकास में भारत के सभी धर्मों ने अपना-अपना योगदान दिया। धर्म के मार्गदर्शन में ही भारतीय चिंतन व्यवस्था पनपी और कालांतर में विश्व की चिंतन व्यवस्थाओं और मान्यताओं को प्रभावित करती रही। परिणामस्वरूप भारत धर्म गुरु के रूप में स्थापित हुआ और इस तरह भारत का संबंध विश्व में प्रभावी रूप से कायम हुआ। भारत में धार्मिक दृष्टिकोण तो प्रचलित हुआ ही साथ ही राजनीतिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को भी पनपने और विकसित होने में सफलता मिली। विश्व के अनेक देशों के साथ कई एशियाई देशों से हमारा संबंध प्रगाढ़ बना और भारतीय धर्म एवं संस्कृति का भी सम्यक विकास हुआ आज उन देशों में भारतीय धर्म एवं संस्कृति की विरासत पूरी तरह संरक्षित है जो इस बात को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि भारतीय धर्म एवं संस्कृति किसी भी देश अथवा वर्ग की मान्यताओं को समाप्त नहीं करती बल्कि उनका परिमार्जन करती है। भारतीय चिंतन पर आधारिक अनेक शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थाएं दुनिया के विभिन्न हिस्सों में स्थापित होकर काम कर हमारी विरासत का संरक्षण कर रही हैं। भाषा के मामले में भी देखें तो भारतीय भाषाओं ने विश्व की भाषाओं को प्रभावित किया और कई विदेशी भाषाओं के निर्माण में भारतीय भाषाओं ने योगदान दिया। एशियाई देशों की अधिकतर भाषाएं संस्कृत पालि एवं प्राकृत पर आधारित हैं इस तरह इन भाषाओं से विकसित विदेशी भाषाओं से भारतीय दर्शन एवं संस्कृति का सहज ही ज्ञान परिलक्षित होता है। भारतीय भाषाविदों धार्मिक गुरुओं एवं संस्कृति को पोषित करने वाले व्यक्तियों ने विश्व में अपनी पहचान बनाकर भारत की गरिमा को हमेशा गौरव प्रदान किया।

> “प्राचीन समय में धर्म एक नागरिक के जीवन के उद्देश्यों का आधार था। धर्म मात्र प्रतीक नहीं होकर समग्र चेतना का स्तंभ था तब संस्कृति भारतीयता को परिभाषित करती थी और भारत की सारी व्यवस्थाएं संस्कृति पर आधारित थीं। संस्कृति का गौरव ही हमारे राष्ट्र का गौरव था हमारे वैचारिक दृष्टिकोण का ताना-बाना हमारी संस्कृति पर ही आधारित था। धीरे-धीरे हमारी धार्मिक मान्यताएं स्थिर होती गईं और संस्कृति का क्रमिक विकास होता गया।”

सनातन धर्म भारतीय संस्कृति का मूलभूत अंग है और विभिन्न शाखाओं और संप्रदायों के माध्यम से विविधता को प्रकट करता है जिसे हिंदू धर्म भी कहा जाता है जिसमें अनेक परंपराएं विचारधारा और सिद्धांत हैं। इन धार्मिक तत्त्वों का संवर्धन सनातन धर्म की सिद्धांत संस्कृति के माध्यम से होता है। विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता के रूप में सनातन धर्म को माना जाता है। यह विश्व का तीसरा सबसे प्राचीन धर्म है जिसके पूरी दुनिया में अनुयायी हैं। सनातन धर्म में धर्म और कर्म का महत्वपूर्ण स्थान है। पौराणिक कथाएँ सनातन धर्म के अमूल्य रत्न हैं। सनातन धर्म के साहित्य को 'पवित्र धरोहर' के रूप में जाना जाता है जो विश्वासों विचारों और आध्यात्मिकता के प्रचंड संग्रह हैं। यह साहित्य भारतीय संस्कृति का अमूल्य धरोहर है और अनमोल ज्ञान तत्त्व और सम्प्रदाय के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत है इसमें समृद्धि धर्म जीवन

शैली समाज और आत्मा को समझाने के उपाय दिए गए हैं। कला संगीत योग और ध्यान सनातन धर्म की अनूठी प्रतिभा को प्रकट करने वाले महत्वपूर्ण आध्यात्मिक साधनाओं में से हैं। सनातन धर्म का अर्थ है 'अनादि' या 'अविनाशी धर्म'। सनातन का मूल अर्थ होता है शाश्वत या सदा बना रहने वाला। यानि जिसका ना कभी आरंभ हुआ है और ना ही कभी अंत होगा। सत्य अहिंसा त्याग और परोपकार सनातन धर्म के मूल मंत्र हैं। सनातन धर्म में मुख्य रूप से वेदों का अध्ययन किया जाता है और ईश्वर के विभिन्न रूपों की पूजा भी की जाती है।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद ने वैदिक धर्म को सनातन धर्म कहा उनके अनुसार सनातन धर्म वैदिक काल से ही अस्तित्व में आया है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि आज से करीब 90 हजार साल पहले सनातन धर्म की स्थापना हुई थी जिसकी स्थापना का श्रेय स्वयं भगवान ब्रह्मा जी को दिया जाता है। हालांकि भारतीय इतिहास में सनातन धर्म की उत्पत्ति को लेकर कई मतभेद भी मौजूद है पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सनातन धर्म की उपस्थिति के प्रमाण सिंधु घाटी सभ्यता के समय में भी देखने को मिलते हैं जहां खुदाई के बाद अनेकों देवी देवताओं की मूर्तियां मिली थीं। मुगल शासकों के भारत आते ही सनातन संस्कृति की पहचान धूमिल होने लगी थी उन्होंने सम्पूर्ण भारत वर्ष पर इस्लाम को अपनाने का जोर बनाना प्रारंभ कर दिया ऐसे में सनातन संस्कृति के उपासकों ने अथक प्रयासों से सनातन धर्म के मूल्यों को जीवित रखने का प्रयास किया। इसके बाद सनातन धर्म को मानने वाले लोगों को ब्रिटिश हुकूमत द्वारा जनगणना की दृष्टि से हिंदू कहा जाने लगा। मुख्य रूप से सनातन धर्म को अलग अलग युगों के आधार पर पांच भागों में बांटा गया है। सनातन धर्म की शिक्षा इसके प्रत्येक अनुयायी को यही सिखाती है कि समस्त देवताओं में एक ही ईश्वर का वास है। कहते हैं तभी से सनातन धर्म को मानने वाले अनुयायियों के लिए यह सनातनी संस्कृति सर्वश्रेष्ठ हो गई। जिसके चलते आज भी इसके द्वारा प्रसारित किए गए ज्ञान की ज्योति से सम्पूर्ण विश्व रोशन हो रहा है। यह धर्म सृष्टि की रचना के बाद उत्पन्न हुआ माना जाता है। जिसमें कुल 33 करोड़ देवी देवताओं का उल्लेख किया गया है। सनातन धर्म में मानव शरीर को आत्मा का निवास स्थान बताया गया है। जो मानव की मृत्यु के बाद भी जीवित रहती है। यह धर्म मानव को आध्यात्मिक मानसिक और शारीरिक सुखों की अनुभूति का ज्ञान कराता है। सनातन धर्म एकमात्र ऐसा धर्म है जिसमें नारी को पुरुष की जीवनसाथी और अर्धांगिनी माना गया है। सनातनी संस्कृति के अनुसार धरती पर प्रत्येक जगह ईश्वर विद्यमान है। इस धर्म में ही चार युगों का वर्णन किया गया है जिसके मुताबिक वर्तमान युग कलियुग है जहां अधर्म का नाश करने और धर्म की स्थापना के लिए भगवान विष्णु कल्कि का अवतार लेंगे। सनातन धर्म में साकार और निराकार दोनों ही भगवान की उपासना करने को श्रेयस्कर माना गया है। इस

प्रकार सनातन धर्म ही मानव को जीवन जीने से लेकर मृत्यु और मोक्ष का रास्ता बताता है इसके अनुसार जैसे प्रकृति की पांच अवस्थाएं होती हैं आकाश वायु जल आग और पृथ्वी ठीक उसी प्रकार से मानव की भी अवस्थाएं होती हैं इस धर्म की शुरुआत कई तत्त्वों और विभिन्न अवस्थाओं के संगम से हुई जिसमें वेदों का महत्वपूर्ण योगदान है। सनातन धर्म को दुनिया का सबसे पुराना धर्म माना जाता है सनातन धर्म में प्रचलित वेद, उपनिषद, पुराण और महाभारत जैसी धार्मिक ग्रंथों के अनुसार, इस धर्म की उत्पत्ति काफी पुरानी है। सनातन धर्म भारतीय उपमहाद्वीप में प्रचलित हिंदू धर्म का एक नाम है। इसे हिंदू धर्म के अलावा वैदिक धर्म संस्कृत धर्म या सनातन धर्म के नाम से भी जाना जाता है। सनातन धर्म का मूल उद्देश्य मनुष्य के जीवन के समस्त पहलुओं से संबंधित है। सनातन धर्म शब्द संस्कृत भाषा से लिया गया है। 'सनातन' शब्द का अर्थ होता है 'शाश्वत' यानी जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा। वहीं 'धर्म' शब्द का अर्थ होता है 'धरन' यानी जो संभव होता है उसे अपने ऊपर लेना या अपने अनुसार व्यवहार करना। इस तरह, सनातन धर्म का अर्थ होता है एक ऐसा धर्म जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा तथा जो लोगों को सही दिशा में ले जाकर जीवन में सफलता और आनंद प्रदान करता है इसे भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अभिन्न अंग माना जाता है। जो पूरी दुनिया में फैला हुआ था जिसके साक्ष्य आज भी अनेक देशो में मिलते है।

सनातन धर्म का एक ही नारा है सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भागभवेत। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः। अर्थात 'धरा पर निवास करने वाले सभी सुखी होवें, सभी निरोगी रहें, सभी जीवों का मंगल हो और कोई भी दुःख के भागी न बने। सनातन धर्म सिर्फ एक धर्म नही अपितु जीवन जीने का एक योजनाबद्ध क्रम, कला व तरीका है। सनातन धर्म उच्च आचरण के साथ-साथ मनुष्य को जीवन जीने की सभ्यता का विशेष मार्ग दर्शन करता है। सनातन धर्म हमें सिखाता है कि कैसे एक राम सामान पुत्र अपने पिता के वचन का पालन करने के लिए समस्त भौतिक राज-पाट, सुख-सुविधाओं का त्याग करके चौदह वर्ष के लिए एक वनवासी का जीवन समाज कल्याण के लिए व्यतीत करता है। भारत और आधुनिक पाकिस्तानी क्षेत्र की सिन्धु घाटी सभ्यता में हिन्दू धर्म

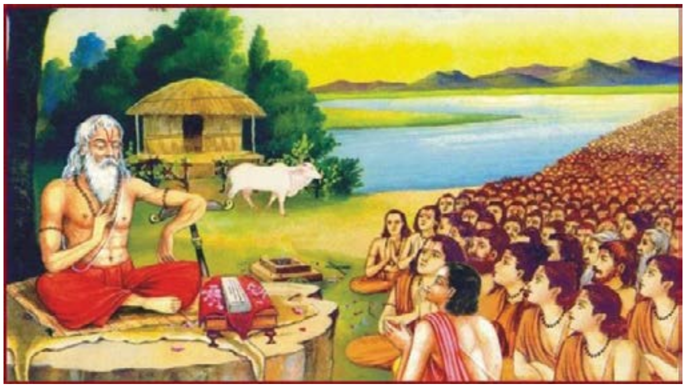

के कई चिह्न मिलते हैं इनमें एक अज्ञात मातृदेवी की मूर्तियाँ, शिव पशुपति जैसे देवता की मुद्राएँ, लिंग, पीपल की पूजा, इत्यादि प्रमुख हैं। सनातन धर्म के इतिहास की बात करें तो सनातन धर्म जिसे हिन्दू धर्म या वैदिक धर्म भी कहा जाता है। सनातन धर्म के अस्तित्व या चिह्न भारत और आज के पाकिस्तानी क्षेत्र की सिंधु घाटी सभ्यता में मिलते हैं। प्राचीन काल में भारतीय सनातन धर्म में गाणपत्य, शैवदेव, कोटी वैष्णव, शाक्त और सौर नाम के पाँच थे। प्रत्येक सम्प्रदाय के समर्थक अपने देवता को दूसरे सम्प्रदायों के देवता से बड़ा समझते थे और इस कारण से उनमें वैमनस्य बना रहता था। एकता बनाए रखने के उद्देश्य से धर्मगुरुओं ने लोगों को यह शिक्षा देना आरम्भ किया कि सभी देवता समान हैं, विष्णु, शिव और शक्ति आदि देवी-देवता परस्पर एक दूसरे के भी भक्त हैं। उनकी इन शिक्षाओं से तीनों सम्प्रदायों में मेल हुआ और सनातन धर्म की उत्पत्ति हुई। सनातन धर्म का सारा साहित्य वेद, पुराण, श्रुति, स्मृतियाँ, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता आदि संस्कृत भाषा में रचा गया है। कालान्तर में भारतवर्ष में मुसलमान शासन हो जाने के कारण देवभाषा संस्कृत का ह्रास हो गया तथा सनातन धर्म की अवनति होने लगी इस स्थिति को सुधारने के लिये संत तुलसीदास ने प्रचलित भाषा में धार्मिक साहित्य की रचना करके सनातन धर्म की रक्षा की। जब औपनिवेशिक ब्रिटिश शासन को ईसाई, मुस्लिम आदि धर्मों के मानने वालों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिये जनगणना करने की आवश्यकता पड़ी तो सनातन शब्द से अपरिचित होने के कारण उन्होंने यहाँ के धर्म का नाम सनातन धर्म के स्थान पर हिंदू धर्म रख दिया। सनातन में आधुनिक और समसामयिक चुनौतियों का सामना करने के लिए इसमें समय समय पर बदलाव होते रहे हैं जैसे कि राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद आदि ने सती प्रथा, बाल विवाह, अस्पृश्यता जैसे असुविधाजनक परंपरागत कुरीतियों से असहज महसूस करते रहे। कई पुरानी परम्पराओं का पुनरुद्धार किया जैसे विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा आदि। यद्यपि आज सनातन का पर्याय हिन्दू है पर सिख बौद्ध जैन धर्मावलम्बी भी सनातन धर्म का हिस्सा हैं क्योंकि बुद्ध भी अपने को सनातनी कहते हैं। यहाँ तक कि नास्तिक जो कि चार्वाक दर्शन को मानते हैं वह भी सनातनी हैं। यह विश्व का सबसे प्राचीनतम धर्म है जो पूरी दुनिया में फैला हुआ था जिसके साक्ष्य आज भी अनेक देशो में मिलते है। सनातन धर्म से ही सारे धर्मो का उद्गम हुआ है। आज नासा और इसरो जिस प्रकार ग्रह के बारे में पूर्ण जानकारी देते है वही सारी हमारे पूर्वज आज से हजारो साल पहले पंचांग के माध्यम से दे देते थे।

सनातन धर्म जिसे हम हिंदू धर्म के नाम से भी जानते हैं उसकी अमर कहानियां हमारी संस्कृति और धर्म के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। इन कहानियों के माध्यम से हमें हमारी पूर्वजों की बुद्धि ज्ञान दानशीलता और नैतिकता से भरी हमारी संस्कृति की विस्तृत जानकारी मिलती है। सनातन धर्म के सम्प्रदायों में धार्मिक ग्रंथों का महत्वपूर्ण स्थान है जैसे वेद उपनिषद रामायण महाभारत गीता आदि। सनातन धर्म का मूल उद्देश्य एक ईश्वरीय अस्तित्व में विश्वास करना धार्मिक आचरण के माध्यम से आध्यात्मिक और नैतिक विकास करना है। यह धर्म कई धार्मिक प्रथाओं संस्कृतियों विचारधाराओं और आचरणों को समायोजित करता है और इसे भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। सनातन धर्म हमारी धार्मिक विरासत का एक महत्वपूर्ण अंग है जहां मिट्टी भी पूजी जाती है, पर्वत की आराधना की जाती है, जहां ऋषि-मुनियों ने हर युग में हर काल में उस समय का यथार्थ चित्रण अपनी वाणी से किया है, जहां पुनर्जन्म में विश्वास है, जहां शरीर के द्वारा किए गए कर्मो का फल आत्मा को भोगना पड़ता है, जहां कर्म ही प्रधान है, जहां दूसरों के सुख-दुःख में आत्मा को वही अनुभूति होती है, यही तो वैदिक धर्म है शाश्वत है यही तो सनातन धर्म है। यह उपभोग की नहीं उपयोग की, लाभ-लोभ की नहीं त्याग की, भोग की नहीं मोक्ष की संस्कृति है। यह बाँधता नहीं, मुक्त करता है। सनातन हिंदू, भक्षक नहीं, प्रकृति रक्षक होता है। 'मैं सनातनी हूँ' कहने का अर्थ ही होता है 'मैं प्रकृति का पुजारी हूँ'। सनातन जीवन-दर्शन दानव को मानव बनाता है मानव को देवता और देवता को ईश्वर के रूप में स्थापित कर देता है। सनातन सिर्फ स्वयं की बात नहीं करता सदा विश्व की बात करता है। सिर्फ आज की बात नहीं करता बीते हुए कल का विश्लेषण कर आने वाले कल के लिए तैयार करता है। इसलिए शाश्वत है निरंतर है। आधुनिक मानव को सनातन के इस मूल मंत्र को पकड़ना होगा तभी हम सनातन जीवन-दर्शन को समझ पाएँगे। विश्व के सबसे बड़े ग्रन्थ महाभारत में कई स्थानों पर एक वाक्य आया है 'यतो धर्मस्ततो जय' अर्थात् जहाँ धर्म है, वहीं विजय है। इस धर्म में कई महान ऋषि, संत और धर्मगुरु हुए जो विश्व के लिए नहीं बल्कि समस्त मानवता के लिए जीवन के अनमोल संदेश छोड़कर गए। ईश्वर, आत्मा और मोक्ष सत्य है और इस सत्य के मार्ग को बताने वाला ही सनातन धर्म है। एकनिष्ठता, ध्यान, मौन, और तप मोक्ष का मार्ग है, और मोक्ष से ही आत्मज्ञान और ईश्वर का ज्ञान होता है, जो हमें सनातन धर्म सिखलाती है। यूं तो विश्व में कई प्रकार के धर्म हैं, मगर सनातन धर्म ही एक ऐसा धर्म है, जो विश्व कल्याण की बात करता है। सनातन

दूर्वा है उसमें दूर्वा की तरह झुककर पैरों तले रौंदे जाने पर भी अपने अस्तित्व को बचा ले जाने की अद्भुत क्षमता है। सनातन अमरवेल है उसे अपने विस्तार के लिए कभी राजसिंहासन का सहारा नहीं लेना पड़ा। वह राजपुत्रों और राजवंशों से पोषण पाकर नहीं फैली उसे अपने प्रसार के लिए आक्रमणकारी सैनिकों और सेवा का आडम्बर रचते प्रलोभनकारी व्यापारियों का सहारा नहीं लेना पड़ा। सनातन धर्म की अमरवेल अपने उदार चिन्तन और मानवीय मूल्यों के कारण बिना आश्रय के ही फल-फूल रही है विश्व में प्रतिष्ठित हो रहे नए मंदिर इसके प्रमाण हैं। सऊदी अरब जैसे इस्लामिक देश में मंदिर निर्माण सनातन की नयी प्रतिष्ठा है। इस्कान द्वारा स्थापित कृष्ण मंदिरों की बढ़ती संख्या सनातन धर्म की अमर बेल का नूतन विकास है। सनातन धर्म अक्षयवट है जिसकी छाया में मनुष्यता सुरक्षित है। संसार के देश भारत की सनातन सांस्कृतिक विरासत यहाँ के मठों, मंदिरों, धर्म ग्रंथों, पर्व-उत्सवों, राम-कृष्ण आदि महापुरुषों से ही जानते हैं। सनातन की छाया में ही भारत में अन्य धर्म सुरक्षित रह सकते हैं। ॐ सनातन धर्म का प्रतीक चिह्न ही नहीं बल्कि सनातन परम्परा का सबसे पवित्र शब्द है।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक व्यवस्थित रूप हमें सर्वप्रथम वैदिक युग में प्राप्त होता है। वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ माने जाते हैं। प्रारंभ से ही भारतीय संस्कृति अत्यंत उदात्त, समन्वयवादी सशक्त एवं जीवंत रही हैं जिसमें जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आध्यात्मिक प्रवृत्ति का अद्भुत समन्वय पाया जाता है। वस्तुतः शारीरिक मानसिक और आत्मिक शक्तियों का विकास ही संस्कृति की कसौटी है इस कसौटी पर भारतीय संस्कृति पूर्ण रूप से उतरती है। आश्रम व्यवस्था का पालन करते हुए धर्म अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र रहा है।

भारतीय संस्कृति व सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति व सभ्यता है। इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है। जीने की कला हो विज्ञान हो या राजनीति का क्षेत्र भारतीय संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा है। अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ-साथ नष्ट होती रही हैं किंतु भारत की संस्कृति व सभ्यता आदिकाल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई है। संस्कृति किसी भी देश जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने आदर्शों जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। अतः संस्कृति का साधारण अर्थ होता है-संस्कार सुधार परिष्कार शुद्धि सजावट आदि। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक व्यवस्थित रूप हमें सर्वप्रथम वैदिक युग में प्राप्त होता है। वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ माने जाते हैं। प्रारंभ से ही भारतीय संस्कृति अत्यंत उदात्त, समन्वयवादी सशक्त एवं जीवंत रही हैं जिसमें जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आध्यात्मिक प्रवृत्ति का अद्भुत समन्वय पाया जाता है। वस्तुतः शारीरिक मानसिक और आत्मिक शक्तियों का विकास ही संस्कृति की कसौटी है इस कसौटी पर भारतीय संस्कृति पूर्ण रूप से उतरती है। आश्रम व्यवस्था का पालन करते हुए धर्म अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र रहा है। प्राचीन भारत के धर्म दर्शन शास्त्र विद्या कला साहित्य राजनीति समाजशास्त्र इत्यादि में भारतीय संस्कृति के सच्चे स्वरुप को देखा जा सकता है। मानव संस्कृति ऐसे सिद्धांतों पर आश्रित है जो प्राचीन होते हुए भी नये हैं। ये सिद्धांत किसी देश या जाति के लिये नहीं अपितु समस्त मानव जाति के कल्याण के लिये हैं। इस दृष्टि से भारतीय संस्कृति को सच्चे अर्थ में मानव संस्कृति कहा जा सकता है। अगर भारत के संदर्भ में बात की जाए तो भारत एक विविध संस्कृति वाला देश है। भारती संस्कृति अपनी विशाल भौगोलिक स्थिति के समान अलग-अलग है। यहाँ के लोग अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं अलग-अलग तरह के कपडे़ पहनते हैं भिन्न-भिन्न धर्मों का पालन करते हैं, अलग-अलग भोजन करते हैं। चाहे कोई खुशी का अवसर हो या कोई दुख का क्षण एक साथ खुशी या दर्द का अनुभव करते हैं। भारतीय संस्कृति के बारे में पं. मदनमोहन मालवीय का कहना है कि ''भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशालता और उसकी महत्ता तो संपूर्ण मानव के साथ तादात्म्य संबंध स्थापित करने अर्थात् 'वसुधैव कुटुंबकम्' की पवित्र भावना में निहत है।' भारतीय संस्कृति समस्त मानव जाति का कल्याण चाहती है इसमें प्राचीन गौरवशाली मान्यताओं एवं परंपराओं के साथ ही नवीनता का समावेश भी दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति विभिन्न सांस्कृतिक धाराओं का महासंगम है। ये धाराएँ भारतीय संस्कृति को इंद्रधनुषीय संस्कृति या गंगा-जमुनी तहज़ीब में परिवर्तित करती है। हमारी संस्कृति मानव प्रकृति और पर्यावरण के अटूट एवं साहचर्य संबंधों को लेकर चलती है। यहाँ के विभिन्न विचारकों एवं महापुरूशों ने भारतीय संस्कृति को समन्वित रूप प्रदान करने वाले विचार प्रस्तुत किये हैं फिर चाहे बुद्ध तुलसीदास हो या गांधी इन सभी को भारतीय संस्कृति के नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है तथा ये सभी चरित्र भारतीय संस्कृति को समन्वित स्वरूप देते हैं। भारत की विभिन्न कलाओं जैसे- मूर्तिकला नृत्यकला चित्रकला लोकसंस्कृति इत्यादि में भारतीय संस्कृति के समन्वित स्वरूप को देखा जा सकता है। भारतीय संस्कृति का समन्वित रूप केवल भौगोलिक-राजनीतिक सीमाओं में

ही नहीं है बल्कि उसके बाहर भी है। संस्कृति का स्वरूप 'साहित्य' में सबसे अधिक समर्थयपूर्ण तरीके से अभिव्यंजित होता है। संस्कृति साहित्य का प्राण है साहित्य की विभिन्न विधाओं में संस्कृति के प्रभाव को देखा जा सकता है। संस्कृति के आधारभूत मूल्य दया करूणा प्रेम शांति सहिष्णुता लचीलापन क्षमाशीलता इत्यादि को भारतीय साहित्य में समुचित तरीके से अभिव्यक्ति दी गयी है। भारतीय संस्कृति का यह समन्वित रूप संस्कृति भाषा के माध्यम से रामायण महाभारत गीता कालिदास-भवभूति-भास के काव्यों और नाटकों के माध्यम से बार-बार व्यक्त हुआ है। तमिल का संगम साहित्य तेलुगु का अवधान साहित्य हिंदी का भक्ति साहित्य मराठी को पोवाड़ा बंगला का मंगल नीति आदि भारतीय उद्यान के अनमोल फूल हैं इनकी संयुक्त माला निश्चय ही 'समेकित भारतीय संस्कृति' का प्रतिनिधित्व करती है। तुलसीदास मध्यकाल में भारतीय संस्कृति के समन्वय के सबसे बड़े कवि के रूप में नजर आते हैं।

भारत की संस्कृति विश्व की समस्त संस्कृतियों के लिए मार्गदर्षिका है। इस संस्कृति में वह विशेषता है, जो नित्य प्रतिदिन नवीन होती हुई समस्त संस्कृतियों को परिपोषित करती हुई उन्हें मातृत्व का आह्लाद प्रदान कर सकती है। भारत की सनातन संस्कृति न केवल भारतीयों को एकजुट रखने में सामर्थ्यशालिनी है अपितु इस सार्वभौम संस्कृति में संसार के सभी राष्ट्रों को एकसूत्र में बाँधने का परम-तत्त्व भी समाया हुआ है। इस सनातन संस्कृति के चार मूल-सिद्धान्त हैं जो विश्व-शान्ति का मार्ग प्रशस्त करने में पूर्ण सक्षम है- वसुधैव कुटुम्बकम् - समस्त विश्व एक कुटुम्ब या परिवार है। एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति - सत्य एक है। सर्वे भवन्तु सुखिनः - सभी का कल्याण हो, सभी सुखी होवें। यद् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे - जो पिण्ड में है, वही ब्रह्माण्ड में है। भारतीय संस्कृति का यह वैचारिक सैद्धान्तिक आधार इतना सुदृढ़ तथा समन्वयकारी है कि यह समस्त विश्व को एकसूत्र में पिरोने की क्षमता रखता है। अध्यात्मिकता त्याग सत्य और अहिंसा पर आधारित यह संस्कृति मनुष्य के आचरण को सुधार कर समाज में एकता और बन्धुत्व के भावों का समावेश करती है तथा देश और समाज से लेने की अपेक्षा देने की प्रेरणा देती है। भारतीय संस्कृति कभी कठोर नहीं रही इसलिए यह आधुनिक काल में भी गर्व के साथ जिंदा है। यह दूसरी संस्कृतियों की विशेषताएं सही समय पर अपना लेती है और इस तरह एक समकालीन और स्वीकार्य परंपरा के तौर पर बाहर आती है। समय के साथ चलते रहना भारतीय संस्कृति की सबसे अनूठी बात है इसकी कुछ बातें हैं जो पूरी दुनिया में मशहूर हैं, जैसेःअभिवादन के तरीके, फूल माला, भारतीय शादियां, भारतीय कपड़े, भारतीय गहने, मेहंदी, प्रकृति की पूजा, प्रदर्शन कला, नृत्य, रंगमंच, संगीत, फिल्में, मूर्तियां, मेले और त्योहार। इतनी विविधता के बावजूद भारत में लोग एकजुट हैं और अपनी संस्कृति और परंपरा पर गर्व महसूस करते हैं। चाहे अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह हो या सौंदर्य प्रतियोगिताएं विश्व मंच पर भारत ने प्रतिभा और संस्कृति का प्रदर्शन किया है। कई शासक यहां आए लेकिन इसकी संस्कृति को नुकसान नहीं पहुंचा पाए भारतीयों ने अपने सांस्कृतिक मूल्यों को सहेज कर रखा। समय के साथ चलने और लचीलेपन के कारण भारतीय संस्कृति आधुनिक और स्वीकार्य भी है।

भारत का लोकतंत्र सनातन हिंदू संस्कृति के कारण ही सफल हो पाया है इस विश्व को इस देश को इस समाज को बचाने की शुरुआत तो अपने परिवार से ही करनी होगी। अच्छी आदतों को अपने घर से ही प्रारम्भ करना होगा। आज आश्यकता इस बात की है कि हम अपनी युवा पीढ़ी को हमारे देश के महापुरुषों सनातन हिंदू संस्कृति एवं महान संस्कारों हमारे समृद्ध इतिहास की जानकारी दें। तिलक लगाना, अपने से बड़ों का चरण स्पर्श करना, बुजुर्गों से आशीर्वाद लेना, आदि यह सब हमारे संस्कारों में हुआ करता है। प्राचीन भारत में परिवारों में यह प्रथा थी कि भोजन को ग्रहण करने के पहिले 5 कौर निकालते थे एक कौर गाय माता के लिए, एक कौर कौवे के लिए, एक कौर श्वान के लिए, आदि तब परमात्मा को भोग लगाया जाता था और फिर भोजन ग्रहण किया जाता था। लगभग प्रत्येक परिवार में यज्ञ किए जाने की प्रथा का पालन होता था। गांव में बेटी की शादी होने की स्थिति में गांव के समस्त परिवार मिलकर उस शादी की व्यवस्था करते थे। जैसे वह बेटी किसी विशेष परिवार की न होकर पूरे गांव की बेटी हो। साथ ही, इस शादी में होने वाले पूरे खर्च का सभी परिवार मिलकर वहन करते थे। मातृशक्ति का सम्मान तो भारतीय संस्कृति के मूल में है। माताओं को देवी का रूप माना जाता रहा है। अन्य देश भारतीय संस्कारों एवं परम्पराओं को अपनाते जा रहे हैं परंतु हमारी युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कारों की ओर आकर्षित होती जा रही है। भारत में भी कहीं कहीं परिवार टूट रहे हैं भारतीय संस्कार कहीं पीछे छूट रहे हैं इसलिए आज समाज के हर वर्ग को आपस में जोड़ने की आवश्यकता है। सनातन हिंदू संस्कृति की मूल भावना ही आपस में जोड़ने की है। परिवार बचेगा तभी यह देश भी बचेगा।

आज आवश्यकता है कि हम अतीत की सांस्कृतिक धरोहर को सहेजें और सवारें तथा उसकी मजबूत आधारशिला पर खडे.होकर नए मूल्यों व नई संस्कृति को निर्मित एवं विकसित करें। संस्कृति के प्रकाश में ही भारत अपने वैयक्तिक और बैश्विक जीवन मूल्यों की रक्षा कर सकता है। भारत देश की प्राचीन संस्कृति इस बात को पुष्ट करती है कि यहाँ के शासकों ने सर्वधर्मसमभाव की नीति अपनाई। यहाँ की लोकतन्त्रीय व्यवस्था में हर धर्म व सम्प्रदाय को समान आदर दिया गया। यहाँ के शासकों ने सदैव इसी नीति का अनुसरण किया। यह भारत की एक आदर्श परम्परा थी जिसका पालन राजतन्त्र ने भी किया और लोकतन्त्र ने भी। भारतीय संस्कृति का प्राचीन स्वरूप 'विविधता में एकता' सुरक्षित है तथापि एकता के आधारभूत रंग धूमिल पड़ गए हैं और विविधता के सतही रंग उभर कर हमारे समक्ष आ गए हैं।

सनातन जीवन का आधार स्त्री

भारतीय जीवन संस्कृति में स्त्री तत्व आधार के रूप में स्थापित है। यहां स्त्री के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं है। यहां स्त्री तत्व इस रूप में स्थापित है कि जीवन के संचालन की समस्त शक्तियां जैसे विधाता ने उसी को सौंप दिया है। घर परिवार और समाज के निर्माण में ही नहीं बल्कि संचालन का भी सारा दायित्व स्त्री पर ही है। इसको प्रमाणित करने की अलग से किसी जुगत की आवश्यकता नहीं है। हम सभी जिन्होंने 50 वर्ष की आयु से अधिक की उम्र बिताई है , केवल अपने बचपन से अभी तक की यात्रा का अवलोकन करें तो सब कुछ समझ में आ जायेगा। यह इतनी आसानी से समझ में आएगा कि आपको स्वयं यह महसूस होगा कि पश्चिमी नकल के साथ भारत में चलाए जाने वाले स्त्री विमर्श की यहां कोई बुनियाद है ही नहीं।

अनिता अग्रवाल

"भारत की नारी वास्तव में कितनी महत्वपूर्ण और कितनी भारी रही है, इसकी अलग से विवेचना की आवश्यकता ही नहीं। केवल अपने इतिहास को दृष्टा भाव से देखिए, देख कर ही हर किसी का मन कृतज्ञ भाव से भर जाएगा। यह भारतीय सनातन मूल्य और जीवन संस्कृति ही का प्रभाव है जिसको अभी हाल तक कुछ दशकों पहले तक हमने संजो कर रखा था।"

लेखिका संस्कृति पर्व की सहायक सम्पादक और साहित्यकार हैं।

साहित्यकार

आप स्वयं अपने बीते जीवन में झांक कर देख सकते हैं। बचपन याद कीजिए। सभी घरों में एक बड़की माई, बड़की बुआ, अम्मा, बड़की भाभी आदि संज्ञाओं के साथ घर की एक वरिष्ठतम स्त्री होती थीं जिनके आंचल में घर की सारी चाबियां बंधी होती थीं। ये दादी या उनसे भी पहले की पीढ़ी की कोई भी स्त्री हो सकती थीं। घर संयुक्त होते थे। घरों के पशुधन, व्यवसाय अथवा कृषि के सभी कार्यों की दैनिक रिपोर्ट इनके पास ही रहती थी। घर का मुख्य पुरुष भी इन्ही को रिपोर्ट करता था। घर के बाहर कोई पुरुष चाहे जितनी मर्दानगी का प्रदर्शन कर के रहे लेकिन घर में प्रवेश करते ही उसको इस बड़की के अनुशासन के अधीन ही व्यवहार करना पड़ता था। घर के सामान्य कार्यों से लेकर बड़े बड़े सामाजिक, धार्मिक, सामूहिक आयोजनों और पर्व

त्योहारों के अलावा घर में होने वाले यज्ञोपवीत, विवाह, अन्य उत्सवों आदि की रूपरेखा भी ये बड़की ही तय कर देती थीं और उसी का क्रियान्वयन सभी करने को बाध्य होते थे। घर में किसके कैसे कपड़े लाने हैं, मेहमान के आने पर किस प्रकार की व्यवस्था करनी है, किसकी कैसी विदाई करनी है, किसको क्या लेना देना है, किसको किस तरह से रहना है, घर के अंदर खाने पीने से लेकर मिठाई, आचार, घी इत्यादि जैसी वस्तुओं के प्रयोग तक के लिए इस बड़की से ही सभी को अनुमति लेनी होती थी। इस बड़की के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता था।

कितनी शक्तिशाली होती थी यह बड़की। इसकी कल्पना आज की पीढ़ी भले ही नहीं कर सकती लेकिन जिन्होंने 50 वर्ष के पहले वाले परिवारों को देखा है और जीया है उनकी इसका आभास अवश्य होगा। आज जब भारतीय समाज में स्त्री विमर्श के नाम पर होने वाली चर्चाओं और लिखे जाने वाले साहित्य का अवलोकन किया जाता है तो कई बार हंसी भी आती है और लोक भाषा में कहें तो गुनान भी होता है।

यह भारत की जीवन संस्कृति ही तो है जिसमे जब कोई सैनिक या योद्धा युद्ध के मैदान के लिए प्रस्थान करता था तो उसकी पत्नी अथवा माता उसकी आरती उतारती थी, तिलक लगाती थी और विजय का आशीर्वाद देकर घर से विदा करती थी। यह स्त्री तत्व की शक्ति संधान वाली छवि केवल भारत की जीवन संस्कृति में ही दिखती है। राजे रजवाड़ों के परिवारों की असंख्य कथाओं में यह शक्ति संधान का दृश्य सदियों से दिखता है।

भारत की नारी वास्तव में कितनी महत्वपूर्ण और कितनी भारी रही है, इसकी अलग से विवेचना की आवश्यकता ही नहीं। केवल अपने इतिहास को दृष्टा भाव से देखिए, देख कर ही हर किसी का मन कृतज्ञ भाव से भर जाएगा। यह भारतीय सनातन मूल्य और जीवन संस्कृति ही का प्रभाव है जिसको अभी हाल तक कुछ दशकों पहले तक हमने संजो कर रखा था।

अब प्रश्न यह उठता है कि यह विचलन कहां से आ गया। जीवन में ऐसा क्या घट गया जिसमे पश्चिम से स्त्री विमर्श की आने वाली धारा को भारतीय संदर्भ ने स्वीकार कर लिए। वजह यह है कि हमने अपने जीवन दर्शन को न तो समझने की कोशिश की और न ही उस पर कभी गंभीरता से विचार ही किया। हम उन सभ्यताओं से सीखने की कोशिश में लग गए जिनमे स्त्री केवल एक देह है जो भोगने की वस्तु है। हमने भारत के सनातन मूल्य में स्थापित स्त्री, नारी को भोगवादी पश्चिमी अथवा म्लेच्छ सभ्यता की उस औरत के रूप में देखना शुरू कर दिया जिसके पास न तो कोई अधिकार था न ही उसकी क्षमता को बाहर आने देने की कोई संस्कारगत व्यवस्था ही थी।

लगभग एक हजार वर्षों में विभिन्न आक्रमणों से जूझते भारत के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन में आए अनेक बदलाओं में से सबसे बड़ी विडंबना के साथ स्त्री अथवा नारी सम्मान और उसकी श्रेष्ठता की उपेक्षा का भाव सबसे बड़ा कारण है जिसने यहां के उस शक्ति स्वरूप स्त्री तत्व की महत्ता को धुंधला कर दिया। हमारे सामाजिक चिंतक, लेखक, विचारक और खासकर हमारे देश की कथित शिक्षित स्त्रियां भी उसी दौड़ में शामिल हो गईं जिस तरफ पश्चिमी समाज दौड़ रहा था। भारत की स्वाधीनता के बाद खास तौर पर हमारी शिक्षा नीति और सामाजिक राजनीतिक चिंतन प्रणाली के कारण यह विसंगति बढ़ती चली गई। पश्चिम के अंधानुकरण और केवल अनुवादित साहित्य की बदौलत खड़े हुए चिंतक समाज में भारत की महान नारी को भी उसी मुकाम पर खड़ा कर दिया गया जहां पश्चिम की केवल भोग्या स्त्री खड़ी थी। विमर्श चलाए जाने लगे। बातें होने लगीं लेकिन अपनी जड़ों को देखने की कोशिश नहीं की गई।

यह सोचने की बात है कि जिस देश की पूरी लोक शैली और जीवन परंपरा केवल नारी केंद्रित भाव में रही हो वहां इस विमर्श से मिलने वाला भी क्या है। इसको केवल एक उदाहरण से समझा जा सकता है। श्रीमद भगवद्गीता से तो अब सभी परिचित हैं। इस महान ग्रंथ के आरंभ में ही जब अर्जुन को संशय होता है तो वह भगवान श्रीकृष्ण से क्या प्रश्न करते हैं? इस प्रसंग को पढ़ना और समझना चाहिए। अर्जुन कहते हैं कि जब युद्ध होगा, सैनिक या पुरुष मारे जायेंगे, उनकी पत्नियां, बेटियां अनाथ होंगी, ऐसी दशा में ये सभी स्त्रियां शत्रुओं के हाथ लगेंगी और दूषित हो जाएंगी। स्त्री जब दूषित होगी तो संबंधित कुल के धर्म का क्षय हो जायेगा क्योंकि वर्णसंकर संतानें पैदा होंगी जिनका कोई कुल धर्म नहीं होगा। इससे सम्बंधित कुल के पितरों का तर्पण भी नहीं होगा। पितर भी प्रभावित होंगे। कुल धर्म का नाश हो जायेगा।

तात्पर्य यह कि भारत की स्त्री ही है जो अपने कुल धर्म की रक्षा करने की क्षमता रखती है। यह सब यहां के लोक जीवन में बहुत हद तक आज भी दिखता ही है।

जिस राष्ट्र की सामाजिक , राजनैतिक आर्थिक, सामूहिक, कौटुंबिक विरासत इतनी शक्तिशाली और महान रही है उस राष्ट्र की स्त्री कभी भी किसी भी हाल में शक्तिहीन कैसे हो सकती है।

सनातन के विरुद्ध षड्यंत्र

सनातन का अर्थ है जो शाश्वत हो, सदा के लिए सत्य हो। जिन बातों का शाश्वत महत्व हो वही सनातन कही गई है। जैसे सत्य सनातन है। ईश्वर ही सत्य है, आत्मा ही सत्य है, मोक्ष ही सत्य है और इस सत्य के मार्ग को बताने वाला धर्म ही सनातन धर्म भी सत्य है। वह सत्य जो अनादि काल से चला आ रहा है और जिसका कभी भी अंत नहीं होगा वह ही सनातन या शाश्वत है। जिनका न प्रारंभ है और जिनका न अंत है उस सत्य को ही सनातन कहते हैं। यही सनातन धर्म का सत्य है।

प्रज्ञा मिश्रा

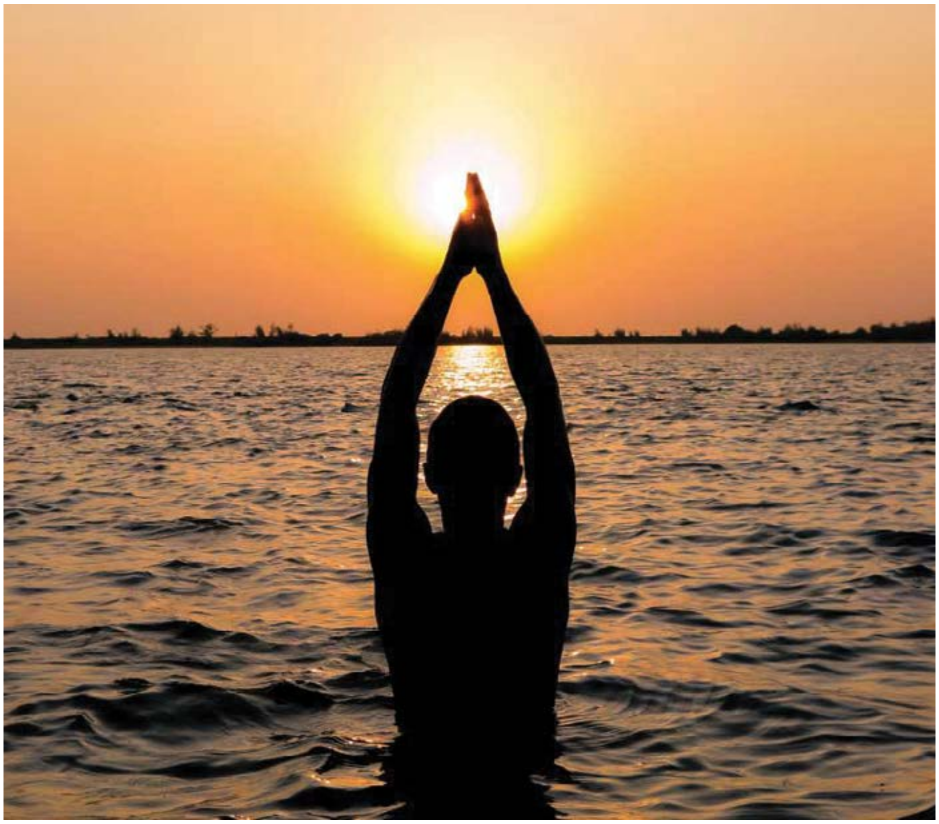

वैदिक या हिंदू धर्म को इसलिए सनातन धर्म कहा जाता है, क्योंकि यही एकमात्र धर्म है जो ईश्वर, आत्मा और मोक्ष को तत्व और ध्यान से जानने का मार्ग बताता है। मोक्ष की अवधारणा इसी सनातन धर्म की देन है। एकनिष्ठता, ध्यान, मौन और तप सहित यम-नियम के अभ्यास और जागरण का मोक्ष मार्ग है अन्य कोई मोक्ष का मार्ग नहीं है। मोक्ष से ही आत्मज्ञान और ईश्वर का ज्ञान होता है। यही सनातन धर्म का सत्य है।

> भेद भाषाओं में होता है, अनुवादकों में होता है, संस्कृतियों में होता है, परम्पराओं में होता है, सिद्धांतों में होता है, लेकिन सत्य में नहीं। सनातन धर्म की अवधारणा स्वयं में अनेक आयामों को समेटे हुए है। धर्म, दर्शन, संस्कृति, कला, संगीत , साहित्य रीति रिवाज आदि अनेकों पहलुओं से समृद्ध है सनातन संस्कृति।

सनातन धर्म उन मूल्यों, विश्वासों, संस्थानों और प्रणालियों को संदर्भित करता है , जिन पर जीवन और ब्रह्मांड स्वयं खड़ा है - 'धारयति इति धर्म '

जैसा कि संस्कृत में सनातन का अर्थ है 'शाश्वत', 'सनातन धर्म' का तात्पर्य 'शाश्वत धर्म' से है, जो ब्रह्मांड का अपरिवर्तनीय क्रम है। जो तत्व सदा, सर्वदा, निर्लेप, निरंजन, निर्विकार और सदैव स्वरूप में स्थित रहता है उसे सनातन या शाश्वत सत्य कहते हैं। वेदों का ब्रह्म और गीता का स्थितप्रज्ञ ही शाश्वत सत्य है। जड़, प्राण, मन, आत्मा और ब्रह्म शाश्वत सत्य की श्रेणी में आते हैं। सृष्टि व ईश्वर (ब्रह्म) अनादि, अनंत, सनातन और सर्वविभु

लेखिका संस्कृति पर्व की सह-सम्पादक और साहित्यकार हैं।

हैं। सनातन धर्म के सत्य को जन्म देने वाले अलग-अलग काल में अनेक ऋषि हुए हैं। उक्त ऋषियों को दृष्टा कहा जाता है। अर्थात जिन्होंने सत्य को जैसा देखा, वैसा कहा। इसीलिए सभी ऋषियों की बातों में एकरूपता है। जो उक्त ऋषियों की बातों को नहीं समझ पाते वही उसमें भेद करते हैं। भेद भाषाओं में होता है, अनुवादकों में होता है, संस्कृतियों में होता है, परम्पराओं में होता है, सिद्धांतों में होता है, लेकिन सत्य में नहीं। सनातन धर्म की अवधारणा स्वयं में अनेक आयामों को समेटे हुए है। धर्म, दर्शन , संस्कृति, कला, संगीत , साहित्य रीति रिवाज आदि अनेकों पहलुओं से समृद्ध है सनातन संस्कृति। इतनी समृद्ध संस्कृति के विरुद्ध ईर्ष्या और षड्यंत्र स्वाभाविक ही है। सदियों से जानबूझकर , सोची समझी रणनीति के तहत हमारी संस्कृति की जड़ों को खोखला करने का प्रयत्न किया जाता रहा है। दुखद बात यह है कि स्वयं को सनातन का पुरोधा कहने वाले लोग भी इस षड्यंत्र का हिस्सा बनते रहे हैं, कभी विचाधारा के टकराव के नाम पर तो कभी राजनीतिक वैमनस्य के कारण। आइए , सनातन संस्कृति के विरुद्ध चले आ रहे षड्यंत्रों की जरा बारीकी से पड़ताल करते हैं।औपनिवेशिक कालः ब्रिटिशर्स ने जब भारत के अधिकांश क्षेत्रों पर आधिपत्य स्थापित कर किया तो उस आधिपत्य को बनाए रखने के लिए उन्हें यह आवश्यक लगा कि यहाँ की जनता के जीवन में रची बसी सभ्यता और संस्कृति की गहरी जड़ों को खोखला कर दिया जाए। क्योंकि वे यह समझ चुके थे कि भारतीयों के लिए उनका धर्म और संस्कृति एक ठोस आधार है। भारतीयों को दीर्घकाल तक गुलाम बनाए रखने के लिए आवश्यक था कि उनके मजबूत आधारों पर चोट कर के उन्हें उनकी सभ्यता और संस्कृति के प्रति हीन भावना से भर दिया जाए।यह काम बड़ी ही चालाकी से किया गया मैक्स मूलर तथाकथित ब्रिटिश साहित्यकार, जिसका नाम बहुत गर्व से यह कहते हुए लिया जाता है कि मूलर को भारतीय ग्रंथों में बहुत रुचि थी , उसकी मंशा ही भारतीय ग्रंथों को विकृत रूप में प्रस्तुत करने की थी ताकि ईसाई धर्म को भारत में स्थापित करने में आसानी हो। इस संदर्भ में उसका एक बड़ा प्रसिद्ध वक्तव्य भी इतिहास में देखने को मिलता है।

'India has been conquered once, but India must be conquered again and the second conquest should be conquest by the education.'

साफ है कि शिक्षा से मैक्स मूलर का क्या अभिप्राय रहा होगा - ईसाईयत की शिक्षा और इसके लिए भारतीय जन के मानस पर अंकित सनातन शिक्षा पद्धति के छाप को मिटाना ही एक मात्र ध्येय। मैक्स मूलर की दुर्भावना का एक बड़ा प्रमाण उनके द्वारा पत्नी को लिखे गए पत्र में भी मिलता है जिसमें उसने अपनी पत्नी को बताया था कि उसकी नियुक्ति वेदों के इस तरह से अनुवाद करने के लिए की गई है ताकि भारतीयों का उस पर से विश्वास उठ जाए। उनका दृढ़ विश्वास था कि ईसाई धर्म के विचारों को पूर्व पर थोपने के लिए हिंदू धर्म में सुधार की आवश्यकता है।उन्होंने ब्रह्म समाज आंदोलन का समर्थन किया। उनका मानना था कि ब्रह्म समाज एक भारतीय रूप 'ईसाई धर्म' का निर्माण करेगा, क्योंकि वह भारत में ईसाई धर्म लाने के लिए बहुत उत्सुक थे ताकि हिंदुओं का धर्म बर्बाद हो जाए। उन्हें ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा प्राचीन भारतीय ग्रंथों का अनुवाद करने के लिए विशेष रूप से नियुक्त किया गया था। उनके अटूट ईसाई विश्वास ने यह सुनिश्चित किया कि अनुवाद वास्तविक अर्थ को प्रतिबिंबित न करें बल्कि उनकी मान्यताओं, और विचारों को प्रतिबिंबित करें जो उनके भुगतानकर्ताओं यानि ईस्ट इंडिया कंपनी के अनुकूल हों।

मैक्स मूलर को आर्यन आक्रमण सिद्धांत (एआईटी) के प्राथमिक प्रस्तावक के रूप में भी जाना जाता है। ब्रिटिश शासन द्वारा तत्कालीन समय में मान्यता प्राप्त यह सिद्धांत बताता है कि इंडो-यूरोपीय वक्ताओं के एक समूह 'आर्यों' ने 1500 ईसा पूर्व के आसपास भारत पर आक्रमण किया, और पहले से मौजूद द्रविड़ संस्कृतियों की जगह ले ली। मजबूत ऐतिहासिक, वैज्ञानिक या आनुवंशिक साक्ष्य की कमी के बावजूद, इस सिद्धांत को काफी समय तक व्यापक स्वीकृति मिली। एआईटी सिर्फ एक अकादमिक प्रस्ताव से कहीं अधिक था। इसके महत्वपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक निहितार्थ थे। मैक्स मूलर ने अपने मानवविज्ञानी नेटवर्क के सहयोग से, भारत में ईसाई मिशनरियों की उपस्थिति और गतिविधियों को मान्य करने के साधन के रूप में इस अवधारणा को बढ़ावा दिया। संक्षेप में, सिद्धांत ने कहा कि वैदिक लोग, जिन्हें मूलर ने 'आर्यन' कहा था, भारत के बाहर से आए प्रवासी थे।

इस परिकल्पना का एक और भी भयावह आयाम था। वैदिक लोगों और उनकी भाषा संस्कृत को विदेशी तत्वों के रूप में प्रस्तुत करके, सिद्धांत ने भारतीय समाज के भीतर विभाजन उत्पन्न करने का काम किया। स्थानीय जनता को वैदिक लोगों को घुसपैठियों के रूप में समझने के लिए मजबूर किया गया था, और भारत में कई क्षेत्रीय भाषाओं की भाषाई जड़ - संस्कृत को एक आयातित भाषा के रूप में बदनाम किया गया था। मूलर के साथ, लॉर्ड मैकाले ने गुरुकुल संस्थानों और संस्कृत शैक्षिक सुविधाओं को बंद करने के साथ-साथ अंग्रेजी शिक्षा की शुरुआत करके इस भाषाई परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी कथा को और प्रचारित करने के लिए, मूलर ने 'मूलरः बायोग्राफी ऑफ़ वर्ड्स एंड द होम ऑफ़ आर्यंस' नामक पुस्तक लिखी। स्वतंत्रता के बाद, वामपंथी विचारधारा की ओर झुकाव रखने वाले इतिहासकारों के सौजन्य से, भारत के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की देखरेख में इस कथा को प्रोत्साहन मिला।

मूलर और मैकाले के संयुक्त प्रयास 1994 में फलीभूत हुए जब संविधान की 8वीं अनुसूची के परिणामस्वरूप मात्र समानता के तर्क

के कारण संस्कृत शिक्षा को मूल भाषा के रूप में अमान्य कर दिया गया। सुप्रीम कोर्ट में एक मामले के दौरान, अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ने तर्क दिया कि यदि केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) में संस्कृत पढ़ाई जानी है, तो ऐसा केवल तभी किया जा सकता है जब अन्य विदेशी भाषाएं, जैसे फ्रेंच, जर्मन, अरबी, और फ़ारसी को भी सुविधा प्रदान की गई। यह संस्कृत के पुनर्वर्गीकरण में एक महत्वपूर्ण क्षण था - भारत की मूल भाषा को अब अरबी और फ़ारसी जैसी विदेशी भाषाओं के बराबर माना जा रहा था। इस तर्क के पीछे का उद्देश्य विदेशी भाषा के रूप में पुनर्वर्गीकृत स्थिति की आड़ में संस्कृत शिक्षा को हटाना था।

आइए अब बात करते हैं मैकाले की, जिसे वर्तमान भारतीय शिक्षा पद्धति का जनक कहा जाता है। मैकाले द्वारा प्रस्तुत मैकाले मिनट्स से ही उसके दूषित विचारों की झलक मिल जाती है। जिसके दूसरे ही बिंदु में उसने कहा था कि विज्ञान सहित अन्य भाषाओं की शिक्षा भी अंग्रेजी में ही दी जानी चाहिए, जो कि एक समृद्ध भाषा है। तीसरे बिंदु में उसने कहा था कि भारत में 'साहित्य को समृद्ध करने' और ब्रिटिश शासित क्षेत्रों के लोगों का 'विज्ञान से परिचय कराना और इससे सम्बंधित ज्ञान देना' ही इस बिल का उद्देश्य है। उसने कहा था कि अरबी और संस्कृत में शिक्षा देने का अर्थ होगा और नीचे जाना। उसने कहा था कि इन दोनों भाषाओं में शिक्षा देने का अर्थ होगा कि फिर इसका कोई उपयोग नहीं रह जाएगा। उसने अपने इस मिनट में कई बार अरबी और संस्कृत भाषाओं के लिए घृणास्पद शब्दों का प्रयोग किया है। उसने कहा था कि भारत की मातृभाषाओं में लेशमात्र भी विज्ञान और साहित्य सम्बंधित ज्ञान नहीं है, साथ ही ये इतनी घटिया असभ्य हैं कि अगर उन्हें समृद्ध बनाने की कोशिश की जाए तब भी अनुवाद लगभग असंभव हो जाएगा। तत्कालीन ब्रिटिश सरकार में 'काउंसिल ऑफ इंडिया' के सदस्य होने के नाते उसने अपने द्वारा पेश किए गए इस प्रस्ताव में कहा था कि एक अच्छे यूरोपियन पुस्तकालय की एक अलमारी पूरे भारत और अरब के साहित्य से ज्यादा समृद्ध है। उसने इस बात पर आपत्ति जताई थी कि आखिर किसी भारतीय को 'शिक्षित' कैसे कहा जा सकता है, जब तक वो मिल्टन की कविताओं, लोकी के मेटाफिजिक्स और न्यूटन के फिजिक्स से वाकिफ न होकर अपनी 'पवित्र पुस्तकों' में केवल कुश घास का उपयोग और देवताओं को भोजन चढ़ाना ही सीखा हो। इन दो तथाकथित ब्रिटिश विद्वानों तथा ऐसे और अनेकों विद्वानों ने हमारी सनातन संस्कृति के साथ कैसा घिनौना षड्यंत्र रचा,उपरोक्त प्रस्तुत बिंदु इसकी एक झलक मात्र हैं।

"भारत में जब अंग्रेजों का शासन प्रारंभ हुआ तब ईसाई धर्म का व्यापक प्रचार प्रसार हुआ। अंग्रेजों के काल में दक्षिण भारत के अलावा पश्चिम बंगाल और पूर्वोत्तर में ईसाई धर्म के लाखों प्रचारकों ने इस धर्म को फैलाया। उस दौरान शासन की ओर से ईसाई बनने पर लोगों को कई तरह की रियायत मिल जाती थी। बहुतों को बड़े पद पर बैठा दिया जाता था साथ ही ग्रामिण क्षेत्रों में लोगों को जमींदार बना दिया जाता था। अंग्रेजों के काल में कॉन्वेंट स्कूल और चर्च के माध्यम से ईसाई संस्कृति और धर्म का व्यापक प्रचार और प्रसार हुआ।"

मिशनरी एजेंडा

ईसाई धर्म भारत में थॉमस द एपोस्टल द्वारा लाया गया था, जिन्होंने 52 ईस्वी में केरल का दौरा किया था। वर्तमान में ईसाई धर्म भारत में हिंदू धर्म और इस्लाम के बाद तीसरा सबसे बड़ा धर्म है। सेंट थॉमस भारत के उत्तर पश्चिमी भाग में पहुंचे, और राजा गोंडोफेरेस और उनके भाई को बपतिस्मा दिया, जिससे भारत में ईसाई धर्म की शुरुआत हुई। जब सेंट थॉमस केरल पहुंचे, तो उन्होंने सात चर्चों की स्थापना की और वर्तमान केरल और तमिलनाडु में प्रचार किया। प्रसिद्ध अंग्रेजी बैपटिस्ट मिशनरी, विलियम कैरी 1793 में भारत आए और उन्होंने बंगाली तथा संस्कृत सहित कैसी भारतीय भाषाओं में बाइबिल का अनुवाद करने के साथ - साथ प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में काम करना शुरू किया जिसका बंगाल पर गहरा असर पड़ा। और भारत के अन्य भाग में उनका प्रसार आसान हो गया। 1813 और 1833 के अधिनियम ने मिशनरियों को भारत आने के लिए प्रेरित करने में अग्रणी भूमिका निभाई। भारत में जब अंग्रेजों का शासन प्रारंभ हुआ तब ईसाई धर्म का व्यापक प्रचार प्रसार हुआ। अंग्रेजों के काल में दक्षिण भारत के अलावा पश्चिम बंगाल और पूर्वोत्तर में ईसाई धर्म के लाखों प्रचारकों ने इस धर्म को फैलाया। उस दौरान शासन की ओर से ईसाई बनने पर लोगों को कई तरह की रियायत मिल जाती थी। बहुतों को बड़े पद पर बैठा दिया जाता था साथ ही ग्रामिण क्षेत्रों में लोगों को जमींदार बना दिया जाता था। अंग्रेजों के काल में कॉन्वेंट स्कूल और चर्च के माध्यम से ईसाई संस्कृति और धर्म का व्यापक प्रचार और प्रसार हुआ।

ऐसा व्यापक रूप से प्रचारित है कि भारत की आजादी के बाद 'मदर टेरेसा' ने सेवा की आड़ में बड़े पैमाने पर गरीब लोगों को ईसाई बनाया। इस संबंध में ओशो रजनीश ने कहा था कि उन्होंने लोगों के दुखों का शोषण कर उन्हें ईसाई बनाया। मदर टेरेसा और अधिक गरीब लोग चाहती है। ताकि वह उनका धर्मांतरण कैथोलिक धर्म में कर सके। यह

शुद्ध राजनीति है। सभी धर्म शोषण कर रहे है।

भारत में वर्तमान में प्रत्येक राज्य में बड़े पैमाने पर ईसाई धर्मप्रचारक मौजूद है जो मूलतः ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में सक्रिय हैं। अरुणालच प्रदेश में वर्ष 1971 में ईसाई समुदाय की संख्या 1 प्रतिशत थी जो वर्ष 2011 में बढ़कर 30 प्रतिशत हो गई है। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि भारतीय राज्यों में ईसाई प्रचारक किस तरह से सक्रिय हैं। इसी तरह नगालैंड में ईसाई जनसंख्या 93 प्रतिशत, मिजोरम में 90 प्रतिशत, मणिपुर में 41 प्रतिशत और मेघालय में 70 प्रतिशत हो गई है। चंगाई सभा और धन के बल पर भारत में ईसाई धर्म तेजी से फैल रहा है। भारत सरकार ने 2015 में छह धर्मों-हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध और जैन के जनसंख्या के आंकड़े जारी किए थे। इन आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2011 में भारत की कुल आबादी 121.09 करोड़ है। जारी जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक देश में ईसाइयों की आबादी 2.78 करोड़ है। जो देश की कुल आबादी का 2.3% है। ईसाइयों की जनसंख्या वृद्धि दर 15.5% रही, जबकि सिखों की 8.4%, बौद्धों की 6.1% और जैनियों की 5.4% है। देश में ईसाई की जनसंख्या हिंदू और मुस्लिम के बाद सबसे अधिक है।

मार्क्सवादी अवधारणा

वामपंथी उस पक्ष या विचारधारा को कहते हैं जो समाज को बदलकर उसमें अधिक आर्थिक और जातीय समानता लाना चाहते हैं। इस विचारधारा में समाज के उन लोगों के लिए सहानुभूति दिखाई जाती है जो किसी भी कारण से अन्य लोगों की तुलना में पिछड़ गए हों या शक्तिहीन हों। राजनीति के सन्दर्भ में 'वाम' और 'दक्षिण' शब्दों का प्रयोग फ़्रान्सीसी क्रान्ति के दौरान शुरू हुआ। फ़्रांस में क्रान्ति से पूर्व की 'एस्टेट जनरल' नामक संसद में सम्राट को हटाकर गणतंत्र स्थापित करने के समर्थक और धर्मनिरपेक्षता चाहने वाले अक्सर बाईं तरफ़ बैठते थे। आधुनिक काल में समाजवाद और साम्यवाद से सम्बंधित विचारधाराओं को बाईं या वामपंथी राजनीति में डाला जाता है। फ्रांस की क्रांति के समय वामपंथी विचारधारा को गणतंत्र की स्थापना की विचारधारा माना जा सकता है।

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात शीर्ष शिक्षण संस्थानों में काबिज वामपंथियों ने सनातन संस्कृति के विरुद्ध खूब विष वमन किया। एनसीईआरटी की तमाम पुस्तकें इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। वामपंथियों ने बड़ी चालाकी से तथ्यों के साथ इस प्रकार से छेड़छाड़ की जिससे कोमल मन मस्तिष्क वाले बालकों के दिमाग पर गलत तथ्यों की छाप पड़ जाए। अर्थ यह कि हमारी नींव को ही हमारी सभ्यता के प्रति दूषित विचारों से भर दिया जाए। उदाहरण स्वरूप , NCERT की छठी क्लास की किताब के पेज नंबर 46 पर ऋगवेद का उद्धरण देते हुए लिखा गया है-

'युद्ध में जीते गए धन का कुछ भाग सरदार रख लेते थे तथा कुछ हिस्सा पुरोहित को दिया जाता था। शेष धन आम लोगों में बाँट दिया जाता था। कुछ धन यज्ञ करने के लिए भी प्रयुक्त होता था। यज्ञ की आग में आहुति दी जाती थी। ये आहुतियां देवी-देवताओं को दी जाती थीं। घी अनाज और कभी-कभी जानवरों की भी आहुति दी जाती थी ।'

इन कुछ पंक्तियों में ही आपको साजिश के कई सूत्र मिल जाएंगे। पहली साजिश तो ये कि हम सुसभ्य लोग नहीं बल्कि लूट-पाट करने वाले कबीलाई डकैत थे। जैसे डकैत लूटे हुए धन को आपस में बाँटते हैं वैसे ही हम भी बाँटते थे। दूसरी साजिश ये कि हम यज्ञ के लिए लूटे हुए धन का इस्तेमाल करते थे और अधर्म से हासिल किए गए धन से देवी-देवताओं को आहुति देते थे। साफ है कि यज्ञ जैसी सर्वहितकारी, लोक - परलोक सुधारने वाली पुनीत क्रिया को ऐसे प्रस्तुत किया गया जिससे बच्चों के मन में उसके प्रति घृणा पैदा हो जाए। वैदिक संस्कृति के लोगों को लुटेरा और दास बनाने वाला बताने के बाद क्रिश्चियनिटी को महान बताने की साजिश कैसे रची गई उसका भी प्रमाण हम NCERT की किताबों के जरिए ही आपको दे रहे हैं. NCERT की ग्यारहवीं कक्षा की किताब में क्या पढ़ाया गया है उस पर जरा गौर कीजिए। इस किताब के पेज नंबर 68 में लिखा गया है- 'भूमध्यसागर और निकटवर्ती पूर्व (पश्चिम एशिया) दोनों ही क्षेत्रों में दासतां की जड़ें बहुत गहरी थीं और चौथी शताब्दी में ईसाई धर्म ने राज्य धर्म बनने के बाद भी इस गुलामी की प्रथा को कोई गंभीर चुनौती नहीं दी।' सहज भाव से लिखी गई इन पंक्तियों में पहली नजर में आपको साजिश के सूत्र नजर नहीं आएँगे, लेकिन हम आपको समझाते हैं। यहाँ यह बताने की कोशिश हुई है कि सनातन संस्कृति में कमजोर लोगों को दास बनाने की परंपरा थी, क्रिश्चियनिटी ने भी उसे कोई गंभीर चुनौती नहीं दी। इसका मतलब ये कि चुनौती तो

> "पश्चिमी समाज में योग की एक धुंधली तस्वीर प्रचलित है। इसी अज्ञानता का व्यवसायीकरण किया जा रहा है। बेशक, इसका मतलब यह नहीं है कि लोगों को उन चीज़ों से पीछे हट जाना चाहिए जिनका वे आनंद लेते हैं, जैसे कि योग। मगर मुख्य चिंता का विषय यह है कि योग की मूल अवधारणा को नकारा जा रहा है। आप यदि गूगल करें या यूट्यूब ही खोलें तो योग के नाम पर क्षीणकाय शरीर की स्त्रियों की तस्वीरें और विडियोज ही देखने को मिलते हैं।"

दी लेकिन वैसी नहीं जिसकी उनके मजहब से अपेक्षा थी। यानी वो मजहब मानवता पर आधारित था। सनातन धर्म कबीलाई था, क्रूर था। वामपंथी यहीं तक नहीं रुके। सनातन को नुकसान पहुंचाने की जिद में देश से बाहर बैठी देश विरोधी ताकतों से सहायता लेने की इनकी कहानी बहुत पुरानी है। आजकल समाचारों में फैला हुआ न्यूजक्लिक मामला इसका सबसे ताजा उदाहरण है।

सांस्कृतिक विनियोग

सांस्कृतिक विनियोग ने हमारे समाज में विभिन्न तरीकों से घुसपैठ की है जिसके बारे में अधिकांश जन अनभिज्ञ हैं। सांस्कृतिक विनियोग का सीधा और सरल अर्थ है - किसी संस्कृति के कुछ तत्वों को दूसरी संस्कृति द्वारा अपनाया जाना। उदाहरण के लिए, हिंदू धर्म के प्रमुख प्रतीक स्वस्तिक जैसे दिखने वाले हुकेनक्राज को स्वास्तिक से जोड़ दिया गया। स्वास्तिक सनातन संस्कृति में शुभ और सौभाग्य का प्रतीक है वहीं नाजियों के द्वारा अपनाए गए प्रतीक का शुभ और सौभाग्य से कोई लेना देना नहीं था। आइए अब थोड़ा विस्तार से देखें कि किस तरह सांस्कृतिक विनियोग ने सनातन संकृति के मूल तत्वों के साथ बड़ी सावधानीपूर्वक और सधे हुए कदमों के साथ मिलावट की है।

योग दर्शन

वर्तमान समय में योग का अर्थ केवल शारीरिक आसन ही हो गया है। जबकि मूलतः योग दर्शन भारतीय संस्कृति का केन्द्रीय विषय है। योग' शब्द संस्कृत धातु 'युज' से आया है, जिसका अर्थ है 'एकजुट होना' या 'जोड़ना'। योग का अभ्यास व्यक्तिगत चेतना (जीव-आत्मा) को सार्वभौमिक चेतना (परम-आत्मा) के साथ जोड़ता है। भगवद गीता स्वयं को सार्वभौमिक चेतना के साथ एकजुट करने के तीन मार्ग बताती है - ज्ञान योग, भक्ति योग, और कर्म योग - ज्ञान, भक्ति और कर्म के मार्ग। पाठ के प्रत्येक अध्याय का शीर्षक है, एक योग। भारतीय संस्कृति में गहरे तक रचा बसा योग विदेशों में फिटनेस इंडस्ट्री के रूप में परिवर्तित होता जा रहा है।

पश्चिमी समाज में योग की एक धुंधली तस्वीर प्रचलित है। इसी अज्ञानता का व्यवसायीकरण किया जा रहा है। बेशक, इसका मतलब यह नहीं है कि लोगों को उन चीज़ों से पीछे हट जाना चाहिए जिनका वे आनंद लेते हैं, जैसे कि योग। मगर मुख्य चिंता का विषय यह है कि योग की मूल अवधारणा को नकारा जा रहा है। आप यदि गूगल करें या यूट्यूब ही खोलें तो योग के नाम पर क्षीणकाय शरीर की स्त्रियों की तस्वीरें और विडियोज ही देखने को मिलते हैं। इनमे से कोई योग के मूल सिद्धांत के बारे में शायद हो बात करता हो। यह देखकर दुख होता है कि कैसे आत्म-साक्षात्कार के इस शानदार दर्शन को कमजोर कर दिया गया और इसे केवल शारीरिक आसन तक सीमित कर दिया गया है।

हमारे वैवाहिक रीति रिवाज में भी सांस्कृतिक विनियोग द्वारा ऐसी घुसपैठ हो चुकी है जिससे निजात पाना निकट भविष्य में असंभव ही लगता है। सनातन धर्म में विवाह को एक संस्कार माना गया है और एक एक लोकाचार उस संस्कार का ही हिस्सा हैं। मगर,हमारे उच्च वर्ग द्वारा पश्चिमी सभ्यता के वैवाहिक रीतियों के विनिमय के कारण हमारे लोकाचार अपना अर्थ और महत्व खोते जा रहे हैं। अब मध्यमवर्गीय समाज भी पाश्चात्य ढंग से वैवाहिक कार्यक्रमों को संपादित कर रहा है। यह विवश की मूल सनातन अवधारणा को खत्म कर रहा है। हमें समझना होगा कि हर संस्कृति के रीति रिवाजों के पीछे कैसी तार्किक आधार होते हैं जो अंततोगत्वा उसके अनुपालकों के लिए लाभकारी ही सिद्ध होते हैं। अब आते हैं लव जिहाद पर जो सीधा सीधा हमारी सनातन संस्कृति पर हमले के हथियार के तौर पर प्रयोग किया जा रहा है।

लव जिहाद दो शब्दों से मिलकर बना है। अंग्रेजी भाषा का शब्द लव यानि प्यार, मोहब्बत या इश्क और अरबी भाषा का शब्द जिहाद। जिसका मतलब होता है किसी मकसद को पूरा करने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा देना। जब एक धर्म विशेष को मानने वाले दूसरे धर्म की लड़कियों को अपने प्यार के जाल में फँसाकर उस लड़की का धर्म परिवर्तन करवा देते हैं तो इस पूरी प्रक्रिया को लव जिहाद का नाम दिया जाता है। इस मुद्दे ने तूल तब पकड़ा जब केरल हाईकोर्ट ने 25 मई को हिंदू महिला अखिला अशोकन की शादी को रद्द कर दिया था। निकाह से पहले अखिला ने धर्म परिवर्तन करके अपना नाम हादिया रख लिया था, जिसके खिलाफ अखिला उर्फ हादिया के माता-पिता ने केरल हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। आरोप लगाया गया कि उनकी बेटी को आतंकवादी संगठन आईएसआईएस में फिदायीन बनाने के लिए लव जिहाद का सहारा लिया गया है। जिसके बाद केरल हाईकोर्ट ने अखिला उर्फ हादिया और शफीन के निकाह को रद्द कर दिया था। उसके बाद अखिला उर्फ हादिया के पति शफीन ने केरल हाईकोर्ट के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी। इसी मामले पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने मामले की एनआईए जांच के आदेश दिए थे।

- ❖ यह सत्य है कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 के अंतर्गत सभी को अपनी पसंद से जीवन जीने का अधिकार प्राप्त है, किसी को गुमराह करना तो कहीं से भी न्यायोचित नहीं है।
- ❖ लव जिहाद भारत में एक सोची समझी रणनीति का हिस्सा है। यह इस्लाम के विस्तारवादी नीति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रचा गया कुचक्र है जिसकी शिकार हमारी मासूम लड़कियाँ बनती हैं।
- ❖ बाल विवाह जैसे विषय पर बुद्धिजीवी वर्ग चीख-चीख कर अपनी राय रखता है। लेकिन लव जेहाद की बात आते ही सेक्युलरिज्म का चोला ओढ़ कर बैठ जाते हैं तथाकथित बुध्दिजीवी।
- ❖ उत्तराखंड से लेकर केरल तक लव जिहाद के अनेकों केस सामने आ रहे हैं। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा इस संबंध में कानून भी लाया

गया है, मगर इस दिशा में अभी बहुत सी चुनौतियां बाकी हैं।

साल 2015 में अहमदाबाद के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट (Indian Institute of management) यानी आईआईएम (IIM) के प्रोफेसर धीरज शर्मा ने एक अध्ययन किया और ज़ाहिर किया कि बॉलीवुड की फिल्में हिंदू और सिख धर्म के खिलाफ लोगों के दिमाग में धीमा ज़हर भर रही हैं। प्रो. धीरज शर्मा इन दिनों आईआईएम रोहतक के डायरेक्टर हैं। नेटफ्लिक्स पर रिलीज़ हुई सुटेबल ब्वॉय में अगर एक मंदिर की मर्यादा को चोट पहुंचाने की कोशिश की गई तो वहीं नेटफ्लिक्स पर ही रिलीज़ हुई एक और फिल्म लुडो को लेकर भी सवाल उठे। इस फिल्म में चार कहानियों को एक में पिरोया गया लेकिन अनुराग बासु अपनी एंटी हिन्दू सोच का गटर यहां भी खोल गए। हिंदू धर्म और संस्कृति को निशाना बनाने के लिए अनुराग बसु ने पांडवों को गलत और कौरवों को सही करार दे दिया, वहीं ब्रह्म विष्णु और महेश के रूपों का भी उपहास उड़ाया गया।

एक रिसर्च के मुताबिक-

- ❖ बॉलीवुड की फिल्मों में 58% भ्रष्ट नेताओं को ब्राह्मण दिखाया गया है।
- ❖ 62% फिल्मों में बेइमान कारोबारी को वैश्य सरनेम वाला दिखाया गया है।
- ❖ फिल्मों में 74% फीसदी सिख किरदार मज़ाक का पात्र बनाया गया।
- ❖ जब किसी महिला को बदचलन दिखाने की बात आती है तो 78 फीसदी बार उनके नाम ईसाई वाले होते हैं।
- ❖ 84 प्रतिशत फिल्मों में मुस्लिम किरदारों को मजहब में पक्का यकीन रखने वाला, बेहद ईमानदार दिखाया गया है, यहां तक कि अगर कोई मुसलमान खलनायक हो तो वो भी उसूलों का पक्का होता है।

कुल मिलाकर बॉलीवुड में एक खास धड़ा इसी पर काम कर रहा है, उन्हें पक्का यकीन है कि वो अगर हिन्दू संस्कृति पर सवाल उठाएंगे तो ज़ाहिर है लिबरल सनातन समाज उन्हें कठघरे में नहीं खड़ा करेगा। जबकि मुस्लिम समुदाय पैगंबर मोहम्मद के एक कार्टून बनने पर ही बवाल खड़े कर देता है।यही वजह है कि कुछ फिल्मों में हिंदू धर्म के प्रति पक्षपाती रवैया देखा गया। माना जाता है कि मुंबई फिल्म इंडस्ट्री में ज़्यादातर पैसा अंडरवर्ल्ड से आता है और अंडरवर्ल्ड में मुस्लिम डॉन्स का बोलबाला है, लिहाज़ा यहां की फिल्मों से हिन्दुत्व के खिलाफ धीमा ज़हर लोगों के मस्तिष्क में घोला जा रहा है।

विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है सनातन

सबसे पहले वैदिक धर्म का प्रारंभ हुआ। लगभग 20000 ईसा पूर्व यह धर्म अस्तित्व में आया। पुराणों की रचना के बाद इसी में से पुराणिक धर्म का प्रारंभ हुआ। यह आदि काल से चलता आ रहा है और अनंत काल तक चलता रहेगा। हमें यह समझना होगा और इस बात का प्रसार करना होगा कि सम्पूर्ण विश्व के दुःखों, अशान्ति, हिंसा, उत्पात इत्यादि का वास्तविक हल केवल भारतीय संस्कृति में ही है,क्योंकि यह वही धरा-वही संस्कृति है जो केवल भौतिक ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक और इहलौकिक से लेकर पारलौकिक उन्नति का मार्ग दिखलाती है।

सनातन हिन्दू संस्कृति चैतन्य व वात्सल्यमयी है,यह सहज ही सबको आत्मसात कर उसे पोषण प्रदान करती है। समूचा विश्व भारत की ओर आशा भरी दृष्टि से देख रहा है और वह लालायित है भारत-भूमि से अविरल निःसृत होने वाली धर्म व अध्यात्म की सर्वकल्याणकारक अमृत धार का रसपान करने के लिए। हम अपने 'स्व' को पहचानें और उसके उत्कृष्ट मानबिन्दुओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति के स्वभाव का पथानुसरण करते हुए 'विश्वगुरू' भारत का नाम सार्थक सिद्ध करें। यानि किसी पर साम्राज्य चलाने की इच्छा नहीं अपितु मनुष्यत्व की प्रतिष्ठा के माध्यम से विश्व कल्याण की कामना करना ही सनातन का ध्येय है।

किन्तु ध्यान यह भी रखना होगा और यह आत्मावलोकन करना होगा कि जिस संस्कृति, जिस धर्म, जिस दर्शन, जिस संसार, जिस विरासत के कारण भारत का विश्वभर में अनन्य स्थान है उसको लेकर हमारी क्या धारणा है? क्या हम विश्व भर में सनातन धर्म की संस्कृति व संकेतों को अभी भी समझ नहीं पा रहे हैं ? यदि किसी भी प्रकार का ग्लानिबोध है तो उसको समाप्त करिए और अपनी भारतीय संस्कृति की ओर उन्मुख होकर स्वामी विवेकानन्द के शब्दानुसार ही- कट्टर सनातनी हिन्दू बनिए। यदि भारत अपने मूल को नहीं पहचानेगा तो समूचा विश्व जिस कारण से आपको यह अपार स्नेह दे रहा है क्या वह दीर्घकाल तक संभव होगा? यदि भारत नहीं जगेगा अपनी संस्कृति की ओर उन्मुख नहीं होगा तो कहीं ऐसा न हो कि भारतीय धर्म-दर्शन के लिए हमें पाश्चात्य देशों की ओर ही रुख करना पड़े, हालांकि ऐसा कभी संभव नहीं होगा। साथ ही साथ महर्षि अरविन्द की भविष्यवाणी यानि इक्कीसवीं सदी भारत की है यह हमें ध्यान रखना है। और यह भविष्यवाणी तभी फलित होगी और सत्य बनकर सभी के समक्ष होगी जब भारत अपने 'स्व' को पहचानकर अग्रसर होगा। अपने स्वत्व को पहचानिए,गर्वोन्नत होकर अपने मेरूदण्ड को सीधा करिए, सगर्व अपने हिन्दू होने की घोषणा करिए। और महान पुरखों की परम्परा से प्राप्त मेधा व विरासत को संजोइए,संरक्षण व सम्वर्द्धन करते हुए आने वाली पीढ़ियों के लिए वह करके जाइए जिसकी हमारे महान पुरखों ने कल्पना की थी। फिर सनातन के विरुद्ध कोई भी षड्यंत्र विश्व के किसी भी कोने से सिर नहीं उठा सकेगा।

बेटी बचाने की मुहिम में जुटीं डॉ. शिप्रा धर

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का उद्‌घोष है - 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'। यह संयोग ही है कि प्रधानमंत्री जी के लोकसभा क्षेत्र बनारस में एक ऐसी महिला चिकित्सक रहती हैं जिन्होंने बहुत पहले से अपने नर्सिंग होम को बेटियों का ही आश्रय बना दिया है। यहां जन्म लेने वाली बेटी के माता-पिता से कोई शुल्क तो नहीं ही लिया जाता, अलग से उन्हें बेटी को पालने के लिए मदद दी जाती है। यह संख्या इस समय 600 से अधिक हो चुकी है।

पंकज सिंह

"पापा चाहते थे कि मैं इंजीनियर बनूं, लेकिन मेरा मन किसी और चीज में लगा था। मुझे बचपन से ही लोगों की सेवा करना अच्छा लगता था। मैं चाहती थी कि बड़ी होकर कुछ ऐसा करूं, जिससे लोगों का फायदा हो सके। लेकिन मैंने सोचा नहीं था कि क्या करना है। तभी अपनी मां को देखकर मेरे मन में डॉक्टर बनने का ख्याल आया। मेरी मां बहुत बीमार रहती थीं। बार-बार उन्हें डॉक्टर के पास ले जाना पड़ता। उन्हें देखकर मुझे लगता कि अगर मैं डॉक्टर होती तो अपनी मां को ठीक कर पाती। अपनी मां के लिए ही मैंने तय किया कि मुझे डॉक्टर बनना है।"

वाराणसी की अशोक विहार कॉलोनी में एक नर्सिंग होम है, काशी मेडिकेयर एक दिन एक आदमी भागते हुए अपनी पत्नी को वहां लेकर पहुंचा। उसकी पत्नी मां बनने वाली थी। डॉक्टर आईं। महिला को ओपीडी में ले गईं। नॉर्मल डिलीवरी पॉसिबल नहीं थी, इसलिए डॉक्टर को उसका ऑपरेशन करना पड़ा। महिला का परिवार बहुत उम्मीदों से डॉक्टर का ऑपरेशन थिएटर से बाहर आने का इंतजार कर रहा था। डॉक्टर बाहर आईं। उन्होंने बताया, 'सब कुछ ठीक रहा। बेटी हुई है।' यह सुनते ही परिवार खुश होने की बजाय मायूस हो गया। अस्पताल की फीस जमा करने की बात हुई, तो बच्ची का पिता बोला कि एक तो लड़की हुई है ऊपर से पैसा भी जमा करना पड़ेगा। तभी डॉक्टर वहां आईं और उन्होंने परिवार से कहा कि लड़की हुई है, इसलिए आपको एक रुपए भी जमा नहीं करना है।

वही डॉक्टर हैं शिप्रा धर श्रीवास्तव। शिप्रा के हॉस्पिटल का स्लोगन है, 'बेटी नहीं है बोझ, आओ बदलें सोच।' शिप्रा बेटी पैदा होने पर मरीज से पैसे नहीं लेती। वह ऐसा क्यों करती हैं? उनके दिमाग में यह सोच कहां से आई? इस फैसले के बाद किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा? आइए सब कुछ उन्हीं से जानते हैं...

डॉ. शिप्रा बताती हैं कि एक दिन अचानक उनके पिता को ब्रेन हेमरेज हो गया, पिता ने कहा, अगर मैं मर जाऊं तो बेटी को नानी के घर भेज देना गोपालगंज जिले के धरनी धर श्रीवास्तव के घर एक लड़की का जन्म हुआ। नाम रखा शिप्रा धर। शिप्रा अपने मां पिता की अकेली बेटी थीं। पिता झारखंड के धनबाद जिले में इंजीनियर थे। वो चाहते थे कि शिप्रा बड़ी होकर उनकी तरह ही इंजीनियर बने।

माता-पिता शिप्रा के बचपन से ही उनकी पढ़ाई के लिए पैसे इकट्ठा करना शुरू कर दिया था। सब अच्छा चल रहा था। लेकिन एक दिन शिप्रा के पिता की तबीयत अचानक से खराब हो गई। उन्हें बहुत तेज सिर में दर्द और खून की उल्टी होने लगी। आफिस वालों ने धनबाद के जिला अस्पताल में एडमिट करवाया। पता चला कि उन्हें ब्रेन हेमरेज हो गया है और वह बहुत क्रिटिकल हैं। इस बीच में जब पापा को होश आया तो उन्होंने अपने ऑफिस वालों से कहा कि अगर मेरी मृत्यु हो गई तो मेरी बेटी को और उसकी मम्मी को उसके ननिहाल पहुंचा दीजिएगा। पापा का घर गांव में था तो शायद उन्हें डर था कि कहीं मेरी बेटी चार दीवारी में कैद ना हो जाए और उसकी पढ़ाई बाधित न हो जाए।

मेरी नानी का घर देवरिया जिले में था। इसलिए उन्होंने हमें नानी के घर भेजने के लिए कहा क्योंकि वो शहर में रहती थीं और वहां मेरी पढ़ाई बेहतर ढंग से हो पाती। शिप्रा बताती हैं कि पिता के मौत के वक्त वह इतनी छोटी थी कि कुछ भी ठीक से याद नहीं। पापा की सब कहानियां मां से ही सुनी हैं। पिता की मौत के बाद उनके साथियों ने अपना वादा निभाया और शिप्रा और उनकी मां को नानी के घर छोड़ दिया। शिप्रा का पूरा बचपन अपनी नानी के घर देवरिया में ही बीता है।मां बीमार रहती थीं इसलिए शिप्रा ने डॉक्टर बनने का फैसला किया शिप्रा बताती हैं कि नानी के घर ही उनकी पूरी पढ़ाई हुई। वो कहती हैं कि अपने आस-पास मैं लड़के और लड़कियों के बीच भेदभाव देखती थी, लेकिन मेरे साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ।

मैं बचपन से ही पढ़ने में अच्छी थी, इसलिए मेरी मां मेरी पढ़ाई का पूरा ध्यान रखती थीं। पापा चाहते थे कि मैं इंजीनियर बनूं, लेकिन मेरा मन किसी और चीज में लगा था। मुझे बचपन से ही लोगों की सेवा करना अच्छा लगता था। मैं चाहती थी कि बड़ी होकर कुछ ऐसा करूं, जिससे लोगों का फायदा हो सके। लेकिन

मैंने सोचा नहीं था कि क्या करना है। तभी अपनी मां को देखकर मेरे मन में डॉक्टर बनने का ख्याल आया। मेरी मां बहुत बीमार रहती थीं। बार-बार उन्हें डॉक्टर के पास ले जाना पड़ता। उन्हें देखकर मुझे लगता कि अगर मैं डॉक्टर होती तो अपनी मां को ठीक कर पाती। अपनी मां के लिए ही मैंने तय किया कि मुझे डॉक्टर बनना है।

मैंने साल 2000 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एमडी की पढ़ाई पूरी की। इसी बीच डॉ एम.के. श्रीवास्तव से मेरी शादी हो गई। बाद में हमने मिलकर वाराणसी की अशोक विहार कॉलोनी में काशी मेडिकेयर नाम से एक नर्सिंग होम खोला। बेटे के पैदा होने पर खुश तो बेटी पैदा होने से दुखी होते थे लोग। शिप्रा बताती हैं, अस्पताल खोले करीब 14 साल हुए थे। अक्सर यहां लोग अपनी पत्नी, बहू और बेटी को लेकर आते। अगर लड़का पैदा होता तो अस्पताल की फीस के अलावा स्टाफ को पैसे देते और मिठाई बांटते। लेकिन अगर लड़की पैदा होती तो अस्पताल में मौजूद परिवार के बीच माहौल बदल जाता था। सबके चेहरे मायूस हो जाते थे। कई बार तो घरवाले रोने भी लगते। हम अक्सर परिवारों को कहते सुनते थे कि उसे फिर से बेटी हुई है... बेचारी। इस बार भी किस्मत ने साथ नहीं दिया।' डॉ शिप्रा कहती हैं, 'यह देखकर मुझे बहुत अजीब लगता। मन में कई बार आता कि मैं इस सोच को बदलने के लिए कुछ करूं, लेकिन कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। लोगों को समझाने की कोशिश करती तो वो अलग-अलग तर्क देने लगते कि लड़का होता तो घर को पैसा कमाकर देता। लड़की होगी तो उसकी शादी का खर्च उठाना पड़ेगा। लड़की होने से हमारा खर्चा बढ़ेगा।'

पति बोले- कुछ करना है तो बेटी के जन्म पर पैसा ना लो डॉक्टर कहती हैं कि मैंने अपने पति को यह बात बताई। उनको कहा कि मैं इस सोच से लड़ने के लिए कुछ करना चाहती हूं।

उन्होंने पूछा कि क्या करोगी?

मैंने कहा कि मैं उन परिवारों को कुछ तोहफा दूंगी जिनके घर लड़की पैदा होगी। क्या तोहफा देना चाहिए यह मैंने तब तक नहीं सोचा था। इस पर मेरे पति ने कहा कि तोहफा देने से क्या सच में समाज में कोई बदलाव आएगा? पति का यह सवाल मेरे दिमाग में देर तक कौंधता रहा। उन्होंने कहा कि अगर परिवार वालों के चेहरे पर खुशी देखना चाहती हो तो बेटी पैदा होने पर परिवार से कोई चार्ज मत लो।

डॉक्टर कहती हैं कि कुछ देर तो मुझे समझ नहीं आया कि

उन्होंने सच में मुझे ऐसा करने को बोला है। मुझे लगा कि इस अस्पताल से ही तो मेरी कमाई होती है, घर चलता है। अगर यहीं आधे मरीजों की फ्री में डिलीवरी होने लगेगी तो हमारा घर कैसे चलेगा?

वो कहती हैं कि उस दिन तो उस बात पर कोई फैसला नहीं हो पाया। हमने तय किया कि इस बारे में हम आगे कुछ सोचेंगे। बेटी होने पर पैसा नहीं लिया तो परिवार खुश हो गया शिप्रा बताती हैं कि फिर एक दिन ऐसा भी आया कि मुझे इत्तेफाक से अपने पति की कही बात पर अमल करने का मौका मिल गया। एक केस हमारे हॉस्पिटल में आया जहां प्रेग्नेंट महिला तेज दर्द में थी। पूरा परिवार उसकी सलामती से ज्यादा अपने घर के चिराग का बड़ी उम्मीदों से इंतजार कर रहा था। हमने सेफ डिलीवरी को अंजाम दिया। मां को दर्द से राहत मिली लेकिन बेटी होने की खबर से मानो उस परिवार की उम्मीदें ही टूट गईं। फीस जमा करने की बात पर लड़की के पिता ने ताना मारा कि एक तो लड़की हुई है ऊपर से पैसे भी दो। यह सुनते ही डॉ. शिप्रा को पति की बात याद आई और उन्होंने तपाक से कहा- बेटी हुई है। आपको फीस देने की जरूरत नहीं।

यह सुनते ही उस परिवार ने अविश्वास की नजरों से मुझे देखा तो मैंने उन्हें समझाया कि बेटियां किसी पर बोझ नहीं होतीं। क्योंकि यह बात एक डॉक्टर बेटी उनसे कह रही थी तो उस परिवार पर मेरी बातों का असर भी हुआ। इस छोटे से बदलाव ने मुझे हौसला और इरादा दिया कि मैं ऐसा कर सकती हूं। भले ही मुझे अपने परिवार के खर्चों में कटौती करनी पड़े लेकिन मैं शायद इस कदम से समाज में बदलाव ला सकती हूं। लोग चाहने लगे कि बेटी पैदा हो ताकि फीस ना देना पड़े।

डॉ शिप्रा बताती हैं कि यह 25 जुलाई 2014 की बात है। इसी दिन के बाद से अस्पताल में यह सिलसिला शुरू हो गया। बेटा होने पर करीब 26 हजार का खर्चा होता है, लेकिन बेटी पैदा होने पर वो पैसा नहीं लेतीं और मिठाई बंटवाती हैं। अब तक ऐसी 575 बेटियां हैं, जिनका हमारे अस्पताल में जन्म हुआ और उसके लिए हमने कुछ भी चार्ज नहीं किया। डॉक्टर शिप्रा बताती हैं कि पहले लोग बेटी होने पर दुखी होते थे लेकिन अब बेटा पैदा होता है तो कहते हैं कि बेटा हो गया। हम तो चाहते थे कि बेटी हो।

कई लोग हमारे अस्पताल भी इसलिए आते हैं कि यहां बेटी होने पैसा नहीं लिया जाएगा। कभी-कभी तो बच्ची के पिता आकर डॉक्टर शिप्रा से कहते हैं मैडम अपनी बेटी को आपकी तरह बनाऊंगा। बेटा बोला बच्ची से काम करवा रही हो, मैं तुम्हें जेल भेज दूंगा। शिप्रा बताती हैं कि हमारे घर एक महिला झाड़ू- पोछा करती थी।

एक दिन उस महिला की तबीयत खराब हो गई तो वो नहीं आ पाई। अपनी जगह उसने दो बेटियों को भेज दिया। एक बेटी तो बड़ी थी लेकिन दूसरी करीब 6 साल की थी। दोनों मिलकर घर में काम करने लगीं। तभी मेरा 10 साल का बेटा सोकर उठा और बच्ची को काम करते देख चिल्लाने लगा। उसने कहा कि मम्मी तुम इतनी छोटी बच्ची से काम कराओगी तो मैं तुम्हें चाइल्ड लेबर के केस में जेल भेज दूंगा। वो बोला कि हमें स्कूल में पढ़ाया गया है कि छोटे बच्चों को पढ़ाना चाहिए। उनसे काम नहीं करवाना चाहिए। डॉक्टर बोली कि यह सुनकर उन्हें लगा कि जो बात एक छोटा बच्चा समझ गया वो उनके दिमाग में कभी नहीं आई। बेटे की दी इस सीख के बाद 2 नवंबर 2014 से डॉक्टर शिप्रा गरीब बच्चियों को पढ़ाती भी हैं। खाने और ड्रेस का लालच दिया तो बच्चियां पढ़ने आईं।

साल 2014 में ही उन्होंने आस-पास की गरीब बच्चियों को शिक्षा देने का फैसला किया। उन्होंने कहा मैं कई लोगों के घर गई। उन्होंने देखा कि लोग लड़कों को तो पढ़ा रहे हैं लेकिन लड़कियों से सिर्फ घर का काम करवाते हैं। उन्होंने परिवार से बच्चियों को उनके पास पढ़ने के लिए भेजने को कहा। उन्हें बताया कि वो फ्री में उन्हें पढ़ाएंगी। लेकिन घरवाले नहीं माने। उन्हें लगता था कि लड़कियां पढ़ लिखकर क्या करेंगी।

डॉक्टर बताती हैं कि बच्चियों को पढ़ाने के लिए इकट्ठा करना बिल्कुल आसान नहीं था। इसलिए मैंने उनको खाने और ड्रेस का लालच दिया कि इसी बहाने वो पढ़ाई भी करेंगी। शुरुआत में सिर्फ 5 बच्चियां आईं। लेकिन उनको देखकर धीरे-धीरे और बच्चियां भी आने लगीं। इस वक्त डॉक्टर शिप्रा 32 बेटियों को शाम के वक्त पढ़ाती हैं।

मोदी जी ने विदेश में की थी तारीफ

डॉ. शिप्रा बताती हैं 2019 में मुझे पीएम मोदी से मिलने का मौका मिला था। जब मैं उनसे मिली तो मैंने उन्हें बताया कि हम अपने अस्पताल में बेटी पैदा होने पर कोई चार्ज नहीं लेते। उन्होंने बताया कि उस वक्त तो पीएम मोदी ने कुछ नहीं बोला लेकिन जब वह स्टेज पर गए और कहा- आप सबके बीच एक ऐसी महिला भी बैठी हैं जो बेटी पैदा होने पर पैसे नहीं लेती। मैं ऐसी महिला को नमन करता हूं।

प्रधानमंत्री की यह बात सुनकर मेरी आंखों से लगातार आंसू बहने लगे। इसके बाद कई बार उन्होंने अलग-अलग मंच पर मेरे काम का जिक्र किया। अमेरिका के एक संबोधन में भी उन्होंने मेरे काम के बारे में वहां की जनता को बताया। शिप्रा बताती हैं कि पीएम मोदी का यह कहना मेरे लिए किसी अवॉर्ड से कम नहीं था।

स्त्री तत्व के बिना राष्ट्रवाद की परिकल्पना संभव नहीं

डा. अर्चना तिवारी

राष्ट्रवाद वह प्रक्रिया है जिसमें सबसे पहले व्यक्ति का निर्माण व्यक्ति से परिवार का निर्माण और परिवार से समाज का निर्माण किया जाता है। निर्माण की इस प्रक्रिया में मुख्यतः तीन लोगों की भूमिका होती है। सबसे पहले इसमें माता–पिता और परिवार शामिल होते हैं फिर शिक्षक शामिल होते हैं और उसके बाद उस देश के वे प्रतीक और आदर्श शामिल होते हैं जिनसे राष्ट्र के प्रति आदर और समर्पण की भावना जन्म लेती है।

"भारत जैसे राष्ट्र की भावात्मक आधारभूमि का केंद्र ही नारी प्रधान है। नारी तत्व में ही समग्र भारतीय दर्शन समाहित दिखता है। यही इस राष्ट्र का प्राण तत्व है। विडम्बना है कि स्वाधीनता के बाद इस विषय को ठीक से प्रतिपादित करने की बजाय हमारे लेखकों, विचारको और इतिहासकारो ने पश्चिम की नक़ल करने में समस्त ऊर्जा खर्च कर दी। वे यह समझ ही नहीं पाए कि परिवार और समाज के तात्विक स्वास्थ्य से पश्चिम अनजान है।"

लेखिका संस्कृति पर्व की कार्यकारी सम्पादक और शिक्षाविद् हैं।

स्त्री तत्व के बिना राष्ट्रवाद की परिकल्पना संभव ही नहीं है। राष्टवाद को समझने से पहले यह जान लेना आवश्यक है कि आखिर राष्ट्र होता क्या है। राष्ट्र क्या केवल धरती का एक टुकड़ा है? अथवा राष्ट्र एक ऐसी जगह है जहां आदमी जानवर पशु पक्षी सब रहते हैं।राष्ट्र और राज्य में बहुत ही फर्क है। दरअसल देश या राज्य वह एक बड़ा समूह है जो एक क्षेत्र में समान भाषाओं और संस्कृति को साझा करता है। लेकिन राष्ट्र, राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता इससे थोड़े भिन्न हैं। देश के प्रति समर्पण और आदर राष्ट्रीयता है। इस समर्पण और आदर की भावना को किस प्रकार से देश के लोगों के भीतर स्थापित किया जाए, वह प्रक्रिया राष्ट्रवाद है। यानि राष्ट्रवाद वह प्रक्रिया है जिसमें सबसे पहले व्यक्ति का निर्माण व्यक्ति से परिवार का निर्माण और परिवार से समाज का निर्माण किया जाता है। निर्माण की इस प्रक्रिया में मुख्यतः तीन लोगों की भूमिका होती है। सबसे पहले इसमें माता–पिता और परिवार शामिल होते हैं फिर शिक्षक शामिल होते हैं और उसके बाद उस देश के वे प्रतीक और आदर्श शामिल होते हैं जिनसे राष्ट्र के प्रति आदर और समर्पण की भावना जन्म लेती है।

राष्ट्रवाद के निर्माण में सबसे बड़ी और पहली भूमिका परिवार की होती है जिसमें माता–पिता केन्द्र में होते हैं। इनमें भी माता का स्थान ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। व्यक्ति निर्माण की प्रथम कार्यशाला परिवार ही है। जिसकी मुख्य शिक्षक माता ही होती है। माता की निगरानी में और संरक्षण में शिशु से व्यक्ति की विकास की जो यात्रा शुरू होती है उसके मूलभूत सिद्धांत माता की कार्य प्रणाली और उसके द्वारा प्रदत्त सीख पर ही निर्भर करता है। माता से प्रारम्भ व्यक्ति निर्माण की यह प्रक्रिया परिवार से समुदाय, समुदाय से समाज और समाज से राष्ट्र तक आते आते जिन भी रास्तों से गुजरती है उन सभी पर माता की मूल शिक्षा आधार के रूप में स्थापित रहती है। इससे स्पष्ट होता है कि राष्ट्रवाद की पूरी अवधारणा के केन्द्र में वही नारी तत्व है जिसकी गोद में शिशु से व्यक्ति तक की विकास यात्रा प्रारम्भ होती है। इसीलिए भारतीय सनातन परम्परा यत्र नारीयस्तु पुज्यंते को अति महत्वपूर्ण स्थापना दी गई है।

यह दुर्भाग्य है कि विगत एक हजार वर्षों में भारत ही नहीं बल्कि दुनिया ही अत्यंत अव्यवस्थित रही है। राष्ट्र के रूप में यह प्रामाणिक रूप से कहा जा सकता है कि भारत हजारों वर्षों से इस धरती पर विद्यमान है। इसीलिए यहां अलग से राष्ट्रवाद को परिभाषित करने की आवश्कता नहीं पड़ती थी। लेकिन विश्व के अन्य देशों का जन्म या उद्भव भारत के बाद ही हुआ है। इसीलिए वहां राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता को लेकर अनेक प्रकार के प्रश्न खड़े होते रहे हैं। भारतीय चिंतन में राष्ट्र की अवधारणा का केन्द्र परिवार है और परिवार का केन्द्र नारी है। इस नारी तत्व को भारत में प्राचीनकाल से ही अत्यंत महत्व मिलता रहा है। वे हमारे देवी देवता हों ऋषि परम्परा हो, राज्य व्यवस्था हो अथवा कोई औ काल रहा हो, हर समय यहां नारी की भूमिका अत्यंत सशक्त रही है। राम राज्य की सीता, कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी, मंदोदरी, उर्मिला, सबरी, महाभारत काल की यशोदा, देवकी, द्रोपदी, कुंती, गांधारी, राधा, रूक्मणि, सत्यभामा, सुभद्रा, उत्तरा से लेकर बुद्ध काल की यशोधरा और बुद्ध के बाद के समय की भारतीय महान नारियों से इतिहास अटा पड़ा है लेकिन दुर्भाग्य यह रहा कि एक हजार वर्षों की गुलामी और उसके बाद लिखे जाने वाले इतिहास में भारतीय राष्ट्रीय स्वरूप को जगह ही नहीं दी गयी। परिणाम यह हुआ स्वाधीनता के बाद से लेकर अबतक की पीढ़ी अपना जो इतिहास पढ़ रही है उसमें उसे न तो अपना राष्ट्र दिखता है न राष्ट्रवाद दिखता है न राष्ट्रीयता दिखती है और न ही नारी प्रधान भारतीय संस्कृति की आधार भूमि से वह परिचित हो पाती है। यही वजह है कि जब भी राष्ट्रवाद जैसे विषय पर स्त्री विमर्श की बात आती है तो इतनी सतही और अतार्किक तथा मनगढ़ंत बातें होने लगती हैं जिनमें स्त्री को अत्यंत महत्वहीन तथा अमर्यादित स्वरूप में प्रस्तुत किया जाता है। गार्गी, अपाला, दमयंती, सावित्री, अनुसुईया जैसी स्त्रीयों के आदर्श और चरित्र पर कभीकाई चर्चा होते नहीं दिखती। यह दुर्भाग्य है।

भारत जैसे राष्ट्र की भावात्मक आधारभूमि का केंद्र ही नारी प्रधान है। नारी तत्व में ही समग्र भारतीय दर्शन समाहित दिखता है। यही इस राष्ट्र का प्राण तत्व है। विडम्बना है कि स्वाधीनता के बाद इस विषय को ठीक से प्रतिपादित करने की बजाय हमारे लेखकों, विचारको और इतिहासकारो ने पश्चिम की नक़ल करने में समस्त ऊर्जा खर्च कर दी। वे यह समझ ही नहीं पाए कि परिवार और समाज के तात्विक स्वास्थ्य से पश्चिम अनजान है। पश्चिमी सभ्यता के लिए स्त्री एक भोग की वास्तु थी जो अब उस परिधि से बहार स्वयं का अस्तित्व तलाश रही है। ऐसे में पश्चिम से संस्कार और बौद्धिकता का आयत कर हमारे कर्णधारो ने हमें ठीक से डुबोया। साड़ी बौद्धिक जमात को अतिशय कंफ्यूज किया गया और स्त्रियों को लिंगभेद के संघर्ष में झोक देने की खू चेष्टा की गयी। यह अलग बात है कि भारतीयता के तत्वों की गहराइयों के कारण वे बहुत सफल नहीं हो सके। इस पूरे प्रारूप को समझने के लिए आवश्यक है कि नारी शक्ति के प्राचीन और आधुनिक इतिहास पर दृष्टिपात की जाय। सबसे पहले बात करते हैं प्राचीन भारत की।

प्राचीन भारत में नारी शक्ति

भारत में नारी शक्ति की महत्ता का इतिहास उतना ही पुराना है जीतनी यह सृष्टि। भारत ने सदैव अपनी मातृभूमि को माता कहा है और इसी मातृत्व के साये में इसका विकास होता रहा है। यहाँ दुर्गा स्वरुप में नारी से ही शक्ति ग्रहण कर समाज के संचालन की आदि परंपरा है। यदि विगत पांच हजार साल, यानी महाभारत काल से अब तक के ही इतिहास को ठीक से देखें तो बहुत कुछ सामने आता है। केवल राजनीति ही नहीं अपितु समाज, शिक्षा, शास्त्र और

शस्त्र संचालन में नारी सहभागिता गजब की रही है। रामायण काल में चलें तो यह सर्वविदित है कि महारानी कैकेयी के युद्ध कौशल ने ही महाराजा दशरथ को आकर्षित किया था। सुमित्रा की युद्ध कला और सीता की पति परायणता के साथ ही नेतृत्व क्षमता ने बहुत कुछ दिया। इतना दिया कि रामायण सरीखा ग्रन्थ रचाने वाले महर्षि बाल्मीकि ने इसे जानकी ग्रन्थ के रूप में ही प्रतिपादित किया। महाभारत काल में दरौपदी, कुंती, उत्तरा आदि के कौशल से वांग्मय भरे पड़े हैं। सती अनुसूया और सावित्री की कथाओ से जगत परिचित है। दुर्गा ने तो अपने युद्ध कौशल से सृष्टि को दैत्यों से मुक्त करा दिया। यही तो है भारत की नारी जिसका आभारी आज भी हमें होना पड़ता है।

भारत को पिछले हजार वर्षों की पराधीनता के कारण बहुत वाहियात की बातें सुननी पड़ती हैं। केवल पश्चिमी इतिहासकारो को पढ़ने वालो ने भारत की छवि बिगाड़ दी है। भारत नारी स्वाधीनता की दिशा में कितना आगे रहा है और यहां की नारियो ने कितना योगदान यहाँ के समाज और राजनीति के निर्माण में दिया है , इसको अब ठीक से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। वेदों में उल्लिखित कुछ मंत्र इस बात को रेखांकित करते है कि कुमारियों के लिए शिक्षा अपरिहार्य एवं महत्वपूर्ण मानी जाती थी। स्त्रियों को लौकिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार की शिक्षाएँ दी जाती थी। सहशिक्षा को बुरा नहीं समझा जाता था।प्राचीन भारतीय वांग्मय में स्त्री समुदाय को लेकर बहुत सटीक उदाहरण मौजूद दिखते हैं। एक प्रमुख ग्रन्थ गोभिल गृहसूत्र में कहा गया है कि स्त्री शिक्षा उस समय अत्यंत अनिवार्य विषय था। अशिक्षित पत्नी यज्ञ करने में समर्थ नहीं होती थी। संगीत शिक्षा पर जोर दिया जाता था। इच्छा और योग्यता के अनुसार शिक्षा प्राप्ति के लिए प्रेरित किया जाता था।

> “ वेदों में उल्लिखित कुछ मंत्र इस बात को रेखांकित करते है कि कुमारियों के लिए शिक्षा अपरिहार्य एवं महत्वपूर्ण मानी जाती थी। स्त्रियों को लौकिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार की शिक्षाएँ दी जाती थी। सहशिक्षा को बुरा नहीं समझा जाता था।प्राचीन भारतीय वांग्मय में स्त्री समुदाय को लेकर बहुत सटीक उदाहरण मौजूद दिखते हैं। एक प्रमुख ग्रन्थ गोभिल गृहसूत्र में कहा गया है कि स्त्री शिक्षा उस समय अत्यंत अनिवार्य विषय था। ”

एक प्रमुख ग्रन्थ श्रमणक्रमणिका में उल्लिखित प्राचीन परम्परा के अनुसार ऋग्वेद की रचना में 20 स्त्रियों का योगदान है। प्रख्यात विद्वान शकुन्तला राव शास्त्री ने इसे तीन कोटि में विभाजित किया है। महिला ऋषि द्वारा लिखे गये श्लोक, आंशिक रूप से महिला ऋषि द्वारा लिखे गये श्लोक एवं महिला ऋषिकाओं को समर्पित श्लोक। ऋग्वेद के दशम मंडल के 39 एवं 40 सुक्त की ऋषिका घोषा, रोमशॉ, विश्ववारा, इन्द्राणी, शची और अपाला थी। वैदिक युग में स्त्रियाँ यज्ञोपवीत घारण कर वेदाध्ययन एवं सायं- प्रात होम आदि कर्म करती थी। इसी तरह शतपथ ब्राह्मण में व्रतोपनयन का उल्लेख है। हरित संहिता के अनुसार वैदिक काल में शिक्षा ग्रहण करने वाली दो प्रकार की कन्याएँ होती थी - ब्रह्मवादिनी एवं सद्योवात्। सद्योवात् 15 या 16 वर्ष की उम्र तक, जब तक उनका विवाह नहीं हो जाता था, तब तक अध्ययन करती थी। इन्हें प्रार्थना एवं यज्ञों के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण वैदिक मंत्र पढ़ाये जाते थे तथा संगीत एवं नृत्य की भी शिक्षा दी जाती थी। ब्रह्मवादिनी को यज्ञकार्य, वेदाध्ययन एवं भैष्यचर्या के अधिकार प्राप्त थे। सुलभा, मैत्रेयी, गार्गी आदि अपनी विद्वता के लिए विश्वविख्यात थी। घोषा ने सार्वजनिक तौर पर स्वीकार किया है कि 'मैं राजकन्या घोषा, सर्वत्र वेद की घोषणा करनेवाली, वेद का र्सवत्र संदेश पहुँचानेवाली स्तुतिपाठिका हूँ।' इनमें से कुछ स्त्रियों ने तो आजीवन ब्रह्मचारिणी रहकर आध्यात्मिक उन्नति भी प्राप्त की थी। इन स्त्रियों ने वेदाध्ययन, रचना, त्याग, तपस्या द्वारा ऋषिभाव को प्राप्त किया और कुछ ने मंत्रों का साक्षात्कार भी किया।

ऋग्वेद जो संसार का सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ है उसके कुछ मंत्रों में सत्तर (70) ब्रह्मवादिनी स्त्रियों का नामोल्लेख हुआ है। शौनक ने अपने ग्रंथ वृहत्देवता में मंत्रद्रष्टा नारियों का नामोल्लेख किया है। लोपामुद्रा ने अपने पति अगस्त्य के साथ ही शुक्र का दर्शन किया था। सूर्या ने 10 से 85 शुक्र का साक्षात्कार किया था। इसके अतिरिक्त उषा, वक्र अदिति आदि ने भी शुक्रों का साक्षात्कार किया था। 300 ई0 पूर्व तक पुत्र और पुत्रियों को समान रुप से शिक्षा देना माता-पिता का कत्तर्व्य माना जाता था। लड़कियाँ प्रायः 16 वर्ष की अवस्था तक अविवाहित रहती थी और उपनयन संस्कार के बाद विवाह करती थी। अथर्ववेद के अनुसार नारी विवाह के उपरान्त तभी सफल हो सकती है, जबकि उसे ब्रह्मचर्य की अवस्था में भली-भाँति शिक्षित किया गया हो। यह शिक्षा विशेषकर दैनिक साहित्य से सम्बन्धित होती थी। जिससे वह हवन यज्ञों में अपने पति के साथ भाग ले सके। पूर्व मीमांसा भी स्त्रियों के लिए रुचिकर विषय था। यह शुष्क और कठिन विषय था जिसका सम्बन्ध हवन एवं यज्ञों

से था। काशकृत्सनी नामक महिला ने मीमांसा पर एक पुस्तक की रचना की थी जिसे काशकृत्सनी कहा जाता है और जो छात्रायें इसका विशेष अध्ययन करती थी उन्हें काशकृत्सना कहा जाता था। मीमांशा जैसे दुरुह विषय का विशेष अध्ययन करनेवाली छात्राओं की संख्या इतनी थी कि उनके लिए विशेष शब्द का इस्तेमाल करना पड़ा। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि साधारण साहित्यिक और सांस्कृतिक शिक्षा ग्रहण करेन वाली नारियों की संख्या भी उस काल में पर्याप्त रही होगी। महावीर और गौतम बुद्ध ने संध मे नारियों के प्रवेश की अनुमति दी थी, ये धर्म और दर्शन के मनन के लिए ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करती थी। जैन और बौद्ध सहित्य से पता चलता है कि कुछ भिक्षुणियों ने साहित्य के विकास और शिक्षा में अपूर्व योगदान दिया जिसमें अशोक की पुत्री संघमित्रा प्रमुख थी। यहाँ बौद्ध आगमों की महान शिक्षिकाओं के रूप में उनकी बड़ी ख्याति थी। जैन साहित्य से जयंती नामक महिला का पता चलता है जो धर्म और दर्शन के ज्ञान की प्यास में अविवाहित रही और अंत में भिक्षुणी हो गई। सुदीर्घ काल में नारियों की शिक्षा के लिए परिवार ही एकमात्र शिक्षण संस्थान था। उनके निकट सम्बन्धी ही प्रायः उनको शिक्षा देते थे। जब भारी संख्या में महिलाओं ने उच्च शिक्षा ग्रहण करना शुरु कर दिया तथा विद्या के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देना शुरु कर दिया तो संभवतः उनमें से कुछ अध्यापन का कार्य भी आवश्य ही करने लगी होगी। गाथासप्तशती में सात कवियित्रियां की रचनाएँ संग्रहीत है। शीलभट्टारिका अपनी सरल तथा प्रासादयुक्त शैली तथा शब्द और अर्थ के सामंजस्य के लिए प्रसिद्ध थी। देवी लाट प्रदेश की कवियित्री थी। विदर्भ में विजयांका की कीर्ति की समता केवल कालिदास ही कर सकते थे। अवंतीसुन्दरी कवियत्री और टीकाकार देनों ही थी। कतिपय महिलाओं ने आयुर्वेद पर पांडित्यपूर्ण और प्रामाणिक रचनायें की हैं जिनमें रुसा का नाम बड़ा प्रसिद्ध है।

मध्यकाल में स्त्रियों की शिक्षा की प्रगति शासकों एवं समृद्ध लोगों के संरक्षण में धीमी गति से हुई । शासकों एवं अन्य शिक्षाप्रेमी व्यक्तियों ने महिला शिक्षा को बढ़ावा देने का प्रयास किया। हिन्दू और मुस्लिम स्त्रियों ने धार्मिक और उच्च प्रकार की साहित्यिक कृतियों में रूचि ली। इन सबके बावजूद विदुषी स्त्रियों का अभाव ही रहा। जिसका प्रमुख कारण पर्दाप्रथा और बाल विवाह था। इसका अर्थ यह नहीं है कि उस समय अच्छे शैक्षिक संस्थान पर्याप्त मात्रा में नहीं थे। सच पूछा जाय तो उनकी शिक्षा की उपेक्षा की जाती थी। इब्नबतूता हनौर के शासक को महान शिक्षाप्रेमी बताते हुए कहता है कि हनौर की सारी महिलाओं ने कुरान रट डाला था, वहाँ लड़कों के लिए 23 और लड़कियों के लिए 13 विद्यालय स्थापित थे। वाकियात-इ-मुस्तौकी का लेखक शेख रिजकुल्ला लिखता है कि इस अवधि में शिक्षा की स्वच्छ धारा पूर्वकाल की तरह ही प्रवाहित हो रही थी। स्त्रियों को सामान्य पाठ्यक्रम के अनुसार ही पढ़ाया जा रहा था तथा साथ ही उन्हें विभिन्न कलाओं और विज्ञानों की भी शिक्षा दी जाती थी।

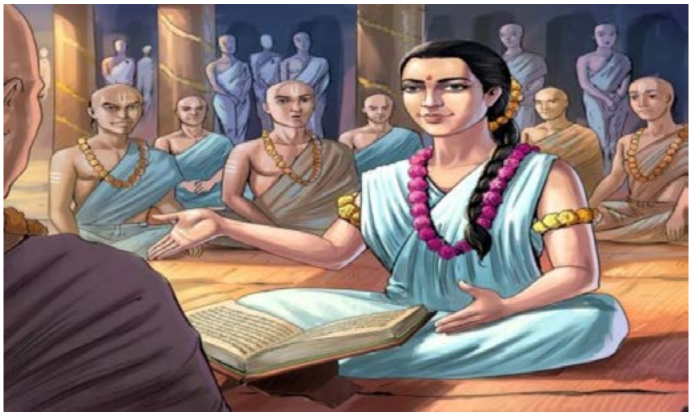

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो अपने शौर्य के लिए वीरमाता जीजाबाई , अहिल्या देवी होलकर, रानी लक्ष्मीबाई , सावित्री बाई फुले जैसी अनेक नारियां हुईं जिन्होंने इतिहाद को बदला। छत्रपति शिवाजी महाराज का रूप तथा कीर्ति उनको दिये गये संस्कारों का प्रतिफल ही माना जाएगा । जीजाबाई ने शिवाजी को आदर्श व्यक्तित्व का स्वामी बनाया। उन्होंने शिवाजी को न केवल कर्तव्यशाली बनाया अपितु लड़ाई में किन बिंदुओं पर ध्यान देना चाहिए, इसका भी प्रशिक्षण दिया। माता की हर सीख बेटे के लिए प्रेरणादायी रही, इस तथ्य को भुलाया नहीं जा सकता। इसी तरह अहित्या बाई होलकर तथा रानी लक्ष्मीबाई ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं को उनकी संगठन शक्ति का परिचय करवा दिया था। कार्य श्रेष्ठ, उज्ज्वल तथा प्रेरणादायी होने के कारण महिलाओं ने उनकी बात को अंगीकार किया। इन तेजस्वी महिलाओं के कारण सामान्य महिलाओं में व्यक्तिगत, सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई और इसी कारण महिलाओं की सामाजिक गतिविधियों में सक्रियता बढ़ी। इन्हीं महिलाओं में भूमिगत होकर अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ आवाज बुलंद की।

सामाजिक दृष्टि से विचार किया जाए तो जिन्होंने स्त्रियों के उत्थान के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया, ऐसी महिलाओं में सावित्रीबाई फुले का नाम विशेष रूप से लेना पड़ेगा। स्त्री शिक्षा के बारे में जो कुछ किया गया, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। विपरीत परिस्थिति में अनेक संकटों को मात देकर महिलाओं ने अपने जीवन को सुखद बनाने का मार्ग प्रशस्त किया। स्त्री शिक्षा तथा उसकी सामाजिक गतिविधियों में बढ़ती सहकारिता के कारण स्त्री शक्ति बढ़ती जा रही है। नारी उत्थान के लिए विविध प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराई गई। इसी तरह दीन-दुखी तथा निराश्रित की सेवा करने में नारी शक्ति का योगदान सराहनीय रहा है। जीवन में राष्ट्रनिष्ठा, नैतिकता तथा संस्कृति के उत्कर्ष में नारी शक्ति का योगदान किसी से छिपा नहीं है।

बाबा की काशी, गंगा, तुलसी और मानस

सिद्धार्थ मणि त्रिपाठी

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और संस्कृति पर्व के संयुक्त संपादक हैं)

मानस का एक घाट है काशी में गंगा जी का किनारा। इसी घाट से गोस्वामी तुलसी दास जी ने मानस की रामकहानी लिखना शुरू की थी जो भारत के लोकमानस में अविरल प्रवाहित है। इसी काशी में संस्कृति संसद के माध्यम से भारत के कोने कोने से संतों का आगमन और सनातन रक्षा का विमर्श देश और समाज को बहुत कुछ देने वाला है।

बाबा विश्वनाथ की काशी। बाबा की जटा में प्रवाहित गंगा और उसकी धारा के साथ प्रवाहमान तुलसी की राम कथा गंगा का आनंद लीजिए। आज विश्व के सामने जो चुनौतियां हैं, उनका समाधान सिर्फ यहीं और इसी काशी में है। श्रीरामचरित मानस केवल एक पुस्तक भर नहीं है। श्रुति, स्मृति , उपनिषद, इतिहास, विज्ञान और जीवन का यह वह दर्शन है जो भगवान शिव के मानस में रचा गया और गोस्वामी तुलसी दास की कलम से अवतरित हुआ।

सनातन जीवन संस्कृति का यह आधार ग्रंथ है जो गोस्वामी जी के माध्यम से हमे प्राप्त हुआ है। यह ग्रंथ केवल कोई कथा या कहानी भर नहीं है, बल्कि यह साक्षात भगवान शिव का शब्द विग्रह है। श्रीरामचरित मानस पर कुछ कहने के लिए शक्ति और चिंतन का सामर्थ्य चाहिए। देखा जाए तो इस ग्रंथ के हरेक पात्र महत्वपूर्ण हैं। यदि नायक के रूप में भगवान श्रीराम हैं तो प्रतिनायक के रूप में महापंडित रावण भी है। दसों इंद्रियों पर सम्पूर्ण नियंत्रण रखने वाले चक्रवर्ती दशरथ जी हैं तो उसी अनुपात में दसगुना नियंत्रण रखने वाला दशानन है। भक्ति और पोषक के साक्षात विग्रह भरत जी हैं तो सेवा की प्रतिमूर्ति लक्ष्मण जी भी हैं। राम को भगवान राम बनाने के लिए स्वयं को खल पात्र बना लेने वाली माता कैकेयी हैं तो सूर्य उदय का मार्ग देने वाली पूरब दिशा के समान माता कौशल्या भी हैं। सेवा और परिवार का आदर्श स्थापित करने वाली माता सुमित्रा हैं तो दूसरी तरफ़ महा तपस्विनी उर्मिला भी हैं। जगजननी माता सीता तो इस ग्रंथ की आधार हैं। श्री हनुमान जी, जामवंत जी, सुग्रीव जी से लेकर महाराज जनक तक के बारे में केवल कह पाने भर से उनके साथ न्याय नही हो सकता। मानस के मनुष्य, जड़, स्थावर, पशु ,पक्षी, नदी, समुद्र, सेवक, नाविक से लेकर सम्पूर्ण परिवेश में जीवन के संदेश सुरक्षित हैं।मानस आदर्श मानव जीवन का महासमुद्र है जिससे प्रति पल कुछ सीखने को मिलता है।

एक दृष्टि से देखा जाए तो गोस्वामी जी ने मानस को आकार देते समय सृष्टि का संविधान ही रच दिया है । उन्होंने, विधि प्रपंच गुन अवगुन सान, लिख कर यह पहले ही स्पष्ट कर दिया है कि विधाता ने सृष्टि में सकारात्मक और नकारात्मक सभी प्रकार की रचनाओं को सान दिया है। यानी एक ही धरातल पर दोनों को उतार दिया है। इस तथ्य को गोस्वामी जी ने संत-असंत वंदना में ही प्रस्तुत कर दिया है। ग्रंथ के आरंभ में ही वह लिखते हैं-

बंदउँ संत असज्जन चरना।
दुःखप्रद उभय बीच कछु बरना॥
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं।
मिलत एक दुख दारुन देहीं॥

वह कहते हैं कि मैं संत और असंत दोनों के चरणों की वन्दना करता हूँ, दोनों ही दुःख देने वाले हैं, परन्तु उनमें कुछ अन्तर है। वह अंतर यह है कि एक (संत) तो बिछुड़ते समय प्राण हर लेते हैं और दूसरे (असंत) मिलते हैं, तब दारुण दुःख देते हैं। (अर्थात्‌ संतों का बिछुड़ना मरने के समान दुःखदायी होता है और असंतों का मिलना एक प्रकार का बड़ा दुख है।)

इस एक अन्य चौपाई में उन्होंने इस बात को दूसरे उदाहरण से स्थापित किया है-

उपजहिं एक संग जग माहीं।
जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं॥
सुधा सुरा सम साधु असाधू।
जनक एक जग जलधि अगाधू॥

दोनों (संत और असंत) जगत में एक साथ पैदा होते हैं, पर (एक साथ पैदा होने वाले) कमल और जोंक की तरह उनके गुण अलग-अलग होते हैं। (कमल दर्शन और स्पर्श से सुख देता है, किन्तु जोंक शरीर का स्पर्श पाते ही रक्त चूसने लगता है।) साधु अमृत के समान (मृत्यु रूपी संसार से उबारने वाला) और असाधु मदिरा के समान (मोह, प्रमाद और जड़ता उत्पन्न करने वाला) होता है। दोनों को उत्पन्न करने वाला जगत रूपी अगाध समुद्र एक ही है। (शास्त्रों में समुद्रमन्थन से ही अमृत और मदिरा दोनों की उत्पत्ति ताई गई है।)॥

भल अनभल निज निज करतूती।
लहत सुजस अपलोक बिभूती॥
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू।
गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू॥
गुन अवगुन जानत सब कोई।
जो जेहि भाव नीक तेहि सोई॥

भले और बुरे मनुष्य अपनी-अपनी करनी के अनुसार सुंदर यश और अपयश की सम्पत्ति पाते हैं। अमृत, चन्द्रमा, गंगाजी और साधु एवं विष, अग्नि, कलियुग के पापों की नदी अर्थात् कर्मनाशा और हिंसा करने वाला व्याध के समान होता है। इनके गुण-अवगुण सब कोई जानता हैं, किन्तु जिसे जो भाता है, उसे वही करने में अच्छा लगता है॥

भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु।
सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु॥

भला भलाई ही ग्रहण करता है और नीच नीचता को ही ग्रहण किए रहता है। अमृत की सराहना अमर करने में होती है और विष की मारने में॥

खल अघ अगुन साधु गुन गाहा।
उभय अपार उदधि अवगाहा॥
तेहि तें कछु गुन दोष बखाने।
संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने॥

दुष्टों के पापों और अवगुणों की और साधुओं के गुणों की कथाएँ-दोनों ही अपार और अथाह समुद्र हैं। इसी से कुछ गुण और दोषों का वर्णन किया गया है, क्योंकि बिना पहचाने उनका ग्रहण या त्याग नहीं हो सकता॥

भलेउ पोच सब बिधि उपजाए।
गनि गुन दोष बेद बिलगाए॥
कहहिं बेद इतिहास पुराना।
बिधि प्रपंचु गुन अवगुन साना॥

भले-बुरे सभी ब्रह्मा के पैदा किए हुए हैं, पर गुण और दोषों को विचार कर वेदों ने उनको अलग-अलग कर दिया है। वेद, इतिहास और पुराण कहते हैं कि ब्रह्मा की यह सृष्टि गुण-अवगुणों से सनी हुई है॥

दुख सुख पाप पुन्य दिन राती।
साधु असाधु सुजाति कुजाती॥
दानव देव ऊँच अरु नीचू।
अमिअ सुजीवनु माहुरु मीचू॥
माया ब्रह्म जीव जगदीसा।
लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा॥
कासी मग सुरसरि क्रमनासा।
मरु मारव महिदेव गवासा॥
सरग नरक अनुराग बिरागा।
निगमागम गुन दोष बिभागा॥

दुःख-सुख, पाप-पुण्य, दिन-रात, साधु-असाधु, सुजाति-कुजाति, दानव-देवता, ऊँच-नीच, अमृत-विष, सुजीवन (सुंदर जीवन)-मृत्यु, माया-ब्रह्म, जीव-ईश्वर, सम्पत्ति-दरिद्रता, रंक-राजा, काशी-मगध, गंगा-कर्मनाशा, मारवाड़-मालवा, ब्राह्मण-कसाई, स्वर्ग-नरक, अनुराग-वैराग्य (ये सभी पदार्थ ब्रह्मा की सृष्टि में हैं।) वेद-शास्त्रों ने उनके गुण-दोषों का विभाग कर दिया है॥

जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन हहिं पय परिहरि बारि बिकार॥

विधाता ने इस जड़-चेतन विश्व को गुण-दोषमय रचा है, किन्तु संत रूपी हंस दोष रूपी जल को छोड़कर गुण रूपी दूध को ही ग्रहण करते हैं।

अस बिबेक जब देइ बिधाता।
तब तजि दोष गुनहिं मनु राता॥
काल सुभाउ करम बरिआईं।
भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाईं॥

विधाता जब इस प्रकार का (हंस का सा) विवेक देते हैं, तब दोषों को छोड़कर मन गुणों में अनुरक्त होता है। काल स्वभाव और कर्म की प्रबलता से भले लोग (साधु) भी माया के वश में होकर कभी-कभी भलाई से चूक जाते हैं॥

सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं।
दलि दुख दोष बिमल जसु देहीं॥
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू।
मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू॥

भगवान के भक्त जैसे उस चूक को सुधार लेते हैं और दुःख-दोषों को मिटाकर निर्मल यश देते हैं, वैसे ही दुष्ट भी कभी-कभी उत्तम संग पाकर भलाई करते हैं, परन्तु उनका कभी भंग न होने वाला मलिन स्वभाव नहीं मिटता॥

लखि सुबेष जग बंचक जेऊ।
बेष प्रताप पूजिअहिं तेऊ॥
उघरहिं अंत न होइ निबाहू।
कालनेमि जिमि रावन राहू॥

जो (वेषधारी) ठग हैं, उन्हें भी अच्छा (साधु का सा) वेष बनाए देखकर वेष के प्रताप से जगत पूजता है, परन्तु एक न एक दिन वे चौड़े आ ही जाते हैं, अंत तक उनका कपट नहीं निभता, जैसे कालनेमि, रावण और राहु का हाल हुआ ।

किएहुँ कुबेषु साधु सनमानू।
जिमि जग जामवंत हनुमानू॥

हानि कुसंग सुसंगति लाहू।
लोकहुँ बेद बिदित सब काहू॥

बुरा वेष बना लेने पर भी साधु का सम्मान ही होता है, जैसे जगत में जाम्बवान् और हनुमान्जी का हुआ। बुरे संग से हानि और अच्छे संग से लाभ होता है, यह बात लोक और वेद में है और सभी लोग इसको जानते हैं।

गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा।
कीचहिं मिलइ नीच जल संगा॥
साधु असाधु सदन सुक सारीं।
सुमिरहिं राम देहिं गनि गारीं॥

पवन के संग से धूल आकाश पर चढ़ जाती है और वही नीच (नीचे की ओर बहने वाले) जल के संग से कीचड़ में मिल जाती है। साधु के घर के तोता-मैना राम-राम सुमिरते हैं और असाधु के घर के तोता-मैना गिन-गिनकर गालियाँ देते है।

धूम कुसंगति कारिख होई।
लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई॥
सोइ जल अनल अनिल संघाता।
होइ जलद जग जीवन दाता॥

कुसंग के कारण धुआँ कालिख कहलाता है, वही धुआँ (सुसंग से) सुंदर स्याही होकर पुराण लिखने के काम में आता है और वही धुआँ जल, अग्नि और पवन के संग से बादल होकर जगत को जीवन देने वाला बन जाता है॥

ग्रह भेजष जल पवन पट
पाइ कुजोग सुजोग।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग
लखहिं सुलच्छन लोग॥

ग्रह, औषधि, जल, वायु और वस्त्र- ये सब भी कुसंग और सुसंग पाकर संसार में बुरे और भले पदार्थ हो जाते हैं। चतुर एवं विचारशील पुरुष ही इस बात को जान पाते हैं॥

सम प्रकास तम पाख दुहुँ
नाम भेद बिधि कीन्ह।
ससि सोषक पोषक समुझि
जग जस अपजस दीन्ह॥

महीने के दोनों पखवाड़ों में उजियाला और अँधेरा समान ही रहता है, परन्तु विधाता ने इनके नाम में भेद कर दिया है (एक का नाम शुक्ल और दूसरे का नाम कृष्ण रख दिया)। एक को चन्द्रमा का बढ़ाने वाला और दूसरे को उसका घटाने वाला समझकर जगत ने एक को सुयश और दूसरे को अपयश दे दिया॥

मानस से आत्मसात करने योग्य बातें रिश्ते क्या होते है, इसको मानस से सीखना चाहिए। पिता पुत्र, माता पुत्र, भाई भाई, बड़ा छोटा, आदेश और उसका निर्वहन।

मित्र धर्म

राम चाहते तो बाली से मित्रता करके रावण पर विजय पा सकते थे लेकिन उन्होंने सुग्रीव से मित्रता की और मित्र धर्म का पूरा निर्वहन किया। यहां तक कि सुग्रीव एक बार राम से किये अपने वादे को भूल भी गए लेकिन इसके बावजूद राम ने अपना धर्म निभाया और सुग्रीव को उनकी गलती का सलीके से आभास भी कराया।

सेवक का सम्मान

केवट ने बहुत जिद की थी। राम उस पर कुपित नहीं हुए बल्कि उसकी हर बात मानते गए। वह केवट को सजा भी दे सकते थे। केवट निषादराज गुह्य के राज्य में ही था लेकिन राम ने उसकी सेवा का सम्मान किया।

व्यक्ति का समाज से संबंध और दायित्व

सृष्टि और प्रकृति के मध्य समन्वय, मानव का पशु, पक्षी, प्रकृति से संबंध, आसुरी शक्तियों के नाश के लिए समाज के अग्रगण्य व्यक्तियों से लेकर आखिरी तबके तक को एकजुट करने का संदेश अपने हर कदम पर राम ने दिया है। अपने वनगमन के हर चरण में एक तरफ वह अपने से श्रेष्ठ ऋषियों मुनियों के आशीर्वाद ले रहे हैं और दूसरी ओर वनवासी समाज को जोड़ कर उन्हें भयमुक्त वातावरण उपलब्ध करा रहे हैं। वह समग्र वनक्षेत्र को ही आसुरी शक्तियों से मुक्त कर वनवासी समाज को सौप देते हैं। कही भी वह स्वयं राजा नहीं बनते बल्कि जिस समाज का सम्बंधित क्षेत्र है उसी में से राजा बनाते चलते हैं। यहां तक कि लंका का जीता हुआ राज्य भी वह विभीषण को सौंपते हैं।

स्त्री और दलित का सम्मान

पक्षियों में चांडाल कहे जाने वाले कौवे द्वारा रामकथा का

व्याख्यान और श्रोता में पक्षियों के राजा , यह मानस की बहुत बड़ी शिक्षा है। यहां ज्ञान को भरपूर सम्मान है। इस सम्मान में कोई जाति, वर्ण या वय का भेद नहीं है।

आज भी कोई कितना ही दलित और नारी विमर्श की बात करता हो लेकिन किसी दलित स्त्री का जूठन नही खा सकता। राम ने शबरी का जूठन खाया। इससे बड़ा सम्मान क्या हो सकता है। राम राजा भी थे और उनके पास अनेक सेवक और तब तक वनवासियों की बहुत बड़ी सेना भी तैयार थी। वह शबरी को अपने पास भी बुलवा सकते थे। उसका जूठन नहीं भी खाते तो कोई प्रश्न नही उठता।

आदर भाव

आदर भाव तो मानस की आत्मा है। मानस का नायक समाज के सभी श्रेष्ठ लोगो का अत्यंत आदर कर रहा है। सभी ऋषियों और मुनियों के साथ संत जनों को राम बहुत आदर देते हैं। यहां तक कि परशुराम के क्रोध के बीच भी राम ने उन्हें केवल आदर ही दिया है। बाल्मीकि और भारद्वाज को दंडवत करते हैं। शरभंग जी को स्वयं अग्निदान कर बैकुंठ भेजते हैं।

बचन निर्वहन

मानस में वचन की महत्ता, क्षत्रिय धर्म की महत्ता और कुल की महत्ता को तुलसीदास जी ने बहुत महत्व दिया है। रघुकुल रीति सदा चलि आयी, प्राण जाय पर वचन न जाई- यह प्रसंग ही स्वयं में जीवन का सार प्रस्तुत कर देता है।

जटायु और शबरी प्रसंग

जटायु गीध हैं। पक्षी हैं लेकिन राम उनको परमधाम में स्थापित करते हैं। शबरी स्वयं को अधम कह रही है लेकिन राम उसे भामिनि कह कर संबोधित करते हैं। यह वह संबोधन है जिसका प्रयोग उन्होंने अपनी माता के लिए किया है। प्रेम भक्ति और ईश्वर की आस्था के साथ समाज मे निम्नतर माने गए को श्रेष्ठतर साबित करने का चरित्र अद्भुत है।

मानस को लेकर प्रश्न करने वालों को राम और शबरी के प्रसंग को ध्यान से पढ़ना चाहिए। राम-शबरी संवाद में जो नवधाभक्ति सूत्र गोस्वामी जी ने दिए हैं, वही सब सवालों का जवाब है। राम चरित मानस के अरण्य कांड में दोहा संख्या 34,35,36 के मध्य की जो चौपाइयां हैं, इसमें इसका पूरा वर्णन है। इसमें गोस्वामीजी ने बड़े भाव से शबरी के संकोच को प्रदर्शित किया है जिसमें शबरी भगवान से कहती हैं कि वो कैसे उनकी भक्ति प्राप्त कर सकती हैं जबकि वो जाति से अधम और मति से भी जड़ हैं। शबरी कहती हैं-

केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी,
अधम जाति मैं जड़मति भारी।

शबरी के इस सवाल के जवाब में गोस्वामी जी भगवान श्रीराम से उत्तर दिलवाते हैं कि राम को जाति-पांति के भेदभाव का कोई सवाल भक्ति के मामले में मंजूर नहीं है। राम कहते हैं-

कह रघुपति सुनु भामिनी बाता।
मानऊं एक भगति कर नाता।
जाति-पाति कुल धर्म बड़ाई ।
धन बल परिजन गुन चतुराई।
भगति हीन नर सोहइ कैसा।
बिनु जल बारिद देखिअ जैसा।।
नवधा भगति कहऊं तोहि पाहीं।
सावधान सुनु धरू मन माहीं।।

पहली बात तो राम के जरिए गोस्वामी जी शबरी के लिए अत्यंत आदरसूचक भामिनी संबोधन देते हैं। कहते हैं कि जात-पांत, परिवार, कुल, गोत्र, पैसा, पावर, परिवार, बुद्धि और चतुराई जैसी बातों का मेरे लिए कोई मतलब ही नहीं है। क्योंकि जिस मनुष्य में भक्ति नहीं है, श्रद्धा नहीं है, उसकी किसी बात का वैसे ही कोई महत्व नहीं है जैसे बिना जल के बादलों का। मतलब है तो केवल प्रेम का, श्रद्धा का, भक्ति का। ईश्वर से नाता जोड़ने के लिए यही चीजें महत्व रखती हैं। इसमें जाति का कोई मतलब नहीं है।

नवधा भगति के सूत्रों को भारत के आध्यात्मिक जगत में बड़े आदर के साथ सुनाया जाता है जो सूत्र शबरी और शाबर संप्रदाय से जुड़े हैं। शायद उन्हें शाबर संप्रदाय से ही गोस्वामी जी ने उठा लिया। इसमें कहा गया है -

1-पहली भक्ति संतों का सत्संग है। और संतों की कोई जाति नहीं होती। जाति न पूछो साधू की पूछ लीजिए ज्ञान। यही लोक परंपरा कहती है। इसी लोक को तुलसी अपनी आंखों के सामने रखते हैं और आगम-निगम यानी आगम मतलब लोकमान्यताओं और निगम मतलब शास्त्र को साथ लेकर चलते हैं।

2-नवधा भक्ति का दूसरा सूत्र है कि भगवान की कथा चर्चा जहां हो वहां मन लगाओ, जिस रूप में हो, उसे सुनो, उस पर ध्यान दो। आध्यात्मिक बातों और धर्ममय चरित्र पर चलने का यहां बड़ा महत्व है। प्रथम भगति संतन्ह कर संगा, दूसरि रति मम कथा प्रसंगा।

3-अपने जो गुरु हैं, उनकी सेवा करो, यही तीसरी भक्ति है।

4-भक्ति में कपट, छल मत करो और शुद्ध भाव से करो। कोई न कोई मंत्र नियमित जपो और ईश्वर में दृढ़ विश्वास रखो। गुरु पद पकंज सेवा तीसरि भगति अमान, चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान।..मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा।

5-पंचम भजन सो बेद प्रकासा

6-छठ दम सील बिरत बहु करमा, निरत निरंतर सज्जन धरमा। पांचवीं भक्ति के बारे में कहा है कि परमात्मा का भजन करो, उनका सुमिरन करो, उनके गीत गाओ, हो सके तो इसी भजन मार्ग से वेद के ज्ञान का प्रसार करो। छठी भक्ति का सूत्र वही है जो भगवान बुद्ध ने भी बताया है कि दम और शील को धारण करो। यानी आत्म नियंत्रण रखो और जीवन में शुद्ध चरित्र को महत्व दो। बहुत सारे विषयों में एक साथ मत फंसो। जो सज्जन हैं, उनका साथ करो, सज्जनों के धर्म मार्ग पर चलो।

7-सातवं सम मोहि मय जग देखा, मोतें संत अधिक करि लेखा

सातवां भक्ति सूत्र सब सवालों का जवाब है जिसमें गोस्वामी जी कहते हैं कि सारे जगत को राम मय ही देखो। और उसमें भी संतों की बात को सबसे ज्यादा महत्व दो। यही कबीर कहते हैं कि राम को महत्व दो। संतों भाई आई ज्ञान की आंधी रे। देश और मानवता को संत ही संभालते हैं और मार्गदर्शन करते हैं।

8-आठवं जथा लाभ संतोषा, सपनेहुं नहिं देखइ परदोषा। आठवां भक्ति सूत्र और भी अधिक महत्वपूर्ण है कि कर्म तो पूरी ईमानदारी से करो किन्तु जो भी लाभ हो या न हो उसमें संतोष करो। और जीवन में कर्म करते समय दूसरे लोगों में दोष को मत खोजो। हमेशा कमियां खुद में देखो और दूसरों के लिए अच्छे शब्दों का ही इस्तेमाल करो।

9-नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियं हरष न दीना।। नौवां भक्ति सूत्र भी अद्भुत है कि सबके साथ अति सरल भाव से रहो और किसी के साथ छल और कपट मत करो। राम नाम पर दृढ़ भरोसा रखो और मन में किसी प्रकार का अवसाद मत आने दो, सदा खुश रहो, हर हाल में खुश रहना सीखो।

नव महुं एकउ जिन्हके होई, नारि पुरुष सचराचर कोई,
सोई अतिसय प्रिय भामिनि मोरे।

अब यहां गोस्वामी जी रचित रामचरित मानस में भगवान के साथ शबरी की इन नौ विशेष भगति सूत्रों पर चर्चा हुई। गोस्वामी जी इसका सार संक्षेप लिखते हैं कि इसमें से नौ की नौ तो छोड़िए, कोई मनुष्य एक सूत्र को भी यदि जीवन में पाल ले तो चाहे वो स्त्री हो या पुरुष किसी जाति का हो, वही ईश्वर का सबसे प्रिय बन जाता है।

गोस्वामीजी के मौलिक चिंतन में तो भक्ति भेदभाव नहीं कर सकती है। नवधा भक्ति सूत्र लिखने वाले गोस्वामी जी फिर कैसे भेदभाव की बात कर सकते हैं? गोस्वामी तुलसी दास के जीवन की यथार्थ और कटु सच्चाई तो यही है कि उनकी मां उन्हें जन्म देते ही परलोक सिधार गई। उनके ज्योतिषी पिता ने ग्राम पर किसी आपदा के आने की भविष्यवाणी देखते हुए उन्हें पड़ोसी गांव की एक शूद्र महिला को पालन-पोषण के लिए दे दिया। उनका बचपन तो एक शूद्र अर्थात आज की प्रचलित परिपाटी के अनुसार अनुसूचित या दलित महिला की गोद में ही पला-बढ़ा। क्योंकि उनके पिता का भी कुछ ही दिनों में निधन हो गया और गांव भी शायद गंगा की बाढ़ में या मुगल सेना की लूट की भेंट चढ़ गया। इन बातों का ब्योरा गोस्वामी तुलसी दास ने स्वयं ही अपने अनेक पदों में दिया है।

तनु तज्यो कुटिल कीट ज्यों..

अर्थात पिता ने तो कोई कुटिल कीड़ा समझकर ही फेंक दिया था लेकिन हे राम तुम्हारी कृपा ने इस तुलसी को नवजीवन दे दिया। नवधा भक्ति सूत्र के अंत में गोस्वामी तुलसी दास लिखते हैं कि किसी भी जाति के नर नारी को छोड़िए, समस्त चर-अचर जीव जगत में कोई भी राम की ओर देखता है तो उसके जीवन में बदलाव आने लगता है।

सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें।
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई,
तो कहुं आजु सुलभ भइ सोई।।

मम दरसन फल परम अनूपा,
जीव पाव निज सहज सरूपा।।

भगवान का दर्शन मात्र जीव को उसके उसी सहज रूप से मिलाता है जो वस्तुतः राम का ही रूप है।

सियाराममय सब जग जानी,
करऊं प्रणाम जोरि जुग पानी।

यानी सारे संसार में सीता-राम का रूप देखो, दोनों हाथ उठाकर सबको प्रणाम करो क्योंकि हर किसी में अंतर्यामी रूप में वही सीताराम बसते हैं।

ढोल, गंवार, शूद्र ,पशु नारी
ये सब ताड़न के अधिकारी।।

यह प्रसंग आजकल चर्चा में है। चर्चा करने वाले यह नहीं बता रहे कियह बात कही है समुद्र ने। किस संदर्भ में यह बात आई है उसके बारे में भी विचार करना चाहिए। ताड़ना शब्द अवधी का है जिसका अर्थ होता है गहराई से समझने योग्य। इसका अर्थ प्रताड़ना तो किसी भी हाल में नहीं है। रामचरित मानस की भाषा अवधी है। अयोध्या से बस्ती के बीच

जो लोग रहते हैं उनकी लोकभाषा में ताड़ना शब्द बार बार आता है। ढोल को ताड़ने का क्या मतलब हो सकता है। गंवार तो ब्राह्मण भी हो सकता है। शूद्र तो वर्ण है कोई जाति नहीं है। प्राचीन काल से चारों वर्ण एक दूसरे पर ही आश्रित हैं। भारत में प्राचीन काल से सभी में परस्पर प्रेम रहा है, ऐसा नहीं होता तो भारत में 6 लाख से ज्यादा गांव बसे तो इनमें एक भी गांव किसी एक जाति या किसी एक वर्ण का नहीं है। हर गांव में सभी वर्णों के लोगों की बसावट साथ-साथ सोच-समझकर रखी गई। एक गांव को कुटुंब ही माना गया है। इसमें सबके अधिकार और कर्तव्य निर्धारित थे। और पशु में गौ है जिसे भारत ने परंपरा से माता का दर्जा दिया है। बुद्ध ने भी गौ की महिमा गाई और भिक्षुक को चीवर और गोमूत्र-ओषधि आदि के सेवन का मंत्र दिया। नारी तो माता ही है, गोस्वामी जी तो जगत जननी के रूप में माता सीता को ह्रदय में रखते रहे। वह नारी के बारे में अशोभनीय बात कैसे लिख सकते हैं। इसलिए गोस्वामी जी के बारे में या राम चरित मानस के बारे में बुद्धि और तर्क से विचार किया जाना चाहिए। इसमें किसी दुष्प्रचार का हिस्सा नहीं बनना चाहिए ।

ब्राह्मण सबका है और सबके लिए है, जैसे सभी वर्ण सभी के लिए हैं। उसे जो स्थान मिला वह भारत के समाज ने दिया है। जो कार्य उसने किया वह भी इसी समाज के कारण उसने किया है। शेष समाज से अलग होकर उसका कोई अस्तित्व नहीं है।

पूजहिं विप्र सकल गुण हीना।

ब्राह्मण को सात्विक, राजसिक, तामसिक तीनों ही गुणों से परे जाना होगा, तभी वह पूज्य है, अन्यथा नहीं है। ब्राह्मण की यात्रा गुणों में उलझने की नहीं है, उसे समस्त गुणों से मुक्त होकर उस मार्ग पर जाने का प्रयास करना चाहिए जबकि वह सभी गुणों से परे होकर उस एक अखंड सच्चिदानंद परमात्मा में लीन हो जाता है। यही धर्म या धम्म मार्ग भी है। यही ब्राह्मणत्व है कि वह संपूर्ण समाज को स्वयं में धारण कर चले, समाज की आत्म शक्ति को जगाए, उसके मन में, जीवन में अच्छाई का प्रचार और प्रसार करे। उन्हें गलत रास्ते पर जाने से रोके, उनकी शिक्षा का प्रबंध करे और बदले में कोई शुल्क नहीं ले और जिस तरह से समाज उसे रखे, उसी तरह से रहे। भिक्षा ही उसके जीवन का आधार प्राचीन समय से रहा है। बुद्ध ने भी अपने भिक्षुकों के लिए कठोर ब्राह्मण जीवन के आदर्श को ही सामने रखा था।

वास्तव में यही भारत है और यही भारत होने की कथा है। आधुनिक समझने वाले कुछ लोग इसे न सुनना चाहते हैं और ना ही समझना। जब तक समझने का उनका मन होगा, तब तक शायद बहुत देर हो चुकी होगी। भारत को तोड़ने की शक्तियां तब तक शायद अपनी साजिशों में गहरे सफलता प्राप्त कर चुकी होंगी। हमें इसकी चिंता इसलिए नहीं होती क्योंकि इन साजिशों के समय में भी भारत के नायक स्पष्ट सामने दिखाई देते हैं। जैसे आचार्य चाणक्य कहते हैं कि यदि दुष्ट शक्तियों, घातक और हिंसक प्राणियों, सर्प आदि की

भयानक आतंकी वृत्तियों की चली होती तो यह संसार कब का समाप्त हो गया होता, किन्तु अनेक ज़हरीले जीवों के होते हुए भी यह संसार अपनी शांति और आनंदमय गति से चलता आया है तो कोई न कोई तो बात है जो संसार की गति को संतुलित रखती है। उसी बात का और उम्मीद का आसरा लेकर आगे बढ़िए, किसी की भड़काऊ बातों पर मत जाइए, कोई आग लगाए तो उसे बाल्टी भर ठंडा पानी भी दे दीजिए कि कुछ पी लो और कुछ आग पर डाल सको तो डाल दो। बहुत गहरी शांति की जरूरत है। अपनी शांति को और समाज की एकता पर छिन्न-विछिन्न करने के लिए जो कुटिल सोच लेकर जो आग लगाने की हरकतें कर और करवा रहे हैं, उनकी किसी साजिश में उलझने की कोई जरूरत नहीं है। शांति और धीरज का परिचय देते हुए सामाजिक समरसता और एकता के लिए शांत मन से आगे बढ़ेंगे तो सदा ही जैसे विजय मिलती रही है, तो आगे तो और अधिक प्रचंड विजय ही विजय मिलने का रास्ता साफ हो रहा है। मानस को लेकर कुटिल, कामी और लोभी लोगों पेट में दर्द किसी और बात से उठ रहा है। उन्हें पच नहीं रहा है कि अयोध्या पहुँच चुके शालिग्राम शिला का प्रचंड प्रवाह जैसे ही माता सीता और प्रभु श्रीराम का रूप धारण कर अपना पूर्ण स्वरूप ले लेगा, 2024 की जनवरी में उसी के प्रकाश से यह जग आलोकित हो उठेगा। भारत की इस प्रचंड शक्ति के प्रवाह को विश्व महसूस कर रहा है। मानस के माध्यम से गोस्वामी जी ने पहले ही कह दिया है-

सीय राम मय सब जग जानी।।

जय तुलसी दास जी और जय जय सियाराम।। जय श्री काशी और जय श्री विश्वनाथ।।

राम राष्ट्र तत्व हैं - आस्था का कोर हैं

राम राष्ट्र तत्व हैं - आस्था का कोर हैं,
राम तो जन - जन में हैं, इक अनंत छोर हैं।
कोई कलम राम को लिख नहीं सकती कभी -
राम भाव से परे - राम थोड़ा और हैं।

उसी अवधनारायण के हम युग तुलसी बन जाएंगे,
मन्दिर वहीं बनाएंगे।

कंकड़ - कंकड़ शंकर होगा सियाराम के आने को,
जन-गण-मन अधीर है अपनी पलकें-हृदय बिछाने को।
सजे अयोध्या मने दिवाली और कटे सब रातें काली -
अंतर्मन के अंतर्तम को हर मन से हर जाने को।

कहीं रहे न तम का कोना ऐसा दीप जलाएंगे,
मन्दिर वहीं बनाएंगे।

श्रृष्टि सृजन के हमीं सारथी-पार्थ हमें बन जाना है,
राम लला के भरत-लखन संग शत्रुघ्न कहलाना है।
निषाद-केवट-सबरी-भील और जटायु-जामवंत-
जिस रूप में - जहां रहें हम राम राज्य ही लाना है।

राष्ट्र-धर्म की विजय पताका दुनियां में लहराएंगे,
मन्दिर वहीं बनाएंगे।

"अहिंसा परम् धर्म" पढ़ लिए, अब पूरा इसे पढ़ाना है,
"धर्म हिंसा तथैव च" का बाकी ज्ञान कराना है।
अश्रु-श्वेद और लहू से सिंचित भारत का इतिहास बना -
भविष्य राष्ट्र का लिखने अब शत्रु की बलि चढ़ाना है।

असत्य-अधर्म और पाप की सारी लंका जलाएंगे,
मन्दिर वहीं बनाएंगे।

मैं ही भूमि पूजक हूं - मैंने शिला को पूजा है,
"मैं ही मोदी - मोदी मैं हूं" कोई कहीं न दूजा है।
रेत झाड़ती हुई गिलहरी से लेकर हनुमान तलक -
एक प्रण है - एक प्राण है, कोई कहीं न दूजा है।
एक कंठ से एक गीत सब मिलकर के दोहराएंगे,
मन्दिर वहीं बनाएंगे।

मोदी - योगी- राजनाथ सिंह, संघ - विहिप - हिन्दू परिवार,
एक एक रामभक्त की होगी सदा- सदा ही जय - जयकार,
अमर वीर बलिदानी वीरों के तरने की बेला पर -
सारे संत - ऋषि- महात्मा विप्रजनों की जय हर बार।

उन्हीं नींव की ईंटों पर हम गगन चूम दिखलाएंगे,
मन्दिर वहीं बनाएंगे।

अटल आडवाणी मुरली मनोहर, अशोक सिंघल, बंधु कोठरी,
कल्याण कलराज मां ऋतंभरा उमा भारती, रथ की सवारी।
ये तो राष्ट्र की थाती हैं और राष्ट्र का गौरव हैं,
त्रिदेव हैं - पंच भूत हैं -सप्त ऋषि और देवी हमारी -

उन स्वयमसेवकों की रज से माथे तिलक लगाएंगे,
मन्दिर वहीं बनाएंगे।

कमल कमल है राष्ट्र यज्ञ के आहुति की ज्वाला है,
कमल कमल है मां काली का खप्पर वाला प्याला है।
कमल कमल है महा प्रलय महा क्रांति महा काल -
कमल कमल है राष्ट्रवाद की सबसे मादक हाला है।

राष्ट्र-धर्म के श्री चिन्ह की सदा सदा जय जायेंगे,
मन्दिर वहीं बनाएंगे।

(05 जून 2020 को परम् आदरणीय सरसंघ चालक श्री मोहन भागवत जी की अध्यक्षता में देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा श्री अयोध्या जी में सुसंपन्न श्री राम मन्दिर के भूमि पूजन के परम पावन अवसर पर लिखी कविता ।)

अनूप पाठक 'भारत'

संस्कृति पर्व
Sanskriti Parva

(भारत संस्कृति न्यास का प्रकल्प)

सदस्यता फॉर्म - SUBSCRIPTION FORM

नाम
NAME ______________________

पिता/पति
FATHER/HUSBAND ______________________

पत्रिका के लिए स्थाई डाक का पता
PERMANENT POSTAL ADDRESS FOR MAGAZINE ______________________

____

____

पिन कोड
PIN CODE ______________________

कन्ट्री कोड
COUNTRY CODE ______________________

ई-मेल
MAIL ID ______________________

मोबाइल नं०
MOBILE NO. ______________________

सदस्यता का प्रकार एवं शुल्क / TYPES OF MEMBERSHIP & FEE

	भारत में /IN INDIA	अप्रवासियों के लिए/FOR NRIs
वार्षिक/ANNUAL	1000/-	$100
त्रैवार्षिक/THREE YEARS	2500/-	$250
पंच वार्षिक/FIVE YEARS	5000/-	$400
आजीवन व्यक्ति/LIFETIME PERSON	11000/-	$750
आजीवन संस्था/LIFETIME INSTITUTION	21000/-	$1000

शुल्क का भुगतान नगद, ड्राफ्ट या चेक से किया जा सकता है। ऑनलाइन भुगतान पत्रिका के खाते में किया जा सकता है। चेक या ड्राफ्ट 'संस्कृतिपर्व प्रकाशन' के नाम होना चाहिए।

Account Detail

NAME : SANSKRITIPARVA PRAKASHAN,
BANK : HDFC, PRANAY TOWERS, LUCKNOW.
A/c NO. : 50200035311373 , IFSC : HDFC0000594, MICR : 226240002, BRANCH CODE: 000594

पंजीकृत कार्यालय : बी-64, आवास विकास कालोनी, सूरजकुंड, गोरखपुर-273001
लखनऊ कार्यालय : 2/43, विजय खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010
दिल्ली कार्यालय : बी-38 डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024
सम्पर्क : + 91 94508 87186-87
यू.एस कार्यालय: 17413 Blackhawk St. Granada Hills, CA 91344 USA, Cell: 1-818-815-9826

नवीन भारत, प्रवीण भारत
New India, Skilled India
भारत
संस्कृति न्यास
उद्देश्य
सनातन संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार के लिए सतत प्रयत्नशील
राष्ट्रीय संस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए प्रयासरत
प्राथमिक से स्नातक तक पाठ्यक्रम में संस्कृति शिक्षा को अनिवार्य रुप से शामिल कराने का प्रयास
राष्ट्रीय संस्कृति आयोग का गठन एवं राष्ट्रीय संस्कृति दिवस के निर्धारण के लिए प्रयास
पत्र व्यवहार
बी–64, आवास विकास कालोनी, सूरजकुंड गोरखपुर–273001
1–454 वास्तुखण्ड, गोमती नगर लखनऊ–226010
+91:–9450887186, +91:–9450887187
Follow us
पंजीकृत कार्यालय
बी–38, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली–110024
Contact : 011-24337573
bharatsanskritinyas@gmail.com
Website - www.bharatsanskritinyas.org

भारतीय जनता पार्टी
जिन्दाबाद जिन्दाबाद!!
फिर एक बार
मोदी सरकार
फिर एक बार
मोदी सरकार
66
लोकसभा क्षेत्र
देवरिया
डॉ. अजयमणि त्रिपाठी
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय संयोजक, प्रबुद्ध प्रकोष्ठ, भारतीय जनता पार्टी गोरखपुर क्षेत्र
पूर्व अध्यक्ष, छात्र संघ - सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

Preston College
Preston College, Gwalior
Khureri, Badagaon Road, Morar, Gwalior 474006 (M.P.)
Quality Education
for Quality Future
Education:-
D.El.Ed.,B.Ed., M.Ed.,
B.Ed.+M.ed.(Integrated)
Nursing:-
GNM, B.Sc.(N), M.Sc.(N)
Hotel Management:-
B.Sc. HHA,
Diploma in All Streams of
Hotel Management
ENROLL
NOW
More information call us
+91 9301100880
+91 7000406297
+91 8463095714
Visit at:-
www.prestoncollege.info